बिहारकी कौमी आगमें

लेखिका : **मनुबहन गांधी**

लेखिकाने महात्मा गांधीके साथके अपने निवास-कालमें अुनकी दैनिक प्रवृत्तियोंके बारेमें जो डायरी रखी थी, अुसमें से अिस पुस्तकमें ता० ५–३–'४७ से ता० २४–५–'४७ तकका भाग दिया गया है। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अिसके सम्बन्धमें लिखते हैं: "अिस डायरीमें मनु गांधीने महात्माजीकी ७८ वर्षकी अवस्थामें भी शारीरिक श्रमकी दिनचर्याके साथ अुनके आश्चर्यजनक साहस और सहिष्णुता तथा धीरज और स्थिरमतिको चित्रित किया है। गांधीजीके अिस कर्मयोगको मनु गांधीने साथ रह कर नित्य देखा और अुसका वर्णन किया है। गांधी-साहित्यमें, विशेष करके अुस कालसे सम्बन्ध रखनेवाले साहित्यमें, अिसका अूंचा स्थान है।"

कीमत ३.००　　　　डाकखर्च १.००

हमारी बा

लेखिका : **वनमाला परीख; सुशीला नय्यर**

बहन वनमाला परीखने राष्ट्रमाता कस्तूरबाके बारेमें अिस पुस्तकमें "बहुतसी अप्राप्य हकीकतें अिकट्ठी की हैं और अुन्हें ठीक-ठीक सजाया है।" साथ ही 'बा' के बारेमें सुशीलाबहनके बोधप्रद अनुभव भी अिसमें संगृहीत हैं। अपने जीवनको अुन्नत और समृद्ध बनानेके लिअे प्रत्येक भारतीय गृहिणीको यह पुस्तक पढ़नी चाहिये।

कीमत २.००　　　　डाकखर्च ०.९४

बापूके पत्र — ३

कुसुमबहन देसाओीके नाम

[ता० २२-७-'२७ से २३-१०-'४६ तक]

संपादक
काकासाहब कालेलकर

अनुवादक
रामनारायण चौधरी

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद — १४

पिताका प्रेम

पूज्य गांधीजीके अपार पत्र-साहित्यमें बहनोंको लिखे गये पत्रोंका ढंग कुछ निराला ही है। ये सब पत्र अिकट्ठे करके प्रकाशित करनेका काम नवजीवन प्रकाशन संस्था कर रही है। बहनोंके नाम लिखे गये पत्रोंका सम्पादन करनेकी जिम्मेदारी संस्थाने मुझे सौंपी है। तदनुसार पहला भाग[1] प्रकाशित हुअे चार बरस हो गये। दूसरे दो भाग मुझे कभीके तैयार कर देने चाहिये थे। परन्तु अनेक कारणोंसे यह काम मैं पूरा नहीं कर सका। जल्दीसे जल्दी अुसे हाथमें लेनेवाला हूं। अिनमें पूज्य गंगाबहन (वैद्य) को और श्री प्रेमाबहन कंटकको लिखे गये पत्र आ जायेंगे।

यह काम हाथमें लेनेका विचार मैं कर ही रहा था कि अितनेमें श्री कुसुमबहन देसाअी अेक बार दिल्लीमें मिलीं। पू० बापूजीके सम्पर्कमें आनेवाली तमाम बहनोंसे मैं अैसे पत्र मांगता ही हूं। श्री राजकुमारी-अमृतकौर, कुमारी अमतुस्सलाम तथा सौ० प्रभावतीबहनके पास बापूके पत्रोंका ढेर पड़ा है। वे अुन्हें जमा करके दें तब सही। श्री मीराबहनने अपने नाम लिखे हुअे पत्रोंमें से कुछ पसन्द करके, काफी समय पहले प्रकाशित कर दिये हैं[2]।

श्री कुसुमबहनने अपने नाम लिखे हुअे पत्र तुरन्त अिकट्ठे करके दे दिये और अिस सम्बन्धमें मांगी हुअी जानकारी भी दी। अिन मूल पत्रोंके फोटोग्राफ लेकर यहांके संग्रहालयमें सुरक्षित रखनेका काम तो

---

१ बापूके पत्र — १ : आश्रमकी बहनोंको, नवजीवन प्रकाशन; कीमत १.२५; डाकखर्च ०.३१।

२. ये पत्र 'बापूके पत्र मीराके नाम' शीर्षकसे अिसी संस्थाने प्रकाशित किये हैं। कीमत ३.००, डाकखर्च १.१९।

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ३०००

२५

दिसम्बर, १९५९

पिताका प्रेम

पूज्य गांधीजीके अपार पत्र-साहित्यमें बहनोंको लिखे गये पत्रोंका ढंग कुछ निराला ही है। ये सब पत्र अिकट्ठे करके प्रकाशित करनेका काम नवजीवन प्रकाशन संस्था कर रही है। बहनोंके नाम लिखे गये पत्रोंका सम्पादन करनेकी जिम्मेदारी संस्थाने मुझे सौंपी है। तदनुसार पहला भाग[1] प्रकाशित हुअे चार बरस हो गये। दूसरे दो भाग मुझे कभीके तैयार कर देने चाहिये थे। परन्तु अनेक कारणोंसे यह काम मैं पूरा नहीं कर सका। जल्दीसे जल्दी अुसे हाथमें लेनेवाला हूं। अिनमें पूज्य गंगाबहन (वैद्य) को और श्री प्रेमाबहन कंटकको लिखे गये पत्र आ जायेंगे।

यह काम हाथमें लेनेका विचार मैं कर ही रहा था कि अितनेमें श्री कुसुमबहन देसाअी अेक बार दिल्लीमें मिलीं। पू० बापूजीके सम्पर्कमें आनेवाली तमाम बहनोंसे मैं अैसे पत्र मांगता ही हूं। श्री राजकुमारी-अमृतकौर, कुमारी अमतुस्सलाम तथा सौ० प्रभावतीबहनके पास बापूके पत्रोंका ढेर पड़ा है। वे अुन्हें जमा करके दें तब सही। श्री मीराबहनने अपने नाम लिखे हुअे पत्रोंमें से कुछ पसन्द करके, काफी समय पहले प्रकाशित कर दिये हैं[2]।

श्री कुसुमबहनने अपने नाम लिखे हुअे पत्र तुरन्त अिकट्ठे करके दे दिये और अिस सम्बन्धमें मांगी हुअी जानकारी भी दी। अिन मूल पत्रोंके फोटोग्राफ लेकर यहांके संग्रहालयमें सुरक्षित रखनेका काम तो

---

१ बापूके पत्र— १ : आश्रमकी बहनोंको, नवजीवन प्रकाशन; कीमत १.२५; डाकखर्च ०.३१।

२. ये पत्र 'बापूके पत्र मीराके नाम' शीर्षकसे अिसी संस्थाने प्रकाशित किये हैं। कीमत ३.००, डाकखर्च १.१९।

तुरन्त लिखा; परन्तु प्रकाशित करनेके लिअे नवजीवनके पास भेजनेका काम मैं जल्दी नहीं कर सका अिसका मुझे खेद है। अिसमें दरअसल करने जैसा बहुत नहीं था। कुसुमबहनने पत्रोंकी नकलें करके और व्यवस्थित ढंगसे जमा कर सारी सामग्री मेरे पास भेज दी थी। मुझे अुसे देखकर केवल प्रस्तावना ही लिखनी थी। मुझे खुशी है कि देरसे ही सही, यह प्रस्तावना लिखकर यह पत्र-संग्रह आज प्रकाशित करने भेज रहा हूं। पूज्य गंगाबहन तथा प्रेमाबहनके पत्र पहले हाथमें लिये थे। पर अुन्हें अभी तक तैयार नहीं कर सका, अिसके लिअे अिन अुदार बहनोंसे मैं क्षमा मांगता हूं।

*   *   *

गुजरातके सामाजिक जीवनमें श्री हरिलाल माणेकलाल देसाअीके साथ श्री कुसुमबहनके विवाहका खास महत्त्व है। शैक्षणिक और सामाजिक कार्योंमें लगे हुअे हरिभाअी देसाअीकी संस्कारिताकी सुगन्ध सारे गुजरातमें फैली हुअी थी। गांधीजीके आश्रममें समय समय पर आते रहनेसे और गांधीजीके साथ सफरमें रहकर अुनके कामका अवलोकन करनेसे हरिभाअीके मनमें आश्रम-जीवनके प्रति सजीव आकर्षण पैदा हुआ था। समाजकी सच्ची नींव कौटुम्बिक जीवनकी संस्कारितामें है, यह दृढ़ प्रतीति हो जानेसे हरिभाअी अनेक परिवारों पर और खास तौर पर अनेक बहनों पर संस्कारिताका असर डाल रहे थे। और अिस प्रकार गुजरातके सामाजिक जीवनमें अपना योग दे रहे थे।

आश्रम-जीवनका आदर्श रखनेवाले हरिभाअी अपनी पहली पत्नीके देहान्तके बाद दुबारा शादी करें और वह भी अपनी अुमरसे बहुत छोटी कन्यासे करें यह असंभव सी बात थी। फिर भी अुनकी शिष्या कुसुमबहनने अुसे संभव करके बता दिया। कुसुमबहनकी माता जड़ावबहनको यह बात पसन्द आअी, अिस तथ्यका भी अिसमें महत्त्वपूर्ण भाग रहा।

जिन हरिभाअीसे अुच्च संस्कार मिले, जिनके कारण शिक्षा और साहित्यका रस अुत्पन्न हुआ और जिनके बढ़ते हुअे मित्र-मंडलका शुभ वातावरण पसन्द आया, अुनके साथ ही जीवन भरके लिअे जुड़ जानेका संकल्प कुसुमबहनने किया। और अुसे पूरा करके गुजरातके सामाजिक

जीवनमें अुन्होंने अेक नयी रीतिका सूत्रपात किया। श्री हरिभाअीके साथ श्री कुसुमबहन अिस प्रकार कोअी सात वर्ष तक दाम्पत्य जीवन बिता सकीं और दिनोंदिन अुच्च जीवनकी ओर प्रयाण करते हुअे हरिभाअीके जीवनके साथ ताल मिला सकीं।

श्री हरिभाअीके स्वर्गवासके बाद कुसुमबहनका गांधीजीके आश्रममें आना बिलकुल स्वाभाविक था। और यहां दिये गये गांधीजीके पत्रोंका प्रारंभ कुसुमबहनके वैधव्यसे अथवा आश्रम-जीवनसे ही शुरू होता है।

लगभग बीस वर्षके अिस सम्बन्धके दौरानमें पूज्य बापूजी और पूज्य बाने कुसुमबहनके नाम जो पत्र लिखे थे अुनका यह संग्रह है। कुसुमबहनके आश्रम-जीवनकी अेक दो खूबियां ध्यान देने लायक हैं। अेक तो पूज्य बाका और अुनका मां-बेटी जैसा विशेष प्रेम-सम्बन्ध। और दूसरी चीज आश्रममें शरीक होकर भी स्वतंत्र रूपसे हरिभाअीकी स्नेहीमंडलीमें मिलकर अुस मंडलीका काम आगे बढ़ानेकी कुसुमबहनकी वृत्ति या प्रवृत्ति।

आश्रम-जीवनमें किस हद तक घुला-मिला जा सकता है और गांधीजीके कार्योंमें से किसका भार अुठाया जा सकता है और किसका नहीं, अिसका सूक्ष्म विवेक कुसुमबहनमें था। वे अपनी शक्ति और अुसकी मर्यादा दोनों अच्छी तरह जानती थीं, अिसीलिअे अुन्हें अपनी वृत्ति या प्रवृत्तिके सिलसिलेमें कभी परेशानी नहीं अुठानी पड़ी।

यहां जो १०३ पत्र अिकट्ठे किये गये हैं वे सन् १९२७ से लेकर सन् १९४६ तकके हैं। अिनमें से अेक भी पत्र सार्वजनिक प्रकाशनकी दृष्टिसे नहीं लिखा गया था। और अिसीलिअे आज जनताके लिअे अुनका विशेष महत्त्व है, क्योंकि अुनसे अनेक बहनों पर गांधीजीने जो पिताका प्रेम अुंडेला है अुसका शुद्ध दर्शन होता है।

बापूजीका यह दावा था कि अीश्वरने अुन्हें स्त्रीका हृदय दिया है और अिसीलिअे वे स्त्रियोंकी परेशानी और अुनके अनेक प्रश्न समझ सकते हैं। स्त्रियां अुनके आगे अपना हृदय अुंडेलनेमें संकोच अनुभव नहीं करती थीं।

आश्रमके आबाल वृद्ध — क्या पुरुष और क्या स्त्रियां — प्रत्येककी तबीयत और तंदुरुस्तीके बारेमें बापूजीके मनमें सच्ची चिन्ता रहती थी। और अुस चिन्तामें से ही अुन्होंने आरोग्यशास्त्रके विषयमें गहरा और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। निजी अनुभवसे प्राप्त अपने अिस ज्ञानमें बापूजीका विश्वास भी बहुत था। किस फलका क्या असर होता है, किस फलका काम किस दूसरे फलसे निकल सकता है, यह सब वे अचूक ढंगसे जानते थे। अेनिमा-पिचकारी, कटिस्नान, पेट पर और सिर पर रखनेकी मिट्टीकी पट्टियां, बुखारसे पीड़ित मनुष्यको गीली चादरमें लपेटनेका अुपाय, अुपवास और दूधके प्रयोग — सब बातोंकी अुनकी सूचनायें लगभग हमेशा कारगर साबित हुअी हैं।

जैसे शरीरकी संभाल रखनी होती है वैसे ही — अथवा अुससे भी ज्यादा — मनकी देखभाल जरूरी होती है। बापूजी बहुत लोगोंको अपनी दैनन्दिनी लिखकर बड़ोंको दिखानेकी सूचना देते थे। अहंकार छोड़ कर शून्य बनकर रहनेसे घर-गृहस्थीमें और संस्था-संचालनमें भी कमसे कम क्लेश और झगड़ा होता है और मानसिक क्षति लगभग नहींके बराबर होती है। बूतेसे बाहर जाकर काम न करनेका निश्चय करनेसे भी शरीर और मन दोनोंका स्वास्थ्य कायम रहता है; और अहंकार तथा शिथिलता दोनोंकी गुंजाअिश नहीं रहती।

मनुष्य अपनी वासनाके वशमें हो जाय और जी चाहे वैसा व्यवहार करने लगे, तो देखते देखते अुसका नाश हो जायगा। अैसी अतंत्रता (अव्यवस्था) और अवशतासे बचना हो तो मनुष्यको अपने पर काबू हासिल करके स्व-तंत्र होना चाहिये। बापूजीने अपना अुदाहरण पेश करते हुअे कहा है कि वे स्वयं भी अिसी ढंगसे स्वतंत्र हो सके हैं।

बापूजीके अधिकांश पत्र यरवडा मन्दिर — अर्थात् जेल — में लिखे गये हैं। थोड़ेमें बहुत कैसे कहा जाय, यह जाननेकी अिच्छा रखनेवालोंके लिअे ये पत्र अुत्तम नमूने हैं।

जेलमें जो अवकाश और सुविधा मिलती है अुसका अुपयोग करके संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं और साहित्यमें प्रगति करनेकी सूचना देनेमें वे कभी चूकते नहीं थे। अुच्चारण-शुद्धि और लेखन-शुद्धि पर

गाधीजी बड़ा जोर देते थे। अेक बार अुन्होंने यहा तक कहा था कि, "लेखन-शुद्धिके लिअे चरित्र-शुद्धिके बराबर ही आग्रह रखना चाहिये।"

जेलमें जो लोग नियमित रहते हैं अुन्हें अपनी शक्तिका ठीक अन्दाजा हो जाता है। अिसका फायदा अुठाकर जेलसे बाहर निकलते समय कोअी व्रत लेकर निकलनेकी गाधीजीकी सलाह होती थी। जीवनकी प्रत्येक घटनासे अधिकसे अधिक श्रेय प्राप्त करनेका अुनका आग्रह होनेके कारण पिकेटिंग जैसे बाधलीके आन्दोलनके समय भी वे सूचित करते थे कि शराबकी दुकान पर पीनेवालोंके साथ जो बातचीत होती है अुससे लाभ अुठाकर धीरे-धीरे अुन पीनेवालोंके घरमें प्रवेश किया जाय और घरके सब लोगों पर असर डालकर शराबकी बुराअीको घरसे सदाके लिअे निकाल दिया जाय।

गाधीजीने स्वय सुबह-शामकी प्रार्थना या अुपासनासे बहुत बडी शक्ति प्राप्त की थी। अिसलिअे वे अिस बातका आग्रह करते हुअे अूबते या थकते नही थे। "श्रद्धा पैदा करके, प्रार्थनामें जाकर बैठो और धीरे धीरे अुसमें तल्लीन होना सीखो; और अेकाग्रताकी आदत पड़ जानेके बाद प्रार्थनाके वचनोंके गहरे अर्थका मनन करो"—यह अुनकी सीख है।

हिन्दू समाजमें स्त्री-पुरुषोंके सम्बन्धके बारेमें आम तौर पर जो मान्यतायें और मर्यादायें होती हैं, अुनमें सुधार करके पवित्र वातावरणमें अनेक स्त्रिया और पुरुष मनकी स्वच्छताकी रक्षा करते हुअे रह सकें, अिस प्रकारका प्रयोग आश्रमके द्वारा गाधीजीने किया था। अैसे प्रयोगोंमें कभी कभी भले-बुरे अनुभव तो होंगे ही। अिस बारेमें कोअी दुराव-छुपाव किये बिना वातावरण शुद्ध करनेका गाधीजीका आग्रह होनेके कारण वे अत्यन्त सुन्दर वातावरण पैदा कर सके और कायम रख सके। भारतीय सामाजिक जीवनके लिअे गाधीजीकी यह सबसे मूल्यवान भेंट है।

आश्रमके आबाल वृद्ध — क्या पुरुष और क्या स्त्रियां — प्रत्येककी तबीयत और तंदुरुस्तीके बारेमें बापूजीके मनमें सच्ची चिन्ता रहती थी। और अुस चिन्तामें से ही अुन्होंने आरोग्यशास्त्रके विषयमें गहरा और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। निजी अनुभवसे प्राप्त अपने अिस ज्ञानमें बापूजीका विश्वास भी बहुत था। किस फलका क्या असर होता है, किस फलका काम किस दूसरे फलसे निकल सकता है, यह सब वे अचूक ढंगसे जानते थे। अेनिमा-पिचकारी, कटिस्नान, पेट पर और सिर पर रखनेकी मिट्टीकी पट्टियां, बुखारसे पीड़ित मनुष्यको गीली चादरमें लपेटनेका अुपाय, अुपवास और दूधके प्रयोग — सब बातोंकी अुनकी सूचनायें लगभग हमेशा कारगर साबित हुआी हैं।

जैसे शरीरकी संभाल रखनी होती है वैसे ही — अथवा अुससे भी ज्यादा — मनकी देखभाल जरूरी होती है। बापूजी बहुत लोगोंको अपनी दैनन्दिनी लिखकर बड़ोंको दिखानेकी सूचना देते थे। अहंकार छोड़ कर शून्य बनकर रहनेसे घर-गृहस्थीमें और संस्था-संचालनमें भी कमसे कम क्लेश और झगड़ा होता है और मानसिक क्षति लगभग नहींके बराबर होती है। बूतेसे बाहर जाकर काम न करनेका निश्चय करनेसे भी शरीर और मन दोनोंका स्वास्थ्य कायम रहता है; और अहंकार तथा शिथिलता दोनोंकी गुंजाअिश नहीं रहती।

मनुष्य अपनी वासनाके वशमें हो जाय और जी चाहे वैसा व्यवहार करने लगे, तो देखते देखते अुसका नाश हो जायगा। अैसी अतंत्रता (अव्यवस्था) और अवशतासे बचना हो तो मनुष्यको अपने पर काबू हासिल करके स्व-तंत्र होना चाहिये। बापूजीने अपना अुदाहरण पेश करते हुअे कहा है कि वे स्वयं भी अिसी ढंगसे स्वतंत्र हो सके हैं।

बापूजीके अधिकांश पत्र यरवडा मन्दिर — अर्थात् जेल — से लिखे गये हैं। थोड़ेमें बहुत कैसे कहा जाय, यह जाननेकी अिच्छा रखनेवालेके लिअे ये पत्र अुत्तम नमूने हैं।

जेलमें जो अवकाश और सुविधा मिलती है अुसका अुपयोग करके संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं और साहित्यमें प्रगति करनेकी सूचना वे कभी चूकते नहीं थे। अुच्चारण-शुद्धि और लेखन-शुद्धि पर

गांधीजी बड़ा जोर देते थे। अेक बार अुन्होंने यहां तक कहा था कि, "लेखन-शुद्धिके लिअे चरित्र-शुद्धिके बराबर ही आग्रह रखना चाहिये।"

जेलमें जो लोग नियमित रहते हैं अुन्हें अपनी शक्तिका ठीक अन्दाजा हो जाता है। अिसका फायदा अुठाकर जेलसे बाहर निकलते समय कोअी व्रत लेकर निकलनेकी गांधीजीकी सलाह होती थी। जीवनकी प्रत्येक घटनासे अधिकसे अधिक श्रेय प्राप्त करनेका अुनका आग्रह होनेके कारण पिकेटिंग जैसे धांधलीके आन्दोलनके समय भी वे सूचित करते थे कि शराबकी दुकान पर पीनेवालोंके साथ जो बातचीत होती है अुसमें लाभ अुठाकर धीरे-धीरे अुन पीनेवालोंके घरमें प्रवेश किया जाय और घरके सब लोगों पर असर डालकर शराबकी बुराअीको घरसे सदाके लिअे निकाल दिया जाय।

गांधीजीने स्वयं सुबह-शामकी प्रार्थना या अुपासनासे बहुत बड़ी शक्ति प्राप्त की थी। अिसलिअे वे अिस बातका आग्रह करते हुअे अूबते या थकते नहीं थे। "श्रद्धा पैदा करके, प्रार्थनामें जाकर बैठो और धीरे धीरे अुसमें तल्लीन होना सीखो; और अेकाग्रताकी आदत पड़ जानेके बाद प्रार्थनाके वचनोंके गहरे अर्थका मनन करो"— यह अुनकी सीख है।

हिन्दू समाजमें स्त्री-पुरुषोंके सम्बन्धके बारेमें आम तौर पर जो मान्यतायें और मर्यादायें होती हैं, अुनमें सुधार करके पवित्र वातावरणमें अनेक स्त्रियां और पुरुष मनकी स्वच्छताकी रक्षा करते हुअे रह सकें, अिस प्रकारका प्रयोग आश्रमके द्वारा गांधीजीने किया था। अैसे प्रयोगोंमें कभी कभी भले-बुरे अनुभव तो होंगे ही। अिस बारेमें कोअी दुराव-छुपाव किये बिना वातावरण शुद्ध करनेका गांधीजीका आग्रह होनेके कारण वे अत्यन्त सुन्दर वातावरण पैदा कर सके और कायम रख सके। भारतीय सामाजिक जीवनके लिअे गांधीजीकी यह सबसे मूल्यवान भेंट है।

*   *

अिस पत्र-संग्रहमें कुसुमबहनको लिखे गये पू० कस्तूरबाके कुछ पत्र भी हैं। अिन पत्रोंसे पू० बाके आश्रम-जीवनकी और सब आश्रम-वासियोंके प्रति अुनकी आत्मीयताकी अच्छी कल्पना होती है।

अेक बातका स्पष्टीकरण यहां करना ठीक होगा। कभी पत्रोंमें कुसुमबहनको 'तुझे' लिखनेके बाद बीचमें अेक दो जगह 'तुम' जैसे शब्द और 'कुसुमबहन' जैसे संबोधन आते हैं। बाके स्वभावमें यह चीज स्वाभाविक थी। मेरे साथ बातें करते समय वे मुझे हमेशा 'तुम' कहती थीं। परन्तु किसी दिन भूलसे मुझे 'आप' भी कह देती थीं। मैं अिस ओर अुनका ध्यान खींचता तो कहतीं, "भूल गअी!" सबके प्रति आदरभाव रहना चाहिये, अिस प्रकारकी अुनकी भावना होनेसे अैसी दिलचस्प भूलें होती थीं। अिसका प्रतिबिम्ब अिन पत्रोंमें भी पाया जाता है।

श्री कुसुमबहन जैसी बहनोंने अपने नाम लिखे हुअे पू० बापू और बा जैसी पुण्यात्माओंके पत्र संग्रह करके रखे और समाजके लाभार्थ अुन्हें प्रकाशित करनेकी अनुमति दी, यह सचमुच बड़े आनन्दकी बात है। अन्यथा बापूजीके जीवनके कुछ पहलू दुनियाको दूसरी तरह जाननेको नहीं मिलते।*

नअी दिल्ली,
१६-१२-'५३

काका कालेलकर

बापूके पत्र—४

कुसुमबहन देसाईके नाम

[ता० ११-२-'२७ से ३१-१०-'४८ तक]

बेतिया,

वैशाख वदी ५

(डाककी मुहर: १६-५-'१७)

भाअी श्री हरिलाल देसाअी,

आपका पत्र मुझे यहां मिला है। आपका मिलना मुझे याद है। आपको मेरे साथ यहां रहना हो तो रह सकते हैं। मेरे कुछ मास अिस प्रदेशमें जायेंगे। अहमदाबादमें मेरी गैरहाजिरीमें आप रहना चाहें तो वैसा भी किया जा सकता है। आपको अनुकूल हो वैसा कीजिये। यहां आप कानपुर होकर या पटना होकर आ सकते हैं।

मोहनदास गांधीके
वन्देमातरम्

१

बंगलोर,
अ० व० ८, सं० १९८३
२२–७–'२७

चि० कुसुम,

हरिभाअीके बारेमें तुम्हें क्या लिखूं? तुम्हीको अुनका वियोग खटकेगा सो बात नही। बहुतोको दुःख हुआ है। परन्तु वह सहन करने योग्य है। सब अपने अपने समय जुदा होते हैं। हमें भी यही करना है। अितनी बात भी तुम्हें लिखनेकी जरूरत नही है, क्योंकि तुमने बहुत बडी हिम्मत दिखाअी है, अैसा भाअी नाजुकलाल[1] लिखते हैं। और हरिभाअीसे शिक्षा पानेवालेको यही शोभा देता है। क्योंकि तुम अुनकी पत्नीकी अपेक्षा शिष्या अधिक थीं।

अब क्या करनेका सोचती हो? मुझे खयाल नहीं है कि तुम्हारे माता-पिता आदि हैं या नहीं। जो स्थिति हो बताना, आश्रममें रहना चाहो तो वह भी बताना। मुझे निःसंकोच लिखना।

बापूके आशीर्वाद

---

१. श्री नाजुकलाल नंदलाल चोकसी। अुस समय भड़ौंच सेवाश्रममें शिक्षकका काम करते थे।

२

बंगलोर,
२९-७-'२७

चि० कुसुम,[1]

तुम्हारे पत्रकी मैं प्रतीक्षा करता ही रहता था। कुछ हाल तो मुझे चि० वसुमतीने[1] लिखा था। अब तुम्हारे पत्रने पूर्ति कर दी।

हरिभाअीके विद्यार्थियोंको संभाल कर तुम बैठ जाओ और वे तुम्हें सभालें और तुम्हारी रक्षा करें, अिससे अच्छा और मैं कुछ नहीं समझता। परन्तु यह काम तुम अुठा सकती हो या नहीं, यह तो तुम्हीं ज्यादा जान सकती हो। मैं देखता हूं कि तुम जितनी हरिभाअीकी पत्नी थीं अुतनी ही शिष्या भी थीं। तुम्हारा मन कहां तक तैयार हुआ है, यह तो तुम और तुम्हारे हितेच्छु, यानी हम सब, अनुभवसे ही जानेंगे। अपने मनका हमें हमेशा पता नहीं होता।

चि० वसुमतीके तथा भाअी छगनलाल जोशी[2]के पत्रसे देखता हूं कि तुम्हारे विवाहमें तुम्हारा काफी हाथ था। हरिभाअीसे ही विवाह करनेका आग्रह तुम्हारा ही था। तुम अपने चुनावको अनेक प्रकारसे सुशोभित कर सकती हो। जो लड़की अपनेसे बहुत बड़ी अुम्रके पुरुषको पतिके रूपमें पसन्द करती है, वह शरीरको नहीं परन्तु अुस शरीरके स्वामीको पसन्द करती है। हरिभाअीका शरीर चला गया। परन्तु वे स्वयं तो तुम्हारे पास आज भी हैं; और तुम चाहो तब तक रहेंगे।

मुझसे जो पूछना हो पूछ लेना। अिस मासके अन्त तक मैं बंगलोरमें ही हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. स्व० साक्षर श्री नवलराम लक्ष्मीरामकी पुत्रवधू। भड़ौंचमें कुछ समय हमारे साथ रही थीं। अुस समय साबरमती आश्रममें रहती थीं।

२. साबरमती आश्रमवासी तथा आश्रमके मंत्री।

३

बारडोली,
२–८–'२८

चि॰ कुसुम (देसाअी),

तुझे में क्या लिखूं? जिस तन्मयतासे अितने दिन काम किया अुसी तन्मयतासे आगे भी करना। स्वास्थ्यको संभालना। मुझे तेरी सारे दिनकी डायरी चाहिये। . . को प्रेमसे नहलाना। अुसमें असत्य देखकर मुझे अत्यंत दुःख हुआ है।

तेरे नियमित पत्रकी मैं प्रतीक्षा करूंगा। पाठशालामें और रसोअीघरमें सुगन्ध फैलाना। . . . बहनको बुरा न लगना चाहिये।

यहांके बारेमें आज अधिक लिखने जैसी कोअी बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

४

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली,
४–८–'२८

चि॰ कुसुम (देसाअी),

तेरा पत्र मिला है। रोजकी नियमित डायरी तो चाहिये ही। हर दिन लिखते रहनेसे आदत पड़ जायगी। लिखना तो आता ही है। किया हुआ काम, आये हुअे विचार, और होनेवाले अनुभव लिख लेनेमें बहुत कुशलताकी जरूरत ही कहां है?

बारडोलीके समाचार जो दे सकता हूं वे छगनलाल (जोशी) के पत्रमें दिये हैं।

कहा जा सकता है कि मैं तो अभी आराम ही ले रहा हूं। राजकिशोरी[१] क्या करती है?

बापूके आशीर्वाद

१ राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रबाबूके द्वारा साबरमती आश्रममें शिक्षा लेनेको आअी हुअी बिहारकी अेक बहन।

५

वारडोली,
५-८-'२८
रविवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। सिर दुखा, यह विचित्र वात है। तवीयत संभालना।

. . . भाओी स्वीकार क्यों नहीं करते, अिस वारेमें तुझे विचार करके कुछ कहने जैसा मालूम हो तो कहना। क्या यह संभव है कि कहीं तेरे सुननेमें भूल हुअी हो? मैंने तो . . . भाओीको मुक्त करनेकी ही वात दुवारा लिखी है।

वाल-मन्दिरकी व्यवस्था किस प्रकार हुअी है सो लिखना।

वापूके आशीर्वाद

६

वारडोली,
६-८-'२८

चि० कुसुम,

तू अभी तक अच्छी नहीं हुअी, अैसा मीरावहन लिखती है। तेरा पत्र आज नहीं आया, अिससे अुसके पत्रकी वातका समर्थन होता है। विचारोंके चक्करमें तो नहीं पड़ गअी न?

समझौता[1] हो गया ही समझो। अिसलिअे थोड़े ही समयमें वापस आ जाअूंगा। परन्तु सोचा था अुससे कुछ अधिक ठहरना पड़ेगा। वल्लभभाअीकी यही अिच्छा है।

वापूके आशीर्वाद

---

१. वारडोलीकी सत्याग्रहकी लड़ाअीके समझौतेका अुल्लेख है।

७

बारडोली,
७-८-'२८
मंगलवार

चि० कुसुम (देसाओ),

तेरा पत्र मिला। तुझे समझनेमें मुझे कठिनाओ हो रही है। तू मुझे दिनचरी भेजा तो हरगिज न लिखेगी। तुझे डायरी लिखना नहीं आता यह सच नहीं। तेरा पत्र लम्बा हो गया है और छोटा लिखना नहीं आता, यह भी निरा विनय है। तेरे पत्र सब बढ़िया हैं। अुन्हें मैं तो छोटा नहीं कर सकता। और छोटे-लम्बेका भेद मैं अच्छी तरह समझता हूं। अिसलिअे यदि तेरा यह आत्म-अविश्वास सचमुच ही सही हो तो अुसे निकाल देना। और केवल विनयके लिअे आत्मनिन्दा करती हो तो वह निन्दा बन्द कर देना।

. भाओका मामला अब निपट गया दीखता है। . ने अपना दोष स्वीकार कर लिया मालूम होता है। यह अिकरार अभी तक मेरे पास सीधा नहीं आया, परन्तु जान पड़ता है कि सुरेन्द्र[1] और छोटेलाल[2]के सामने दोष स्वीकार कर लिया है। तेरा अदा किया हुआ भाग जरूर बढ़िया है।

बाल-मन्दिरका क्रम अच्छा लगता है। अब यदि अुसमें लगी रहेगी तो काम जरूर आगे बढ़ेगा।

अपनी तन्दुरुस्ती संभालना।

---

१. साबरमती आश्रमवासी। अब बोरियावीको अपना कार्यक्षेत्र मानकर वहां रहते हैं। पू० बापूजीकी भस्मका विसर्जन करने मानसरोवर गये थे।

२. साबरमती आश्रमवासी। पू० बापूजीके सिद्धान्तोंका कट्टरतासे पालन करनेवाले।

अिस सप्ताहके अन्तमें या दूसरेके शुरूमें वहां[1] पहुंचनेकी आशा रखता हूं।

आजकल कब अुठती है?

बापूके आशीर्वाद

८

बारडोली,
८-८-'२८
बुधवार

चि० कुसुम,

शारदा[2]को तूने जवाब दिया वह सचोट तो अवश्य है। अुसमें रहस्य भी है।

मेरा जवाब यह है। लाड़ली कौन है या कौन नहीं यह मैं नहीं जानता, परन्तु लड़कियां खुद जानती हैं। परन्तु मैं जिसे लिखना जरूरी समझता हूं अुसे लिखता हूं अथवा जो आशा रखे अुसे लिखनेका प्रयत्न करता हूं। यह शारदाको पढ़वाना और वह आशा रखे तो मुझे लिखे।

स्त्री-विभाग[3]में चोरी होती है तो चोरको ढूंढ़ निकालनेकी शक्ति तुम लोगोंमें होनी चाहिये। क्या चुराया, यह मुझे लिखना चाहिये था।

जिस जिसकी जो जो चीज चली गअी हो, अुसकी सूची मुझे भेजो। यह भी बताओ कि शक किस किस पर है।

कदाचित् वहां रविवारको पहुंचूं, अथवा अगले सप्ताहके शुरूमें तो किसी दिन जरूर।

बापूके आशीर्वाद

---

१. साबरमती आश्रममें।

२. श्री शारदाबहन कोटक। अेक आश्रमवासिनी।

३. साबरमती आश्रममें अलग अलग जगहोंसे बहनें रहने आती थीं। अुनके लिअे अेक विशेष विभाग रखा गया था—अभी जहां हृदय-कुंज है वह स्थान।

स्वास्थ्य बिगाड़ेगी तो ठीक नहीं होगा।

सूरजबहन[1] के बारेमें मैंने तो तुरन्त ही तार भेजा था, परन्तु [illegible]गवान जाने वह मिला क्यों नहीं।

बापूके आशीर्वाद

११

वर्धा,
१-१२-'२८

[illegible]० कुसुम,

तू मूर्खा है यही कहूं न? तुझे पूछा जिसमें तू दुःखी किसलिये [illegible]ती? जिस तरह दुःख मानने लगेगी तो मैं कैसे कुछ पूछ सकूंगा?

मैं तो जो मान्यता मैंने तेरे बारेमें बना ली है वैसी ही तुझे [illegible]ो हुआी देखना चाहता हूं। अधिक लिखनेका आज समय नहीं है।

मनु (गांधीजीकी पौत्री) को तू अच्छी तरह संभाल रखेगी, [illegible] बारेमें मेरे मनमें तो कोआी शंका है ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

१२

वर्धा,
५-१२-'२८
बुधवार

[illegible]सुम,

तेरा पत्र मिला। वहांके[2] ब्यौरेवार समाचारोंकी मैं तुझसे आशा [illegible] हूं। रसोआीघरके समयका पालन होता है? शोर कम हुआ है? [illegible]गाबहन[3]को सब मदद देते हैं?

---

[1]. श्री कृष्णदास चीतालियाके मारफत आश्रम-जीवनका अनुभव [illegible]ी हुआी अेक बहन।

[2]. साबरमती आश्रमके।

[3]. वैद्य। [illegible] वल्लभ-विद्यालयमें रहती हैं। [illegible] मुक्त रसोआीघरकी जो योजना की [illegible] पास थी।

वर्धा
२७-११-'३६

चि० कुसुम,

तेरे दोनों पत्र मिल गये। मुझे तो [illegible] कर रहा हूं। [illegible] न आने देना। [illegible] और आत्माको [illegible]।...

जो तीन सवाल पूछना चाहे, जिससे मुझे आनन्द हुआ।...जे संस्थाके [illegible] भी ठीक है। परन्तु जिस जिस विभाग [illegible] काम करते हों उन विभागोंके मुखियाकी आज्ञा लेना चाहिये। वहां संस्थामें [illegible] छुट्टी देनेकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता। उसके पास छुट्टीकी मांग भी उन उन विभागोंके मुखियाओंके द्वारा ही जाती है। संस्थाके प्रति जो अपनी जिम्मेदारी समझते हैं वे सुविधा देखकर ही छुट्टी मांगते हैं।

मैंने कितनी बार समझाया है कि जिसे सब कुछ प्रेमभावसे करना है उसका काम सुव्यवस्थित हुअे बिना चल ही नहीं सकता? प्रेम नम्रताकी पराकाष्ठा है। आज तो यह विषय यहीं समाप्त करता हूं।

मनु (गांधीजीकी पौत्री)के बारेमें बा चिन्ता करती रहती है। अुसके बालोंमें कंघी कौन करता होगा? अुसके कपड़ोंका क्या होता होगा? वगैरा अनेक प्रश्न वह किया करती है। मैंने बासे कहा है कि तू यह सब खुद या किसीकी सहायतासे कर लेती होगी।

सरोजिनी देवी[1] तो अपना भाग काममें लदा करती ही होगी। वह प्रसन्न तो रहती है?

मेरा हाथ पोंछनेका रूमाल वहां रह गया है। प्रभावती[2] जानती होगी। ढूंढ़ना। मिल जाय तो संभाल कर रख लेना।

---

१. अुत्तर प्रदेशके कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री शीतलासहायकी पत्नी।

२. श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी। अुस समय श्री जयप्रकाश नारायण विदेशमें थे। हम दोनों बहनें आश्रममें अेक ही कमरेमें साथ रहती थीं।

आश्रममें रतिराम[1] है। अुसके दांत खराब हो गये हैं। अुसे नडीयादमें जिसके नाम पत्र देना जरूरी हो अुसके नाम पत्र देना। वह वहां जाय और दांत दिखाकर दवा ले आवे। जहां तक हो सके डॉक्टर अुसे रुकनेको न कहे, यह जिसके पास जाय अुसे लिख देना। डॉक्टरको लिखना कि क्या रोग है वह तुझे लिखे। और अुपचारके बारेमें रतिरामसे कहे, फिर भी तुझे तो लिखे ही।

बापू

९

२३-११-'२८

चि० कुसुम,

. . . जहां मेरा काम हो वहां मैं हूं, यह समझना चाहिये।

तंत्रमें रहनेके नियम तो जो होते हैं वे ही हो सकते हैं। तंत्रमें रहकर तो अनेकोंकी अनुमति लेनी पड़ती है। स्वतंत्रताका अर्थ स्वेच्छाचार कभी नहीं होता, अथवा किसी अेक ही व्यक्तिका आधार भी नहीं होता।

समाजमें रहनेवालेको तो समाजके अधीन रहना चाहिये। अिसीका नाम संस्था है। अन्यथा तो अेकका राज्य हुआ। अिसका रहस्य समझकर तू शान्त हो और कर्तव्य-परायण बन यही मैं चाहता हूं।

शरीरको अच्छी तरह सम्भालना। सबके साथ मैत्री पैदा करना। मनु[2]के बारेमें : अुसे यदि बाल-मंदिरमें और रसोड़ेमें रहना पसंद पड़े तो तू अुसे पूरा सन्तोष देना।

मुझे पत्र नियमित रूपसे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

---

१. आश्रममें खादीका काम सीखने आया हुआ चरखा-संघका अेक विद्यार्थी।

२. गांधीजीकी पोती। हरिलाल गांधीकी लड़की।

अिस सप्ताहके अन्तमें या दूसरेके शुरूमें वहां[1] पहुंचनेकी आशा रखता हूं।

आजकल कब अुठती हैं?

बापूके आशीर्वाद

८

बारडोली,
८-८-'२८
बुधवार

चि० कुसुम,

शारदा[2]को तूने जवाब दिया वह सचोट तो अवश्य है। रहस्य भी है।

मेरा जवाब यह हैं। लाड़ली कौन है या कौन नहीं जानता, परन्तु लड़कियां खुद जानती हैं। परन्तु मैं जिसे समझता हूं अुसे लिखता हूं अथवा जो आशा रखे अुसे करता हूं। यह शारदाको पढ़वाना और वह आशा

स्त्री-विभाग[3]में चोरी होती है तो चोरको तुम लोगोंमें होनी चाहिये। क्या चुराया, यह

जिस जिसकी जो जो चीज चली ग भेजो। यह भी बताओ कि शक किस कि

कदाचित् वहां रविवारको पहुंचूं, तो किसी दिन जरूर।

---

१. साबरमती आश्रममें।

२. श्री शारदाबहन कोट

३. साबरमती आश्रममें थीं। अुनके लिअे अेक विशेष कुंज है वह स्थान।

स्वास्थ्य बिगाड़ेगी तो ठीक नहीं होगा।

सूरजबहन[1] के बारेमें मैंने तो तुरन्त ही तार भेजा था, परन्तु भगवान जाने वह मिला क्यों नहीं।

बापूके आशीर्वाद

११

वर्धा,
१-१२-'२८

चि० कुसुम,

तू मूर्खा है यही कहूं न? तुझे पूछा जिसमें तू दुःखी किसलिओ हुआी? अिस तरह दुःख मानने लगेगी तो मैं कैसे कुछ पूछ सकूंगा?

मैं तो जो मान्यता मैंने तेरे बारेमें बना ली है वैसी ही तुझे बनी हुआी देखना चाहता हूं। अधिक लिखनेका आज समय नहीं है।

मनु (गांधीजीकी पौत्री) की तू अच्छी तरह संभाल रखेगी, अिस बारेमें मेरे मनमें तो कोआी शंका है ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

१२

वर्धा,
५-१२-'२८
बुधवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। वहांके[2] ब्यौरेवार समाचारोंकी मैं तुझसे आशा रखता हूं। रसोअीघरके समयका पालन होता है? शोर कम हुआ है? गंगाबहन[3] को सब मदद देते हैं?

---

१ श्री कृष्णदास घीतालियाके मारफत आश्रम-जीवनका अनुभव लेने आअी हुअी अेक बहन।

२ साबरमती आश्रमके।

३ वैद्य। आजकल बोचासण वल्लभ-विद्यालयमें रहती हैं। साबरमती आश्रममें पू० बापूजीने संयुक्त रसोअीघरकी जो योजना थी अुसकी व्यवस्था बड़ी गंगाबहनके पास थी।

१२

चि० कुसुम,

अैसा क्यों? फिर बुखार? अिसमें मानसिक व्यथाका स्थान जरूर है। रमणीकलालभाअीके पास 'अिक्कीसी गोलियां' भी ला आया हूं। अगर बुरा मालूम न हो तो अुनका सेवन किया जाय।

१. गाड़ीका काम सीखने आया हुआ पटना-संघका विद्यार्थी।

२. श्री सीतलासहायकी कोअी चौदह वर्षकी लड़की।

३. गांधीजीके मंत्री।

४. श्री प्रभावतीकी बहन, राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबूके पुत्र श्री मृत्युंजयबाबूकी पत्नी (अब स्वर्गीय)।

५. श्री रमणीकलाल मोदी। अुस समयके आश्रमकी दूसरी ओर रहते थे। श्री केदारनाथजीके शिष्य।

६. पं० मोतीलालजी नेहरू अिटलीकी बनी हुअी गोलियां लाये थे, जो मलेरिया पर कुनैनके जैसा काम करती थीं। अुनका जिक्र है।

कुनैनके बजाय अुन्हें बहुत लोग लेते हैं। मोतीलालजी[1] अुनकी तारीफ कर रहे थे तब शायद तू मौजूद थी। अुन्होंने ही ये गोलियां भेजी हैं। तलाश करके प्रयोग करना। नहीं तो मैं मानता हूं कि थोड़े दिन कुनैन लेना ही चाहिये। साथ साथ कटिस्नान करे तो अुसका बुरा असर नष्ट नहीं तो हलका जरूर हो जायगा।

मेरी दूसरी सलाह तुझे यह है कि अच्छी होने लगे तो कमसे कम दस दिन तो लगातार दूध और फलों पर रहना। फलों पर जो खर्च आये वह करना। असी हालतमें फलत्याग अपराध माना जायगा। यह तो तू जानती ही है कि पहले बुखारमें भी फलोंने तेरी मदद की थी। मैं मान लेता हूं कि अिसका अमल तो होगा ही।

बुखारमें और कमजोरी रहे तब तक शारीरिक परिश्रमका आग्रह हरगिज न रखना।

बापूके आशीर्वाद

१४

वर्धा,
८-१२-'२८
शनिवार

चि० कुसुम,

तू अच्छी तो हो ही नहीं सकती — यह कैसे? मेरे ही पास आनेकी अिच्छा होती हो और अुससे अच्छी हो जानेकी आशा हो तो आ जाना। भाओी छगनलाल (जोशी) को अिस बारेमें लिख दिया है। परन्तु प्रभावती (जयप्रकाश नारायणकी पत्नी) का विचार करना। फिर भी शरीरको संभालना अिस समय तेरा प्रथम कर्तव्य है।

१. पं० मोतीलाल नेहरू।

१५

वर्धा,
९-१२-'२८
रविवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिल गया। तेरा अनुमान अेक तरहसे सही है। अभी तो यह कहा जा सकता है कि वहांसे यहां ज्यादा काममें लगा हुआ हूं। सवेरे जल्दी नहीं अुठता। रातको नौसे पहले सो जाता हूं। परन्तु वहां कुछ अवकाश अनुभव करता था, कुछ चलता-फिरता था। यहां तो सिर झुकाये लिखना या लिखवाना ही रहता है। तब मुश्किलसे काम पूरा होता है। परन्तु कामको बूतेके बाहर नहीं होने देता। मुझे वह चिन्तामें नहीं डाल सकता। जितना होता है कर डालता हूं। दो बार घूमने तो नियमित जाता ही हूं। अिस नियमका यहां बहुत ही अच्छी तरह पालन होता है।

बापूके आशीर्वाद

१६

वर्धा,
१०-१२-'२८
मौनवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। तू कुनैन रोज लेती है, यह ठीक है। कटिस्नानका क्या हुआ? अुसकी बड़ी जरूरत है। वह कुनैनके दोषोंका अवश्य निवारण करेगा।

कान्ति[1]से सेवा ली जा सकती है। जो रोज सेवा देनेको तैयार है वह जरूर सेवा ले सकता है। आज तो अितना ही।

बापूके आशीर्वाद

---

१. गांधीजीके पौत्र। हरिलाल गांधीके बड़े लड़के।

१७

वर्धा,
११-१२-'२८
मंगलवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र आया। प्रभावती (जयप्रकाश नारायणकी पत्नी) का भी। यह दोनोंके लिअे है, अैसा समझना। डाकका समय नही रहा और मेरे पास काम बहुत पडा है। तूने सतरे लेना बन्द करके अच्छा नही किया। अेक सप्ताह भी ले तो अच्छा रहेगा। तेरे शरीरके लिअे अुनकी जरूरत समझता हू। अिसमें तो शक ही नही कि सतरे तुझे अनुकूल तो आते हैं। पपीता संतरेकी गरज पूरी नही कर सकता। नीबू और शहद किसी हद तक पूरी करता है, परन्तु किसी हद तक ही। यह मै यहा अपने अनुभव परसे देख पाया हूं।

बापूके आशीर्वाद

१८

बुधवार

चि० कुसुम,

तेरा और प्रभावतीका पत्र मिला। जो अुपचार करने हो सो कर। परन्तु अच्छी हो जा तो मुझे सन्तोष हो। आज अधिक लिखनेके लिअे समय ही नही रहा।

बापूके आशीर्वाद

१९

वर्धा,
१५-१२-'२८

चि० कुसुम (देसाअी),

तेरा पत्र मिला। तू बिलकुल अच्छी हो गअी, यह जान कर मैं निश्चिन्त हुआ। फिर बीमार न पड़ना।

मेरी गाड़ी तो ठीक चल रही है। कामका बोझ तो है ही, परन्तु वह मुझे खटकता नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सोमवारसे लोगोंकी भीड़ यहां आनेवाली है। आजकल भोजनालय[1]में कितने लोग खाते हैं?

२०

वर्धा

चि० कुसुम,

आज अधिक नहीं लिखा जा सकेगा। तन्दुरुस्ती ठीक हो गअी है तो अुसे ठीक ही रखना। . . . के बारेमें अभी तक कोअी पत्र नहीं आया, पर देखूंगा। वह वहां रहने आये और सीधी तरह रहे तो मुझे आपत्ति नहीं। असली बात तो तू जाने।

बापूके आशीर्वाद

२१

वर्धा,
१७-१२-'२८
मौनवार

चि० कुसुम,

तेरे दोनों पत्र मिल गये। तुझे माफी तो थी ही। जिसे मैं मूर्खा मानूं अुसकी मूर्खता माफ तो होगी ही। परन्तु मूर्खता बतानी तो चाहिये ही। भाषा नहीं आती यों कहकर निकल जानेका नाम मूर्खता नहीं, परन्तु अिसे लोग लुच्चाअी या चालाकी कहते हैं।

फिर बुखार आनेके समाचार आज मिले हैं। बूतेसे अधिक काम करनेमें भी अहंकार होता है। मूर्खता तो स्पष्ट ही है। जिनके शरीर लोहे जैसे हैं वे ही बूतेसे ज्यादा काम करें। अर्थात् अुनके लिअे बूतेसे बाहर कुछ नहीं होता। यह तो वही कर सकते हैं जो केवल

१. साबरमती आश्रमके सम्मिलित भोजनालयमें।

शून्य बन गये हैं और अीश्वरकी गोदमें सिर रखकर रहते हैं। तुझमें जितनी श्रद्धा आ जाय, तू शून्य बन कर रह सके, तब जीमें आये अुतना काम करना। अभी तो मर्यादा रख।

बापूके आशीर्वाद

२२

वर्धा,
१८-१२-'२८
मंगलवार

चि० कुसुम,

. . . कॉफी छोड़नेकी क्या जरूरत? मेरे रहते हुअे छोड़े तो मैं छुड़वा दूंगा। मेरी अनुपस्थितिमें अैसे प्रयोग किसलिअे? फिर तुझसे प्रार्थना करूं न? दूध और फलों पर ही रह और शरीरको निरोगी बना। अुसके बाद मानेकी अनुमति मंगाना।

बापूके आशीर्वाद

२३

वर्धा,
१९-१२-'२८
बुधवार

चि० कुसुम,

अब मैं तुझे क्या कहूं? डॉक्टरने सब कुछ खानेकी जो सलाह दी है, वह मानने योग्य नहीं। दूध खूब पिये और फल खूब खाये तो रोग रहे ही नहीं। दूधमें थोड़ी कॉफी अभी लेनेमें कोअी हर्ज नहीं। मेहनत थोड़ी ही करनी चाहिये, नींद पूरी लेनी चाहिये, दस्त रोज आना ही चाहिये। अितना हो जाय तो शरीर निरोगी हुअे बिना रह ही नहीं सकता, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। कुनैन लेनेसे न डरना। डॉक्टर कुनैनके दोष दूर करनेके लिअे कुछ भेजे तो लेनेमें हर्ज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

२४

कलकत्ता,
[illegible]-१२-'२८

चि० कुसुम,

तेरे पत्र नियमित मिलते रहते हैं। अिसके पहुंचने तक तो प्रभावती (जयप्रकाश नारायणजीकी पत्नी) आ गअी होगी।

तू मनको [illegible] रहती है, अिससे मुझे अशान्ति है। [illegible] देवी ([illegible] पत्नी) ने बताया कि [illegible] नहीं [illegible]। अब तो चार पांच दिनमें मिलेंगे ही। [illegible] पहुंचनेवाले हैं। अब [illegible] जा रही है अिसलिअे अधिक नहीं लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

२५

करांची,
३-२-'२९
रविवार

चि० कुसुम,

स्त्री-विभागमें सफाअी अधिक रहनी चाहिये। सब बहनें मिलकर कामका बंटवारा कर लें। अन्दरके चौकमें बहुत पानी फैलता है, यह बन्द होना चाहिये। अब बाहर नहानेकी दो कोठरियां हो गअी हैं तो सब अधिकतर अुन्हींमें जायं यह ठीक रहेगा। यशोदाबहन[1] जिस कोठरीमें रहती है, अुसमें भी सफाअी आनी चाहिये। पानीका बन्दोबस्त कर लेना। आखिरी दिनकी कमजोरी मुझे खटकती है! अुसे मैं समझ नहीं सका।

बापूके आशीर्वाद

---

[1] पूर्वी पंजाब — अम्बालाके खादी-कार्यकर्ता सूरजभानजीकी पत्नी। पति-पत्नी दोनों आश्रम-जीवनके लिअे वहां थोड़े समय रहने आये थे।

निजी

सक्कर,
९-२-'२९

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। अिस बार रोज पत्र लिख सकूं, अैसी स्थिति ही नहीं रही। तू परेशान होती है और दुःखी रहती है, अिसका कारण कुछ कुछ तो समझ सकता हूं। परन्तु वह कारण दूर करना चाहिये। बाह्य कारण हम हमेशा दूर तो नहीं कर सकते। लेकिन अुन पर हम काबू पा सकते हैं। यह काबू अुन्हें सहन करनेमें है। (यहां नहाने अुठा और नहाकर निकला तो रसिकके[1] गमनका तार हाथमें पड़ा। फिर भी खाया। खाकर लिखने बैठा। दिल्लीके पत्र पूरे करके तेरा पत्र पूरा करनेको हाथमें लिया। अिस प्रकार घड़ीभरमें मानो अेक युग बीत गया।) अब मेरे कहनेका अर्थ बिना समझाये तू समझ गअी होगी। दुःखका निवारण अुसके सहन करनेमें ही है। फिर कोअी क्या कहता है, क्या करता है, कैसे रहता है, अिसका विचार भी क्यों करें? हमें स्वयं जो करना हो वह हम शान्ति और आनन्दसे करें। अितना करनेकी तुझमें शक्ति है। न हो तो लानेका महाप्रयत्न करना।

अपनी तबीयत संभाल कर काम करना। बाल-मन्दिरके बारेमें खूब गहरे जाकर जो करना अुचित हो वह करना। अुसका मुखिया-पन तो तेरे हाथमें ही है न! जो चीज तू ढूंढने नहीं गअी वह चीज जब आ पड़ी है तो अुसे निभाना और सुशोभित करना चाहिये।

प्रत्येकके गुण ढूंढकर अुनका चिन्तन करना। दोष देखे तब सोचना कि दोष-रहित संसारमें अेक भी चीज नहीं होती। 'जड़-चेतन गुण-दोषमय' नामक दोहा गाना और अुसका मनन करना।

अिससे अधिक अब आज नहीं लिखा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

---

१. पूज्य गांधीजीका पौत्र। हरिलाल गांधीका छोटा लड़का। वह जामिया मिलिया, दिल्लीमें था। वहीं अुनका देहान्त हो गया।

लरकाना,
१५–२–'२९
शनिवार,

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। मेरा कार्यक्रम तो फिर बदल गया। आंध्र देश जाना मुलतवी हो गया। आश्रममें थोड़े दिन फिर रहनेको मिलेगा। अधिक छगनलाल जोशीके पत्रसे मालूम होगा।

तेरा स्वास्थ्य तेरे हाथमें है। तू प्रयत्न करती है, अिसलिअे मेरा विश्वास है कि सब कुशल ही है। सुलोचनाबहन[1]का पत्र तो तूने पढ़ा है न? तुझसे मैं तेरे नामका गुण चाहता हूं। पुष्पको अपनी सुगंध फैलानेके लिअे मेहनत नहीं करनी पड़ती। स्वभावके कारण अुसकी सुगन्ध अपने-आप फैलती रहती है। तेरे साथ भी अैसा ही होवे। मनुष्यमात्रके साथ अैसा ही होना चाहिये। परन्तु होता नहीं। क्योंकि हमारी आकृति ही मानवकी है। स्वभावमें तो पशुता भरी है, अिसलिअे अुससे छूटनेके लिअे महाप्रयास करने पड़ते हैं।

मनु (गांधीजीकी पौत्री) को तू ठीक चला रही है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. भूतपूर्व बड़ौदा राज्यके दीवान स्व० श्री मनुभाअी मेहताकी बहन।

१८-२-'२९

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। मेरी मौजूदगीमें तू आने-जानेवाली मेरी सारी डाक पढ़ ही सकती है।[1] परन्तु मेरी गैरमौजूदगीमें जरा नाजुक बात है। परन्तु मैंने तुझे कोअी अुलाहना नहीं दिया। मैंने तो मर्यादा बनाअी। मैं आशा रखता हूं कि जब तक तेरे और . . . बहनके बीच अन्तराय है तब तक जिससे गलतफहमी पैदा हो अैसी कोअी भी बात तू नहीं करेगी। अैसा क्या काम हो सकता है, यह देखनेके लिअे सूक्ष्म अहिंसा और अुदारताकी आवश्यकता है। लेकिन बात यह है कि जिस तरह . वहनको तेरी तरफसे बुरा लग जाता है वैसे ही तुझे भी लग जाता है। कुछ भी हो तो भी दुःख न माननेकी आदत डालनी ही चाहिये। अिसे अुलाहना न समझ कर अनुभवीकी सलाह समझना। मैं जानता हूं कि तू अपने बूतेके अनुसार बढ़ रही है। अिससे मुझे सन्तोष है। परन्तु मुझे तो वृद्धिकी गति बढ़ी हुअी देखनी है।

बापूके आशीर्वाद

२९

मौनवार

चि० कुसुम,

तू अब शिथिल हो गअी है। गंगाबहनके साथ मन मिल गया है, यह तो मुझे बहुत अच्छा लगा। तुम तीनों[2] अेक हो जाओ तो

१. पू० गांधीजी आश्रमवासियोंके लिअे सारी डाक अिकट्ठी भिजवाते थे। और जिस पत्र पर निजी नहीं लिखा होता वह देख ली जाती थी और अुनकी सूचनाके अनुसार सम्बन्धित व्यक्तियोंको पहुंचा दी जाती थी। अेक बहनको यह अच्छा नहीं लगा। अिस बारेमें पू० गांधीजीसे पूछा गया। अुसीके जवाबमें अुपरोक्त पत्र है।

२. गंगाबहन वैद्य, वसुमतीबहन और मैं।

जिस तरह बराबर ही वह गलतीमें रह जाता है। परन्तु अब अधिक समझाकर नहीं बढ़ाऊंगा। शायद यह सब तू मेरे जितना ही समझती है। केवल मुझे लगा कि तू मेरी बात नहीं समझती, इसलिये इतना लिख डाला है।

... मेरे पास ही है। मुझसे शिकायतें बिलकुल निराश हो गये हैं। वे मुझसे मिले और बोले, "मेरी लड़की जानेवाली या अच्छी होनेवाली होगी तो आपके हाथों होगी। मैंने तो और सब आशा छोड़ दी है। इसलिये आप मुझे संभाल सकें तो संभालिये।" इसके बाद तो मैं और क्या करता?

... को खूब शान्तिसे पत्र लिखना। बा, गंगाबहन और वसुमतीको न भूलना।

बापूके आशीर्वाद

३१

मांडले,
१८–३–'२९
मौनवार

चि०

तेरा पत्र कलकत्तेमें भेजा मिला। २६ तारीखकी खबर तो यह पत्र मिलेगा तब तक मिल गयी होगी। आश्रममें २८ तारीखकी रातको पहुंचनेकी आशा रखता हूं। आज हम मांडलेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

३२

मौनवार,
रंगूनके प्रवासमें

चि० कुसुम,

कलकत्तेके पते पर लिखा हुआ तेरा पत्र मिला है। प्रभावती मुझे लिखती रहती है कि कुसुमबहनको जल्दी बुला दीजिये। [illegible] लिख रहा हूं, परन्तु तू अपना समय लेना।

और वहनें भी अुसमें लगा जायेंगी और स्त्री-विभाग जो टूटता-सा मालूम होता था वह जुड़कर अेक हो जायगा।

बापूके आशीर्वाद

३०

कलकत्ता,
४–३–'२९
मौनवार

चि० कुसुम,

तेरे पत्रकी आज प्रतीक्षा कर रहा हूं। यह तो अभी ही लिख डालना चाहिये।

तीसरे दर्जेका सफर मेरे लिअे तो आसान हो गया है। दिल्लीसे सारा डिब्बा मुझे सौंप दिया गया था।

तू जी भरकर सगे-सम्बन्धियोंमें घूमना, तबीयतको संभालना और जल्दी लौटना। परन्तु जितना समय चाहिये अुतना लेना।

आश्रममें वहनोंको पत्र लिखती रहना।

मुझे भय है कि यह बात मैं अभी तक पूरी नहीं समझा सका हूं कि जो मनुष्य अपने-आप बंधता है वही बन्धन-मुक्त होता है। परन्तु यह बात झट समझ लेनेकी है। बिना पतवारकी नाव स्वतंत्र नहीं है, परन्तु अिधर-अुधर भटकती है और अन्तमें किसी चट्टानसे टकरा कर टूट जाती है। अिस नाव पर समुद्रकी सारी लहरें असर करती हैं। अिसी तरह जो मनुष्य अपनी मर्यादा पहलेसे बना लेता है, वह दुनियाके तूफानी समुद्रसे जूझता है और शान्त रह सकता है। अितना पूरी तरह समझ लेनेके बाद तुझे जो ठीक लगे सो करना। मैंने अपनेसे अधिक स्वतंत्र अिस संसारमें किसीको नहीं देखा। परन्तु मैंने अपनी स्वतंत्रता अपनेको बांध कर अर्थात् नियम बनाकर और अुनका पालन करके साधी है। अिस जगतमें मैं देखता हूं कि हमें बहुतोंके साथ बंध जाना पड़ता है। समाजमें रहनेवाले प्राणीके लिअे यह आवश्यक है।

अिस तरह अंधकार ही वह समाजमें रह सकता है। परन्तु अब अधिक सयानपन नहीं बघारूंगा। शायद यह सब तू मेरे जितना ही समझती है। केवल मुझे लगा कि तू मेरी बात नहीं समझी अिसलिअे अितना लिख डाला है।

. मेरे साथ ही है। अुसके पिताजी बिलकुल निराश हो गअे हैं। वे मुझसे मिले और बोले, "मेरी लड़की जीनेवाली या अच्छी होनेवाली होगी तो आपके हाथों होगी। मैंने तो और सब आशा छोड़ दी है। अिसलिअे आप अुसे संभाल सकें तो संभालिये।" अिसके बाद तो मैं और क्या करता?

...को खूब शान्तिसे पत्र लिखना। बा, गंगाबहन और वसुमतीको न भूलना।

बापूके आशीर्वाद

माडले,
१८-३-'२९
सोमवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र कपड़वंजसे भेजा मिला। २६ तारीखकी खबर तो यह पत्र मिलेगा तब तक मिल गअी होगी। आश्रममें २८ तारीखकी रातको पहुंचनेकी आशा रखता हूं। आज हम माडलेमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

३२

सोमवार,
रंगूनके प्रवाससे

चि० कुसुम,

कलकत्तेके पते पर लिखा हुआ तेरा पत्र मिला है। प्रभावती मुझे लिखती रहती है कि कुसुमबहनको जल्दी बुला दीजिये। यह तुझे लिख रहा हूं, परन्तु तू अपना समय लेना।

यहांके समाचार सुबैया[1] या प्यारेलाल जितने दें अुतनेसे सन्तोष करना।

अभी तक तो मैं मानता हूं कि आश्रममें २८ तारीखकी रातको पहुंचूंगा। तबीयत अच्छी है। कामके भारका तो कहना ही क्या?

बापूके आशीर्वाद

३३

बम्बअी,
५–४–'२९
गुरुवार

चि० कुसुम,

शारदा[2]के बारेमें दूसरे पत्रोंसे जान लेना। अिस काममें पूरी मदद करना। सुलोचनाबहनकी सेवा करना। शान्ति तो रखेगी ही अैसा मानता हूं। अबकी बारके सफरमें तो ले ही जाअूंगा। राधा[3]की तबीयत खूब नाजुक है, अिसलिअे अुसका भार अुठाया जाय तो अुठा लेना।

बापूके आशीर्वाद

३४

मंगलवार

चि० कुसुम,

मैं मान लेता हूं कि छगनलाल (जोशी)को तू खूब मदद देती होगी। भीतर जितना सेवाभाव हो वह सब अुंड़ेलनेका अब समय है। आत्मविश्वास न खोना।

बापूके आशीर्वाद

---

१. मद्रासी भाअी। अुस समय पू० गांधीजीके स्टाफमें थे। वे शॉर्टहैण्ड टाअिपिस्टका काम करते थे।

२. शारदाबहन कोटक। आश्रममें रहनेवाली बहन।

३. मगनलाल गांधीकी पुत्री।

३५

९–४–'२९

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। तू लिखती है अुस पक्षका समर्थन हो सकता है। फिर भी जो हो रहा है वह ठीक है। लोगोंको कानाफूसी करनेसे रोकना चाहिये। परन्तु अिसके लिअे आदत पड़नी चाहिये। आश्रममें हम जो प्रयोग कर रहे हैं वह नया है[१]। जब तक अुनकी आदत न पड़े तब तक स्पष्ट है कि अुसके अुलटे परिणाम आ सकते हैं। अिससे डरनेका कोअी कारण नहीं। अैसा करते करते ही हम पापोंको ढकनेके दोषसे बचेंगे। महाभारतकी अेक खूबी यह है कि व्यासजीने पापोंको ढंकनेका प्रयत्न ही नहीं किया। अिसका विचार करना।

बापूके आशीर्वाद

३६

आश्रमके प्रवाससे,
रविवार

चि० कुसुम,

तेरे पास कट्टो[२] और विमला[२] आये हैं, यह मुझे अच्छा लगा। अिनमें और मनु[३] तेरे पास रहती हो तो अुसमें ओतप्रोत हो जाना। अुन पर प्रेमकी वर्षा करना। अुनकी देखभाल कैसी की जाय, यह तो तू जानती ही है। अुन्हें संभालनेमें दूसरी बहनोंकी मदद लेना। यह सोच कर अुनका पालन करना कि तेरे ही भाअी-बहन हों तो तू अुनके साथ कैसा व्यवहार करेगी।

१. स्त्री और पुरुष निर्मलतासे आश्रममें अिकट्ठे रहें, यह प्रयोग नया है।

२. आजकल विद्यापीठमें हिन्दी शिक्षणका काम कर रहे श्री गिरिराजकिशोरका पुत्र और पुत्री।

३. गांधीजीकी पौत्री।

अिस बार दौड़धूप खूब है। और तू आअी होती तो किस हद तक अिसे झेल सकती, यह अेक प्रश्न ही है। अिमाम साहब[1] और प्रभावती मुश्किलसे सह पा रहे हैं। सब थक जाते हैं। मैं देख रहा हूं कि बा सबसे ज्यादा जाग्रत रहती है। परन्तु बामें वह शक्ति है। आलस्य जैसी वस्तु तो अुसने बर्षोंसे जानी ही नहीं और शरीर खूब कस गया है।

बापूके आशीर्वाद

३७

आंध्रके प्रवाससे,
१७-४-'२९

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। तेरा अिस समय आश्रम छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगा। यह बिलकुल सच है कि तूने जानेकी छुट्टी ली थी। परन्तु अुसके पीछे गर्भित समझ यह तो होनी ही चाहिये कि हाथमें लिया हुआ काम छोड़कर सगी मांके लिअे भी नहीं जा सकते। तू न हो तो जड़ावबहन[2] क्या करें? तू मेरे साथ भ्रमण कर रही हो तो क्या करें? तू समुद्र पार हो तो क्या करें? तेरे हाथमें मनु थी, तेरे हाथमें कट्टो-विमला आ गये, तू (छगनलाल) जोशीके काममें खूब मददगार थी। दूसरे कामोंमें भी अिस समय मदद दे सकती थी। अैसी स्थितिमें तू आश्रम छोड़कर नहीं जा सकती थी। यह धर्म समझमें आता है? गीताकी शिक्षा यही है, अैसा मुझे महसूस हुआ है। अितनी आशा तो तुझसे रखता ही हूं। जोशीने छुट्टी दी, यह बचाव पेश न करना। वे और कोअी जवाब दे ही नहीं सकते थे। अब जो होना था सो तो हो गया। यह अुपदेश भविष्यके लिअे है। यह अुलाहनेके रूपमें नहीं है। अुलाहना देकर मैं क्या करूंगा? अुलाहनेका पात्र मैं स्वयं कितनी ही बार होता हूंगा। परन्तु

१. साबरमती आश्रममें सपरिवार रहनेवाले मुस्लिम सज्जन।
२. मेरी माताजी।

अैसी स्थितिमें पड़ जायें तब अुससे भविष्यके लिअे पाठ ले लेना चाहिये। अितना करें तो बस है।

अब अुमरेठसे दौड़कर जानेकी जरूरत नहीं। वहां गयी है तो वहांका काम निपटा कर ही जाना। जानेसे पहले निश्चय कर लेना कि या तो आश्रममें जिम्मेदारीका काम लिया न जाय और लिया जाय तो दूसरा संभाल न ले तब तक अुसे छोड़ा न जाय। मेरी गाड़ी ठीक चलती है।

बापूके आशीर्वाद

३८

आंध्रके प्रवाससे,
२७-४-'२९
शुक्रवार

चि० कुसुम,

अिस समय रातके २-२० हुअे हैं। आज १२-४५ पर अुठा हूं। कामके पत्र लिखने थे और मच्छर तंग कर रहे थे। थकावट अितनी नहीं थी अिसलिअे जाग अुठा। तेरा पत्र कल ही मिला।

अहादवहन अच्छी हो जायें तब तक शांतिसे वहां रहना। जब हम मिलें तब मेरे पत्रके बारेमें अधिक पूछना हो, तो पूछ लेना।

मैं देख रहा हूं कि तू अपने मनमें अुठनेवाले विचारोंको खूब दबाती है। खुले दिलसे लिखती नहीं, कहती नहीं। यदि तू मुझसे पिता और मित्रका पार्ट अदा कराना चाहती हो तो तेरा यह व्यवहार ठीक नहीं।

पेंसिलसे लिखनेकी आदत छोड़ दे तो अच्छा[1]। मुझे यह आदत थी। मैंने देखा कि सामनेवालेको पेंसिलसे लिखा हुआ पढ़नेमें मुश्किल होती है। पेंसिलके अक्षर डाकसे पहुंचते पहुंचते धुंधले हो जाते हैं। तेरे अक्षर साफ हैं अिसलिअे यह सही है कि पढ़नेवालेको कम असुविधा होगी, परन्तु असुविधा तो होगी ही।

१. मेरा अेक पत्र पेंसिलसे लिखा हुआ गया तब तक पू० बापूजी कुछ न बोले। दूसरा गया, कि 'आदत' बता कर मुझे जाग्रत किया।

यहांका हाल तो प्रभावती लिखती ही होगी। अुद्योग-मन्दिरमें आजकल जो कुछ चल रहा है[1] अुसमें तू वहां होती तो मुझे अच्छा लगता। परन्तु अुमरेठ पहुंचनेके बाद तो तेरा धर्म जड़ावबहनके पास ही रहनेका है, अिस विषयमें मुझे शंका नहीं है। तू अुनके स्वास्थ्यके बारेमें तो कुछ लिखती ही नहीं।

प्रभावती तो तुझे अनेक पत्र लिखती ही होगी, अिसलिये अिस हमेशा याद रहनेवाली यात्राका सब हाल तू जानती होगी[2]। मेरी तंदुरुस्तीमें कोअी खराबी नहीं है, यह अभी तक तो कहा जा सकता है। बादकी भगवान जाने। २–३० बजे हैं।

बापूके आशीर्वाद

३९

कोकोनाड़ा,
३–५–'२९

चि० कुसुम,

तेरा पत्र आया है। अब जड़ावबहन स्वस्थ हो गअी होंगी। अभी तक तो सफरका कोअी बुरा असर नहीं दिखा। और 'अब तो बहुत गअी और थोड़ी रही' है। और समाचार प्रभावतीके पत्रसे जान लेना।

बापूके आशीर्वाद

---

१. साबरमतीके सत्याग्रहाश्रमको अुद्योग-मन्दिरमें बदला गया था। अुसके सिलसिलेमें जो कार्य वहां हो रहा था तथा जो सैद्धान्तिक चर्चाअें चल रही थीं, निर्णय आदि लिये जा रहे थे अुनका अुल्लेख है।

२. आंध्रमें बहुत ही भागदौड़का कार्यक्रम रखा गया था। अर्थात् रेलवे लाअिनसे दूर दूरके गांवोंमें भी।

४०

आश्रके प्रवाससे,
४–५–'२९

चि० कुसुम,

आजकी डाकके सब पत्र सफरसे रातको ८–३० बजे आकर लिख रहा हू, क्योंकि सवेरे फिर तैयार होना है। और पत्र यहां न लिखू तो फिर जा नहीं सकते।

तेरा पत्र मिला है। सब कुछ लिखनेमें जरा भी संकोच न रखना।

तू गअी अिसका फायदा जडावबहनको मिला, अिसमें तो शक ही नहीं। मैं मानता हू कि तू वहाका काम अधूरा छोड़कर नहीं आयी होगी। अिस समय और कुछ नहीं लिखा जा सकता।

सुलोचनाबहनने लिखा है, "कुसुमबहन भी नहीं है, अिसलिअे जी नहीं लगता।"

बापूके आशीर्वाद

४१

आंध्रके प्रवाससे,
सोमवार

चि० कुसुम,

तू परेशान जरूर हुअी। हालाकि मुझसे तूने कहा तो यह है कि जैसा मुझे अच्छा लगे वैसा मैं करूं। प्रभावती थक कर अिस समय पास ही घोर निद्रामें पड़ी है। सारी रात गाड़ीमें शोरगुल रहा। यो कहा जा सकता है कि तीसरे दर्जेकी भीड़ थोड़ीसी महात्माओं भी सहनी पड़ती है। प्रभावती अपने शरीरकी रक्षा कर सकेगी या नहीं यह देखना है।

कुछ भी हो, दूसरी यात्रामें तुझे ले जाअूगा। तू सफरका बोझ कैसा सहन कर सकती है यह देखना पड़ेगा।

सुलोचनाबहन आनन्दमें होगी।

बापूके आशीर्वाद

४२

(दांडीकूचके समय)
१३–३–'३०

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला है। मिलना चाहिये था कल। परन्तु प्यारेलाल भूल गये। आज वाका पत्र पूरा कर रहा था तव आया।

छात्रालयमें जानेका निश्चय हुआ, यह वहुत ठीक हुआ है।

अव दूधीवहन[1]को समझाना। वे अलग रहती हैं अिसके वजाय छात्रालयमें रहें तो अुनकी संभाल रखी जा सकती है। . . . को काममें लगा देना। अुसे जोर देकर कहनेमें संकोच न रखना। शान्तु[2]के दांत हरिभाअी[3]को दिखा देना। सव वीमारोंकी खवर देना। डायरी लिखना न भूलना। गीताका अध्ययन अच्छी तरह करना। गुजराती फाअिल साफ कर डालना। दिनभरका कार्यक्रम देना। मुझे कव पकड़ा जायगा, अिसका कोअी पता नहीं चलता। अिच्छामें आये तव पकड़े। तू तो नियमपूर्वक पत्र लिखती रहना। अभी अेक दिन तो वहां[4] से मोटर आयेगी। फिरसे हरिभाअीके वारेमें लिखनेका प्रयत्न करना।[5] हारना नहीं।

वापूके आशीर्वाद

---

१. श्री वालजीभाअी देसाअीकी पत्नी।
२. चरखा-संघका विद्यार्थी।
३. अहमदावादके डॉक्टर श्री ह० म० देसाअी।
४. अहमदावादसे।
५. मेरे पतिका जीवन-वृत्तान्त।

दाडीकूच,
१४–३–'३०

चि० कुसुम,

कृष्णाकुमारी[1]की आंखें जलती हों तो अुसे हरिभाअीको दिखाना। चन्द्रकान्ता[2]से कहना कि अुससे मैं बड़ी आशा रखता हूं। शान्तुके दांत हरिभाअीको दिखा देना और जो हिलते हैं अुन्हें अुखाड़ देनेको कहना। धीरु[2]के और दूसरे कोअी बीमार हों तो अुनके स्वास्थ्यके समाचार भेजना।

तेरी दिनचर्या भेजना। रहनेकी अलग ही कोठरी है? वहां कैसा लगता है?

बापूके आशीर्वाद

४४

आणंद,
मौनवार,
(दाडीकूच)

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। मकानके बारेमें तूने जो लिखा वह सही है। परन्तु धर्म तो छात्रालयमें ही जानेका था। अिसलिअे गअी तो ठीक ही हुआ है। जो श्रेय है अुसीको प्रेय बना डालना चाहिये। अपने शरीरकी रक्षा करते हुअे जितना काम किया जा सकता हो अुतना ही करना। मुझे तो लिखा ही करना।

मन्त्रीपद तो छूटा ही नहीं। समय मिलने पर सब साफ कर डालना। मेरी चिंता न करना। मैंने तुझे दुःख तो दिया ही है। पर मुझे अुसका खेद नहीं है। मैं न दूं तो और कौन दे?

बापूके आशीर्वाद

---

१ युक्तप्रान्तसे आयी हुअी बहनें।

२ पूज्य गांधीजीके कुटुम्बी। 'प्यारा बापू' (गुजराती) पत्रके सम्पादक नवीन गांधीके भाअी।

४५

२१-३-'३०
(दांडीकूच)

चि० कुसुम,

जो पत्र नहीं लिखे वह मंत्रिणी कैसी? महादेव[1]से अिस समय आशा नहीं रखता। अुन्हें समय नहीं मिलता। वे मंत्री होते हुअे भी आजकल मंत्रीका काम नहीं करते, परन्तु अुससे अधिक करते हैं। तूने तो मंत्रिणीकी हद पार नहीं की। बीमारोंके समाचारोंकी आशा रहती है। वहांके[2] कार्योका हाल भी जानना चाहता हूं। और जो तुझे सूझे वह। बाके क्या हालचाल हैं? तेरी तबीयत कैसी रहती है? तू बराबर पढ़ती है? पींजती है? कातती है? अपनी डायरी लिखती है? जीवन-वृत्तान्त[3] लिख रही है?

बापूके आशीर्वाद

४६

आमोद,
२३-३-'३०
प्रार्थनासे पहले
(दांडीकूच)

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला।

नारणदास[4], व गंगाबहन[5]की अनुमति मिले तो अेक दिन बिता जाना। भड़ौंच बुधवारको पहुंचना है, यह तो जानती है न? यह तुझे

---

१. श्री महादेव देसाअी, पू० गांधीजीके मंत्री।

२. साबरमती आश्रमके।

३. मेरे पतिका पत्र-साहित्य छपवाना था। अुसमें पू० गांधीजीने प्रस्तावना लिखना मंजूर किया था। गांधीजीका आग्रह था कि मैं अुसमें अपने पतिका जीवन-वृत्तान्त लिखूं।

४. श्री नारणदास गांधी। अुस समय आश्रमके मंत्री।

५. श्री गंगाबहन वैद्य।

सोमवारको मिलना चाहिये। आज मिल सकता था, परन्तु पत्र लिखनेका समय ही नहीं था।

तीन बजे नहीं अुठ सकती, अिसका दुःख मानना तेरा पागलपन है। शरीर काम न करे तो अिसमें तू क्या करे? बाकी सब अीश्वरके अधीन है। तू असावधान न रहे, अितना काफी है। प्रयत्नशील तो है ही। अधिक लिखनेका समय नहीं।

दूधीबहनको पत्र तो लिखा ही है।

बापूके आशीर्वाद

४७

दाडीकूचके समय
(बहुत करके कराड़ी–सूरतके पासकी)
१४–४–'३०

चि० कुसुम,

मद्यपान-निषेध और विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके बारेमें मैंने लिखा है[1], अुसमें कुछ सूझ पड़ता है? तू अुसमें प्रमुख भाग लेनेकी हिम्मत रखती है क्या?

तेरे पत्र मिले हैं।

वहां किस काममें व्यस्त है?

मेरे पकड़े जानेकी पक्की खबर है, अैसा कहकर कल मुझे सारी रात जगाया था। और मैं तो अभी तक मौज कर रहा हूं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. दाडीकूचके समय नवसारीके पासके वेजलपुर गांवमें पू० गांधीजीने बहनोंकी बड़ी सभा की थी और अुसमें विदेशी वस्त्र-बहिष्कार तथा मद्यपान-निषेधका काम मुख्यतः बहनें हाथमें लें, अैसे प्रस्ताव पास हुअे थे। अिस विषयमें अुन्होंने ता० २०–४–'३० के 'नवजीवन' में लिखा था अुसीका अुल्लेख है।

४८

२–५–'३०

चि० कुसुम,

अपने पिछले अधूरे पत्रमें जो पत्र लिखनेका तूने लिखा था वह अभी तक नहीं आया।

अिसके साथ दो पत्र तेरे आये हैं अुन्हें रखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

४९

यरवडा मंदिर

चि० कुसुम (बड़ी),

बड़ी सो खोटी या खरी? आश्रम छोड़ा[1], परन्तु सेवाधर्म न छोड़ना। मुझे पत्र लिखना। अीश्वर तेरा कल्याण करे।

बापूके आशीर्वाद

५०

यरवडा मंदिर,
१४–७–'३०

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र बहुत दिनों बाद मिला। तू ठीक स्थान पर पहुंची है[2]। अन्तमें तो तुझे आश्रम पहुंचना ही है। अपना शरीर न बिगाड़ना।

---

१. मेरे पतिके स्वर्गवासके बाद साबरमती आश्रममें मेरा रहना हुआ, अुसका कारण आश्रम-जीवनकी अपेक्षा पू० गांधीजीके प्रति मेरा भक्ति-आकर्षण अधिक था। पू० गांधीजीने दांडीकूचके समय महा प्रस्थान किया अुसके थोड़े समय बाद मैं आश्रमसे बाहर आ गअी। अुसीका यहां अुल्लेख है।

२. भड़ौंच सेवाश्रममें रहकर मैं मद्यपान-निषेध तथा विदेशी वस्त्र-बहिष्कारके काममें जुड़ी अिसका अुल्लेख है।

मुझे लिखती रहना। पीजन, चरखा और तकली पर पूरा काबू पाये बिना मिलाओ पर न जाना। यह आसान है। अनिवार्य भी नहीं। कातनेकी क्रिया सम्पूर्णताको पहुंचे तो बहुत मानूंगा। पुराणी[1] अभी बाहर है।

बापूके आशीर्वाद

५१

यरवडा मंदिर,
३–८–'३०

चि० कुसुम (देसाओ),

तेरा पत्र मिला। किसीके शुभ प्रयत्न आज तक व्यर्थ नहीं गये। अिन्दुलाल[2]के बारेमें निश्चित समाचार तो पहले तू ही दे रही है। अच्छा हुआ।

सबके साथ पत्र-व्यवहार तू अच्छी तरह कायम रख रही है। सुशीला[3] (पंजाबिन) को पत्र लिखती है? यदि अुसका पता जानती हो तो अुसे लिखना कि मुझे लिखे। वह क्या कर रही है?

सबको यथायोग्य।

– बापूके आशीर्वाद

---

१. श्री छोटुभाओ पुराणी (अब स्वर्गीय)।

२ श्री अिन्दुलाल याज्ञिक। अुस समय विदेशी वस्त्र-बहिष्कार समितिमें काम कर रहे थे। अिसीका अुल्लेख है।

३ डॉ० सुशीला नय्यर। प्यारेलालजीकी बहन। दिल्ली राज्यकी भूतपूर्व आरोग्य-मंत्री।

कर सकती। मीठुबहनकी सरदारीमें वा वहां गओ है अिसलिअे अुसके अधीन बाको रहना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

५४

यरवडा मंदिर,
२१-९-'३०

चि० कुसुम (देसाअी),

तेरा पत्र मिला है। तू स्वयं बीमार पड़ी है अैसा सुनता हूं। यह क्यों? मच्छर हों तो बेशर्म होकर भी मच्छरदानी काममें ली जाय। अुसका प्रबन्ध नहीं हो सके तो घासलेट चुपड़ना। प्यारेलालको मेरे साथ रखनेकी माग यों नहीं की जा सकती। काकाकी मांग भी मैंने नहीं की थी। अुन्होंने भेज दिया। परन्तु प्यारेलालसे मिलनेकी तजवीज कर रहा हूं। अुसे दस्त लग गये हैं, यह सुनते ही मिलनेकी माग की है। अब अुसे आराम है। तुझे जानना चाहिये कि यहा रहनेवाले कैदी कौन हैं, अिसका मुझे पता नहीं चलता। मैं पिंजड़ेमें हूं यही समझ। तुझे पता लगते ही तुरन्त मुझको लिखना चाहिये था।

बापूके आशीर्वाद

५५

यरवडा मंदिर,
२६-९-'३०

चि० कुसुम (देसाअी),

तेरा पत्र मिला। प्यारेलालके बारेमें पिछले पत्रमें लिखा है। अभी तो भेंट नहीं हुअी, परन्तु अब अुसके बारेमें समाचार मिल सकते हैं। मिलना तो होगा ही। साथ रहनेकी बात दैवके अधीन है। जब मैं बाहर निकलूंगा तब तो मिलेगा ही और मेरे पास रहेगा। परन्तु भविष्यकी कौन जानता है?

५२

यरवडा मंदिर,
२२-८-'३०

चि० कुसुम (देसाओी),

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रका अुत्तर मैं चढ़ने नहीं देता! सुशीलासे जो सीखा जा सके, सीख लेना। परन्तु वाचनका समय रहता है? डायरी लिखती है? प्रार्थना जारी रखी है? मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

वहां[1] कितनी बहनें काम करती हैं? कपड़वंजकी क्या खबर है?

बापूके आशीर्वाद

५३

यरवडा मंदिर,
१२-९-'३०

चि० कुसुम (देसाओी),

तेरा पत्र मिला। मैं राह देख रहा था, प्यारेलालके समाचार मिलनेकी आशासे। प्यारेलाल यहां है, यह खबर भी तेरा तार अनायास जेलरके पास देखा तब लगी। फिर छगनलाल (जोशी) के पत्रमें अुसकी खराब तबीयतके समाचार थे। यहां तो मुझे कहा गया है कि वह आनन्दमें है। अब तेरे पत्रसे पता चलेगा।

नियत कर्मके बारेमें तू आलस्य न करना। श्रद्धा रखना। श्रद्धाका काम तो वहीं होगा न, जहां बुद्धि काम न दे? जो आलस्यके कारण या और किसी कारणसे न हो अुसके बारेमें मुझे लिखते हुअे संकोच न करना। मुझे लिखनेसे भी तू सुरक्षित रहेगी, क्योंकि मुझे लिखना पड़ेगा यह बात ही तुझे नियमित बनानेमें मददगार होगी।

वहांके विषयमें यहांसे मैं क्या कर सकता हूं? तू ही मीठुबहनके सामने शिकायत कर। या स्वतंत्र रूपमें तो कोओी बात हरगिज नहीं

---

1. भड़ौचमें।

कर सकती। मीठूबहनकी सरदारीमें या वहां गओी है अिसलिअे अुसके अधीन बाको रहना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

५४

यरवडा मंदिर,
२१-९-'३०

चि० कुसुम (देसाओी),

तेरा पत्र मिला है। तू स्वयं बीमार पड़ी है अैसा सुनता हूं। यह क्यों? मच्छर हों तो बेशर्म होकर भी मच्छरदानी काममें ली जाय। अुसका प्रबन्ध नहीं हो सके तो घासलेट चुपड़ना। प्यारेलालको मेरे साथ रखनेकी मांग यों नहीं की जा सकती। काकाकी मांग भी मैंने नहीं की थी। अुन्होंने भेज दिया। परन्तु प्यारेलालसे मिलनेकी तजवीज कर रहा हूं। अुसे दस्त लग गये हैं, यह सुनते ही मिलनेकी मांग की है। अब अुसे आराम है। तुझे जानना चाहिये कि यहां रहनेवाले कैदी कौन हैं, जिसका मुझे पता नहीं चलता। मैं पिंजड़ेमें हूं यही समझ। तुझे पता लगते ही तुरन्त मुझको लिखना चाहिये था।

बापूके आशीर्वाद

५५

यरवडा मंदिर,
२६-९-'३०

चि० कुसुम (देसाओी),

तेरा पत्र मिला। प्यारेलालके बारेमें पिछले पत्रमें लिखा है। अभी तो भेंट नहीं हुवी, परन्तु अब अुसके बारेमें समाचार मिल सकते हैं। मिलना तो होगा ही। साथ रहनेकी बात दैवके अधीन है। जब मैं बाहर निकलूंगा तब तो मिलेगा ही और मेरे पास रहेगा। परन्तु भविष्यकी कौन जानता है?

का० सा०[1] नवम्बरके अन्तमें छूटेंगे। अितनेमें तो प्यारेलालकी मियाद भी पूरी होनेको आ जायगी न? प्या० के लिअे अन्तमें गीता और रामायण आवश्यकता सिद्ध हुआी है, अिसलिअे मैं समझता हूं कि मैं चिन्तासे मुक्त हो गया। अुसे ये क्यों नहीं फलती थीं, यह मैं समझ नहीं सकता था।

तू स्वयं स्वीकार करती है कि मुझे लिखकर ही तू सुरक्षित रह सकती है। तो मुझे पूरा ब्योरा लिखा करना।

मैंने पुराने चप्पल नहीं मांगे। नये थे अुन्हें तू भूल गअी दीखती है। परन्तु अभी तो काम चलता है।

बापूके आशीर्वाद

५६

यरवडा मंदिर,
७–१०–'३०

चि० कुसुम (देसाअी),

पिछले सप्ताह प्यारेलालसे मिल सका। थोड़ा ही समय दिया था। शरीर अुसका दुबला तो हुआ ही है। परन्तु अब ठीक है। दूध वगैरा मिलता है। देखभाल होती है। अब अधिक मिल सकूंगा अैसा खयाल है।

बापूके आशीर्वाद

५७

यरवडा मंदिर,
१७–१०–'३०

चि० कुसुम (देसाअी),

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रकी राह देखूंगा। आजकल तो नियमित लिखती रहना। हारना नहीं। प्यारेलालसे फिर मिला था।

---

१. काकासाहब कालेलकर।

अभी और मिलनेवाला हूं। अब कोओी दिक्कत नहीं है। सेवाश्रमके अस्पताल भी कब्जेमें ले लिये जानेकी खबर अखबारोंमें है।

बापूके आशीर्वाद

५८

यरवडा मंदिर,
३–११–'३०

चि० कुसुम (देसाओी),

सुशीलाको लिखना कि मैं शनिवारको प्यारेलालसे मिला था। अब अुसका शरीर फिरसे ठीक हो गया है। अमल वजन फिरसे पा लिया है। तीन सेर दूध और अेक सेर रोटी खाता है। अिच्छा हो तब साग भी खाता है।

तेरी अनियमितताके बारेमें तुझे क्या लिखूं?

बापूके आशीर्वाद

५९

यरवडा मंदिर,
१४–११–'३०

चि० कुसुम (बडी),

तुझे क्या कहूं? लिखने बैठी तब तो तू काफी खबर दे सकी। अब किया हुआ निश्चय पालन करना। मेरे पास अपना रोना भी चाहे तो रो सकती है। हमें तो दुःखमें सुख मानना है। यही गीताका सार है, यों भी कहा जा सकता है। परन्तु मुझे ज्ञान नहीं देना है।

---

१. मढीव।

२. मैंने हर सप्ताह पत्र लिखनेको कहा था और मैं लिख नहीं सकी थी। अिसके बारेमें।

चप्पल तो अंतमें मंगवाने पड़े हैं। कपड़े कुछ नहीं चाहिये। यहांका कम्बल अिस्तेमाल करता हूं। कूचके लिअे साथ लिया था वह तो है ही। खादी तो खूब आ गअी है। तेरा शरीर तो अब अच्छा है न? काकासाहब २८ तारीख तक छूटेंगे।

बापूके आशीर्वाद

६०

यरवडा मंदिर
२२–११–'३०

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। श्लोक हमारी प्रार्थनाका अंग हैं, अिसलिअे अुनका स्मरण करना चाहिये — श्रद्धा पैदा हो तो हम प्रयत्नसे अुनमें तल्लीन हो सकते हैं। न हो सकें तो अुससे हारना नहीं है। जो लोग गाते हैं वे सब तल्लीन नहीं होते। परन्तु श्रद्धासे गाते गाते किसी दिन तल्लीनता अपने-आप आ जाती है। श्लोकोंके अर्थमें जो रहस्य भरा है वह तो है ही। अुसका मनन करनेसे भी तल्लीनता पैदा होनेमें मदद मिलती है।

बापूके आशीर्वाद

६१

यरवडा मंदिर,
२९–११–'३०

चि० कुसुम (देसाअी),

तेरे हर सप्ताह लिखनेकी प्रतिज्ञा करने पर भी अिस हफ्ते पत्र नहीं आया। अिसे मैं गंभीर भूल मानता हूं। यह कहा जा सकता है कि कहा हुआ वचन मिथ्या करने जैसी दूसरी भयंकर बात नहीं होती। यह कुटेव अितनी साधारण हो गअी है कि हमें अुसकी भयंकरताका पता नहीं चलता। परन्तु वह है, यह निश्चित जान और सावधान हो

जा। कुछ न लिखना हो तब छोटेलालकी तरह कोरे कागज पर हस्ताक्षर कर दिये जाय। परन्तु मा-बापके सामने बच्चोंको कुछ कहना ही न हो यह संभव नहीं।

बापूके आशीर्वाद

काकासाहबके बजाय २९ तारीखको प्यारेलाल आ गया।

१-१२-'३०

६२

यरवडा मंदिर,
६-१२-'३०

चि० कुसुम (देसाओ),

तेरे पत्रके तीन पन्ने थे। बीचका पन्ना अिन लोगोंने खो दिया मालूम होता है। मेरे हाथमें नहीं आया। तुझे खयाल हो तो फिर लिखना। प्यारेलालकी तबीयत बहुत ही अच्छी हो गयी है। १२२ पौण्ड वजन है। तीन सेर दूध, अेक सेर रोटी और साग वगैरा मिलता है।

आजकल तो हम दोनों चरखेके पीछे पागल हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

६३

यरवडा मंदिर,
११-१२-'३०

चि० कुसुम (बडी),

तेरा पत्र मिला। अपने स्वास्थ्यमें मैं कोओ खराबी नहीं पाता। फेरबदलसे सुधार ही देखता हूं। जरा भी चिन्ता न करना।

प्यारेलालका समय यों बटा हुआ है:

३७५ तार चरखे पर, १०० तार तकली पर, जितनी चाहिये अुतनी पूनियां बनाना — अिन तीन कामोंसे अभी तो मुश्किलसे ही फुरसत रहती है। तकली अुसके दो घंटे लेती है। मैं भी .

बलात्कार हो सकता है। जब वह दूसरोंको मजबूर करनेके लिअे किये जानेवाले आत्मपीड़नका रूप ग्रहण करे तो वह त्याज्य है। ये सवाल तूने पहले पूछे हो अैसा याद नही आता।

शंकरभाअी[1]के स्वर्गवासने तेरी जिम्मेदारी बढ़ा दी, न? विधवाके बालक हैं? वह पढी हुअी है? अिसके सिवा कोअी जिम्मेदारी शंकरभाअी पर थी क्या? विधवा पुनर्विवाह करना चाहे तो तू मदद देगी ही, अैसा मैं मान लेता हूं। मुझे सब हाल लिखना।

मेरा वजन १०१ तक फिर पहुच गया है।

बापूके आशीर्वाद

६६

यरवडा मंदिर,
१०–१–'३१

चि० कुसुम (बडी),

अपने निश्चयका तू पालन नहीं कर पाती तब दु:ख होता है।

तूने जो पुस्तकें भेजी हैं, अुसमें कुछ गलतफहमी हुअी है। प्यारेलालकी मान्यता थी कि अुनकी पुस्तकोंके बारेमें तू जानती है और वे शायद तेरे ही पास होगी। अब जो हुआ सो हुआ। व्याकरण आ गया है तो वह अुसके काम आ जायगा। गीताका अुपयोग नही है। यहा कअी प्रकारके संस्करण हैं। मेरे स्वास्थ्यके विषयमें सामाजिक पत्रसे जान लेना। प्यारेलालका स्वास्थ्य अच्छा है। अभी तो ज्वार-बाजरा छोड़ना पडा है, यह तूने देखा होगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१. मेरे देवर पूर्वी अफ्रीकामें गुजर गये थे। अुनके बारेमें।

यही करता हूं। तकलीके १०० — परन्तु चरखेके २७५ तार — हों तो काम चल सकता है। दोनोंके मिलकर ३७५ तार।

लड़कियोंके बारेमें तू लिखती है वह ठीक है। मुझे अधिक स्पष्टतासे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

६४

यरवडा मंदिर,
१९-१२-'३०

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। कृपालानीका शरीर तो अच्छा है न? कान्ति वगैरासे थोड़े दिनोंमें मिलूंगा। प्यारेलालकी संस्कृत-संधि और संस्कृत-समास वगैराकी पुस्तकें तेरे पास या तेरी जानकारीमें हैं, अैसा प्यारेलाल कहता है। ये पुस्तकें भेज देना। गीताके ठीक अध्ययनके लिअे अुसे अिनकी जरूरत पड़ती है। हम दोनोंकी तबीयत अच्छी है। अभी तो ज्वार-बाजरेकी रोटियां मुझे सध गअी हैं, अैसा माना जा सकता है।

स्वास्थ्य-सम्बन्धी ब्यौरेवार समाचार सामाजिक पत्रमें लिखता हूं, अिसलिअे अलगसे नहीं लिखता।

प्यारेलालके पत्र त्रिवेदी[1]के मारफत भेजे जायं।

बापूके आशीर्वाद

६५

यरवडा मंदिर,
२९-१२-'३०

चि० कुसुम (बड़ी),

शान्ता[2] तेरे साथ थोड़ा समय बिताये तो बहुत अच्छा। शिक्षाके बारेमें क्या चाहती है, यह पता चले तो कुछ लिखना सूझे। अुपवासमें

१. पूनाके प्रो० जयशंकर त्रिवेदी।

२. अुस समय आश्रममें रहनेवाले श्री शंकरभाअी पटेलकी पुत्री।

बलात्कार हो सकता है। जब वह दूसरोंको मजबूर करनेके लिअे किये जानेवाले आत्म-पीड़नका रूप ग्रहण करे तो वह त्याज्य है। ये सवाल तूने पहले पूछे हों अैसा याद नहीं आता।

शकरभाअी'के स्वर्गवासने तेरी जिम्मेदारी बढ़ा दी, न? विधवाके बालक हैं? वह पढ़ी हुअी है? अिसके सिवा कोअी जिम्मेदारी शकरभाअी पर थी क्या? विधवा पुनर्विवाह करना चाहे तो तू मदद देगी ही, अैसा मैं मान लेता हूं। मुझे सब हाल लिखना।

मेरा वजन १०१ तक फिर पहुंच गया है।

बापूके आशीर्वाद

६६

यरवडा मंदिर,
१०-१-'३१

चि० कुसुम (बड़ी),

अपने निश्चयका तू पालन नहीं कर पाती तब दुःख होता है। तूने जो पुस्तकें भेजी हैं, अुसमें कुछ गलतफहमी हुअी है। प्यारेलालकी मान्यता थी कि अुसकी पुस्तकोंके बारेमें तू जानती है और वे शायद तेरे ही पास होंगी। अब जो हुआ सो हुआ। व्याकरण आ गया है तो वह अुसके काम आ जायगा। गीताका अुपयोग नहीं है। यहां कअी प्रकारके संस्करण हैं। मेरे स्वास्थ्यके विषयमें सामाजिक पत्रसे जान लेना। प्यारेलालका स्वास्थ्य अच्छा है। अभी तो ज्वार-बाजरा छोड़ना पड़ा है, यह तूने देखा होगा।

बापूके आशीर्वाद

---

१. मेरे देवर पूर्वी अफ्रीकामें गुजर गअे थे। अुनके बारेमें।

६८

यरवडा मंदिर,
२१-१-'३१

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। 'अिस बार भी कोअी लिखनेकी बात नहीं मिलती' — यह लगभग तेरे सब पत्रोंका आरम्भ बन गया है। अिसे पढ़कर हंसूं या रोअूं? अिसका जवाब तू ही पूरा कर लेना।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें चिन्ता होने जैसी अब क्या बात रह गअी है? जरा भी गड़बड़ हुअी कि मैंने खबर दी। तुरन्त अुचित अिलाज किया और फिर जैसा था वैसा हो गया। शक्तिमें तो कोअी फर्क पड़ा ही नहीं। फिर क्या चिन्ता?

शान्ता अब आ गअी होगी।

बापूके आशीर्वाद

---

१. मेरे देवर पूर्वी अफ्रीकामें गुजर गये थे अुनकी पत्नी।

२. भड़ौंच सेवाश्रमवाले डॉ० चन्दूभाअी देसाअी, जो गुजरातमें 'छोटे सरदार' के नामसे प्रसिद्ध हैं।

६९

अलाहाबाद,
६-२-'३१

चि० कुसुम,

जेलके बाहर समय कितना रह सकता है, यह तो तू समझती ही है। अिसलिअे अब जेलकी मार्फत पत्र नहीं लिखे जा सकते। पण्डितजी[1] आज चल बसे। अिसलिअे फिरसे मुझे कहां जाना है, कहां रहना है, यह अनिश्चित हो गया। मुझे पत्र लिखना हो तो अलाहाबाद लिख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

७०

अलाहाबाद,
९-२-'३१

चि० कुसुम,

यहांसे सीधा लिखा हुआ पत्र मिला होगा। तेरे क्षोभको समझता हूं। तुझमें अन्दरका संकोच ही मुझे तो ठीक नहीं लगता। परन्तु अब तो किसी जगह तू मिलेगी तब समय होगा तो यह समझाअूंगा। अथवा समझानेकी भी क्या बात है?

तेरे बारेमें बांधी हुअी आशा मैं छोड़ूंगा नहीं।

शान्ताका पत्र आया है। वह लिखती है कि थोड़े ही दिनोंमें तेरे पास पहुंचेगी।

मेरी तबीयत तो अच्छी ही है। अभी यहां १५ तारीख तक रहना होगा। बादमें जो हो सो सही। अंग्रेजी अक्षर अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. पंडित मोतीलालजी नेहरूके स्वर्गवासका अुल्लेख है।

७१

वोरसद,
८-५-'३१

चि० कुसुम,

तेरे दो पत्र मिले। जैसे तुझे स्वयं लिखकर संतोष नहीं हुआ वैसे मुझे भी नहीं हुआ। मैं समझा नहीं। परन्तु अब अिस विषयको ज्यादा नहीं खोदूंगा। थोड़ा-बहुत समझा हूं अुतनेसे सन्तोष कर लूंगा।

अपना धरनेका काम यांत्रिक न बनाना। मेरा कहना ठीक समझमें आया हो तो अुस पर अमल करना। धरनेके द्वारा शराब पीनेवालोंके घरमें प्रवेश करना।

* * *

सोमवारको यहांसे चल देना है।

बापूके आशीर्वाद

७२

वोरसद,
१८-६-'३१
सुबहकी प्रार्थनासे पहले

चि० कुसुम,

तेरा सन्देशा तो मैं समझा नहीं था, परन्तु पत्र समझा और पढ़कर दुःखी हुआ। पत्रका न आना ही बताता था कि तू दूर भागती जा रही है। न भागने और भागनेका अुपाय तो तेरे ही हाथमें है। चेते तो अच्छा। यहां तो जब तेरी अिच्छा हो तब आ सकती है।

२३ तारीखको यहांसे रवाना होना है। दो दिनके लिअे बम्बअी जाना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

७३

मौनवार

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। तू दूर दूर ही रही अिसलिअे क्या करू ? मेरी तो स्पष्ट राय है कि तुझे कांग्रेसमें आनेका विचार छोडकर अपने कर्तव्यसे चिपटे रहना चाहिये। बहुतोंको मैंने अिसी तरह रोक लिया है। तू अितना सयम न रख सके तो मुझे आश्चर्य और दुःख होगा। फिर भी करना अपने मनकी।

बापूके आशीर्वाद

७४

सूरत,
२४-७-'३१

चि० कुसुम,

तेरे सब पत्र मिले। प्रत्येकमें यह बात थी कि तू जल्दीसे जल्दी मिलनेवाली है, अिसलिअे मैंने पहुच भी नही लिखी। यह आखिरी पत्र तेरी स्थितिकी अनिश्चितता बताता है अिसलिअे लिख रहा हू। अेक दो दिनमें बोरसद जाअूंगा। वहासे अहमदाबाद जानेका अिरादा है। फिर तो जो हो जाय सो सही।

विलायत जाना[1] बिलकुल अनिश्चित है। जब मिल सके तब मिलना। डाहीबहन[2]से पत्र लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

---

१. दूसरी गोलमेज परिषदके लिअे।

२. श्री रावजीभाअी नाथाभाअी पटेलकी पत्नी।

७५

बोरसद,
३०–७–'३१

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। मैं कैसा बावला बन गया था। तेरे पिछले पत्रके जवाबमें ही वह कार्ड था, परन्तु तूने जो मांगा था वह स्पष्टीकरण मैं न दे सका। अुन भाओी[1]के साथ क्या बात हुओी थी यह तो याद नहीं। परन्तु मेरे पत्र अुनके हाथमें आये हों और कुछ प्रकाशित करने योग्य हों तो भले ही करें अैसा मैंने कहा होगा। तेरी अिच्छा अुन्हें कुछ देनेकी हो और तू अुन्हें जानती हो तो देना। मैं कल सवेरे अहमदाबाद पहुंचूंगा। ३ तारीखको वहांसे बम्बओीके लिअे रवाना होअूंगा। तुझे आना हो तो आ जाना। मैं स्वयं तो विद्यापीठमें रहूंगा। बम्बओी आना हो तो बम्बओी आ जाना। डाहीबहनसे कहना कि अुसका पत्र मिल गया। अुसे अपना दिया हुआ वचन पालन करना चाहिये, दांत साफ होने पर। विलायतका कुछ भी तय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

७६

अहमदाबाद,
१८–८–'३१

चि० कुसुम,

तेरा कार्ड मिला। मुझे डॉक्टरकी राय नहीं चाहिये। तेरी चाहिये।

---

१. अेक भाओी पू० बापूके पत्रों आदिका संग्रह करके पुस्तक-रूपमें छपवाना चाहते थे और अिसके लिअे बापूजीने सम्मति दी है अैसा मुझे बताया था। अिसलिअे अिस सम्बन्धमें मैंने बापूजीको पूछा था। अुसीके अुत्तरमें यह जवाब है।

महावीरसे मिल आना।
मेरी दृष्टिसे तुझे दवाकी जरूरत नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

७७

यरवडा मंदिर,
२४-१-'३२

चि० कुसुम (बडी),

तुझे बम्बअीमें देखा तो जरूर, मगर कुछ पूछ ही नहीं सका। अब अपना सारे महीनोंका हिसाब भेजना। तेरा स्वास्थ्य देखनेमें तो ठीक लगा।

बापूके आशीर्वाद

७८

यरवडा मंदिर,
२६-२-'३२

चि० कुसुम (बडी),

तेरा पत्र बहुत प्रतीक्षा करानेके बाद आया। छोटुभाअीसे कहना कि हम दोनों अुन्हें अकसर याद करते हैं। प्यारेलालके कोअी

१ अुस समय साबरमती आश्रममें रहते थे। अुनके पिता दलबहादुर गिरि नेपाल-स्थित 'सिकिम' के निवासी थे। सरकारी नौकरीमें अच्छे पद पर थे। पू० बापूजीके असरमें आ जानेके कारण कांग्रेसमें शरीक हो गअे। जेलयात्रा की। वहां बहुत बीमार हो गअे तो सरकारने छोड़ दिया। मृत्युके समय अुनकी अिच्छा थी कि अुनका कुटुम्ब साबरमती आश्रममें पू० बापूजीकी छायामें रहे। अिस प्रकार वह सारा परिवार वहां रहता था। भाअी महावीर अुस समय विद्यार्थी-अवस्थामें थे। आजकल बम्बअीमें विलेपार्लेमें रहते हैं।

२. पुराणी।

समाचार मिलते हैं? [illegible] तबीयत कैसी रहती है? डॉ॰ सुमन्त कहां है? कैसे रहते हैं? मैं ठीक हूं।

बापूके आशीर्वाद

७९

यरवडा मंदिर,
३-३-'३२

चि॰ कुसुम (बड़ी),

तेरा कार्ड और पत्र मिले। जैसे बच्चे लिखते हैं वैसे ही तू लिखती है कि कुछ लिखना नहीं है। यह ठीक नहीं है। तू अपने अनुभव लिखे तो भी पन्ने भर जायं। सोच कर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

८०

यरवडा मंदिर,
५-३-'३२

चि॰ कुसुम,

तू भी खूब है। अेक कार्ड और अेक पत्र भेजा, पर अुनमें कुछ भी लिख नहीं सकी। जिन सब महीनोंमें तूने क्या पढ़ा, क्या विचार किया, कितना काता, शरीर कैसा रखा, कहां कहां घूमी?—वगैरा चाहे तो बहुत कुछ लिख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

८१

यरवडा मंदिर,
२१-३-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। प्यारेलाल और गुलजारीलाल[1] की तबीयत अच्छी रहती है। मिलनेकी अिजाजत मिले तो दोनोंसे और दूसरोंसे मिल आना। तेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है, अैसा कहा जा सकता है?

बापूके आशीर्वाद

८२

यरवडा मंदिर,
२४-३-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तूने स्पष्टीकरणमें ही कागज काफी भर दिया, परन्तु यह तो अेक ही बार हो सकता है। तू जब चाहे आ सकती है।

हम तीनों[3] मजेमें हैं।

जानकीबहन[4] अब ठीक हैं।

बापूके आशीर्वाद

---

१. श्री गुलजारीलाल नन्दा। भारत-सरकारके योजना-मंत्री।

२. धूलिया जेलमें।

३ बापू, महादेव देसाओ और वल्लभभाओ। अुस समय यरवडा जेलमें तीनों साथ थे।

४. स्व० श्री जमनालाल बजाजकी पत्नी।

८३

यरवडा मंदिर,
३१-३-'३२

चि० कुसुम (वड़ी),

तूने प्रतिज्ञा ली है तो लिखती तो रहना ही। तुझे पच्चीसवां वर्ष लगा है तो क्या हुआ? तेरे सामने अभी वहुत लम्वी जिन्दगी पड़ी है। अुसमें तेरे वारेमें मेरे जैसोंने जो आशाअें वांधी हों अुन्हें सफल करना। प्यारेलालसे मिलने अवश्य जाना। अपनी तवीयत मैं खुद अिस वार अच्छी मानता हूं। अभी तक दूधके विना वजन टिका हुआ है। और पिचकारीकी जरूरत नहीं पड़ती, अिससे मुझे सन्तोष है। दायें हाथसे नहीं लिखा जा सकता, अिसका मुझे दुःख नहीं। वायें हाथकी आदत पड़ जायगी। हम तीनों मजेमें हैं।

वापूके आशीर्वाद

८४

यरवडा मंदिर,
८-४-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरे पत्र मिलते रहते हैं। प्यारेलालका पत्र मिला था। मैंने जवाव भी दिया था। अब संस्कृत अुच्चारण पक्के कर लेना और व्याकरण भी सीख लेना। तकलीकी वात तो है ही। कब्ज रहता है? तेरा शरीर सुधरना चाहिये। 'सरस्वतीचन्द्र' का पहला भाग मुझे वहुत पसन्द आया था। परन्तु चारों ही भाग पढ़ डालने चाहिये। 'काव्य-दोहन' के चार भाग हैं। वे पढ़ लिये जायं। 'करण घेलो' और 'वनराज चावडो' तथा नर्मदाशंकर और मणिलाल नभुभाओके कुछ लेख पढ़ जाने चाहिये। अितना पढ़ लेनेसे गुजराती भाषाका स्वरूप हाथ लग जायगा। ये पुस्तकें अिकट्ठी करके तू ही शायद पहुंचा सकती है।

रोलेंजकी साअिकलके आनेका मुझे तो पता ही नही था। किंग्स्ले हॉल[1] लिखूंगा। रोला[2]की पुस्तकें मिल गअी हैं। पढ़ लूंगा। तारादेवी[3] यही हैं। अुनका मेरे नाम पत्र भी आया है। वे और दूसरी बहनें आनन्द करती हैं। तारादेवीने रामायण मांगी है सो भेजूंगा। सुशीलाके दो पत्र आये थे। वह पत्र लिखनेका साहस करे तो प्यारेलालकी बहन कैसे कहलाये? लंकाशायरवाली पुस्तक (छगनलाल) जोशीके पास गअी है। वापस आने पर पढ़ूंगा और राय दूंगा। अिस बार पुस्तकोंका ढेर अिकट्ठा नही किया। पुस्तकें आती तो रहती ही हैं। अुनमें से भेजने लायक हाथमें नही आअी। रस्किन[4]के 'फोर्स क्लेवीगरा' आये हैं। वे चाहिये तो भेजूं। प्यारेलालको शायद ही अिनमें नअी बात मिले। मेरे पास म्युरिअल[5] और अेगथा[6] तथा हॉरेस[7]के पत्र आते हैं। मेरा वजन जितना था अुतना ही अर्थात् १०६ पौंड बना हुआ है। खानेमें पिसे हुअे बादाम, खजूर, सिकी हुअी रोटी, नीबू और कोअी अुबला हुआ साग अेक बार – ये चीजें होती हैं। अभी तो दूधके बिना काम चल रहा है। अिस बार कब्ज बिलकुल नही है। नींद बढ़ी है।

---

१. १९३१ में पू० बापूजी गोलमेज परिषदके लिअे अिंग्लैण्ड गये, अुस समय अुनका निवास वहां था।

२. रोमां रोलां। फ्रांसके सुप्रसिद्ध शान्तिवादी और महान लेखक।

३. श्री प्यारेलालजीकी मां।

४. प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक। अुनकी 'अण्टु दिस लास्ट' (सर्वोदय) नामक पुस्तक पढ़कर गांधीजीके जीवनमें परिवर्तन हुआ था।

५ म्युरिअल लेस्टर। क्वेकर सम्प्रदायकी शांतिवादी अंग्रेज महिला। अमीर घरकी होते हुअे भी अुन्होंने विलायतमें मजदूरोंके मुहल्लेमें किंग्सले हॉलकी स्थापना की थी। पू० बापूजी गोलमेज परिषदमें गअे थे तब वहां ठहरे थे।

६. अेगथा हैरिसन। क्वेकर सम्प्रदायकी शांतिवादी अंग्रेज महिला। अुनका हालमें ही देहान्त हुआ है।

७ हॉरेस अेलेक्जैण्डर। शांति चाहनेवाले अेक अंग्रेज।

हाथकी खराबी अभी तक है, यह मैं देख रहा हूं। लेकिन अभी तक अुसका कोअी दर्द नहीं अनुभव करता। पढ़ना थोड़ा होता है। अभी रस्किनका 'फोर्स' चल रहा है। लिखनेमें गीताका जो हिस्सा वाकी था वह पूरा हो गया। अब आश्रमका अितिहास[१] हाथमें लिया है। महादेवको लिखवाता हूं। आश्रमके पत्र काफी समय लेते हैं। वायें हाथसे लिखता हूं अिसलिअे अधिक कातनेमें डेढ़ दो घंटे तक जाते होंगे। हाथके कारण अधिक जान-बूझकर नहीं कातता। दो दिनमें ३७५ तार पूरे करनेका आग्रह रखा है। अभी पींजा नहीं। मीराकी दी हुअी पूनियां चल रही हैं। महादेवने पींजना शुरू किया है।

हरिलाल[२]के वारेमें मैं पूछनेवाला था; अितनेमें तूने ही पूछनेकी हिम्मत कर ली। जहां तूने क्या किया यह मुझे पूछना था, वहां तू ही मेरे गले पड़ रही है। मेरी शर्त वनी हुअी है। तू क्यों नहीं लिख सकती? तू चाहे जैसा लिख, सुधारना और पास करना तो मुझे है न? संकोच छोड़ कर लिखना है। तू प्रयत्न ही नहीं करती, अिसमें अेक प्रकारका आलस्य होगा। अैसा हो तो अुसे निकाल दे। तू अितना करे तो प्रस्तावना लिखना मैंने मंजूर किया है सो लिखूंगा। अभी प्रकाशित तो नहीं हो सकती, मगर अेक वार लिख ली जाय तो वहुत अच्छा। वाहर निकलनेके वाद हो सकता है लिखना न हो सके। मेरा आग्रह सकारण है, यह तो तू समझती है न? तेरे लेखके विना पत्र सुशोभित ही नहीं होंगे। प्रकाशित नहीं किये जा सकते।

वापूके आशीर्वाद

---

१. यह अितिहास अन्तमें अधूरा ही रह गया और अुसी रूपमें पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है। नाम है 'सत्याग्रह आश्रमका अितिहास'— नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद – १४; कीमत १.२५; डाकखर्च ०.३१।

२. मेरे पतिके पत्र-साहित्यके संग्रहमें प्रस्तावनासे पहले अुनका जीवन-वृतान्त रखना था। अुस सम्बन्धमें अुल्लेख है।

८५

यरवडा मंदिर,
२३–४–'३२

चि॰ कुसुम (बड़ी),

तू आत्मविश्वास रखेगी तो मेरे जैसेकी आशा फलेगी। गंगाबहन (वैद्य) की पक्की और गोलीके बारेमें आश्रमको लिखा होगा।

बापूके आशीर्वाद

८६

यरवडा मंदिर,
८–५–'३२

चि॰ कुसुम (बड़ी),

अब तुझे पत्र लिखे जाय या नहीं यह सवाल है। परन्तु तेरा कार्ड आया है जिसलिये अितना लिख रहा हूं। जवाबकी प्रतीक्षा किये बिना धूलिया[1] हो आये तो अच्छा। परन्तु तेरे पास समय है या नहीं यह तू जाने।

बापू

लेखमें[2] पूरी सावधानी रखना। वेगार न टालना।

८७

यरवडा मंदिर,
१६–५–'३२

चि॰ कुसुम (बड़ी),

पत्र बहुत अधूरा है। फुरसतमें मैं सवाल तैयार कर दूंगा। अुनके जवाब देगी तो मैं भरसक कोशिश करूंगा। यह हो जानेके बाद पत्र

१. श्री प्यारेलालजी तथा श्री गुलजारीलाल नन्दा वगैरासे मिलने।

२. जीवन-वृत्तान्त संबंधी लेख।

८८

यरवडा मंदिर,
२२-५-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

प्यारेलालके सवालका जवाब मैंने दिया था वह तूने अुसे पहुंचा दिया था? प्यारेलालको मेरी तरफसे कुछ मिला है अैसा नहीं दीखता।

तेरे नाम लिखे पत्र[1] छपाने हों चाहिये।

बापू

८९

यरवडा मंदिर,
३०-५-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तू ठीक मिल आअी। प्यारेलाल मेरे अुत्तरके लिअे अधीर हो गया था। मैंने यहांसे अेक 'कार्ड सीधा लिखा है। महादेव अब बादमें लिखेगा। तेरी प्रवृत्ति अब कैसी रहेगी यह बताना। प्यारेलालको

---

१. मेरे पतिके।

पत्र लिखनेवाली हो तो बता देना कि रामकृष्ण और विवेकानन्दकी पुस्तकें अभी पढ़ी जा रही हैं। पढ़ लेने पर रामेश्वरदास[1]को भेज दूंगा।

बापू

९०

यरवडा मंदिर,
१८-६-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरे दोनों पत्र मिल गये। मीराबहनका[2] प्रतिबन्ध न हटे तब तक आना नहीं हो सकता। त्यागकी कीमत अिसीमें है न?

तेरे नाम लिखे गये हरिलालके पत्र न छापायें जाय तो हरिलालके साथ न्याय नहीं होगा। तू अुनके आदर्शको न पहुंची हो तो अिसमें अुनका क्या दोष? अब पहुंच। तेरी अपूर्णता छिपानेके लिअे अुन पत्रोंको रोका नहीं जा सकता। परन्तु अैसी निराश और ढीली तू हो ही क्यों? तू अपने मनमें बहुत बड़ी बन गयी हो, अैसा तो नहीं है न? २४-२५ वर्षकी अुमरमें आशा कैसे छोड़ी जा सकती है? तेरे आगे बढ़नेका यही सच्चा समय है। खबरदार!!!

बापू

१. अुस समय धूलियामें रहनेवाले मारवाड़ी गृहस्थ। स्व० श्री जमनालालजी द्वारा बापूजीके संसर्गमें आये थे।

२. पू० बापू जेलमें थे अुस समय ब्रिटिश सरकारने श्री मीराबहनको पू० बापूसे मिलनेकी मंजूरी नहीं दी थी। बापूजीने तब किया था कि जब तक मीराबहनसे मिलनेकी अिजाजत न मिले तब तक और किसीसे न मिला जाय।

९३

यरवडा मंदिर,
२४-३-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। तू लिखती है कि प्यारेलाल वगैरा अच्छे हैं, जब कि दूसरा कोअी पत्र आया है अुसमें खबर है कि प्यारेलालका शरीर अेकदम 'कमजोर हो गया है। यह किसके पत्रमें था, मैं भूल गया हूं। तू फिर मिल आये तो अच्छा। प्यारेलालका मेरे नाम तो कोअी पत्र नहीं है। मैंने अुसे लिखा है, परन्तु मेरे पत्रोंका अभी कोअी ठिकाना नहीं है। तेरी किसी तरहकी पढ़ाअी हो रही है? तू अंग्रेजी सीख रही थी अुसका क्या हुआ?

बापू

९४

यरवडा मंदिर,
३१-३-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तू अपने वचनके अक्षरोंका अच्छा पालन कर रही है, परन्तु सच्चा वचन-पालन तो तब होगा जब अुसके भावका भी पालन किया जाय। मुझे यह सीख देनेका अधिकार नहीं, क्योंकि दूधके बारेमें मैंने अपनी प्रतिज्ञाके अक्षरका पालन करके ही सन्तोष मान लिया। भाव तो यही था कि गाय-भैंसका नहीं तो किसी भी जानवरका दूध न लूं। जीनेकी अिच्छाने अिस भावको तोड़ा। अैसे अधकचरे आदमीसे सीख ले सके तो ले। मैंने तो तुझे वचन-मुक्त कर ही दिया है। जब लिखनेकी सूझे तब लिखना। प्यारेलालके बारेमें तूने पता लगाया होगा। हरिलालके पत्रोंकी प्रतीक्षा करना, यह लिख चुका हूं।

बापू

९५

यरवडा मंदिर,
३१-८-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। अिस पत्रमें तूने मेरे सवालका अुत्तर देनेका प्रयत्न किया था अुसीके अुत्तरके पत्रमें मैंने लिखा था कि तूने पत्र [illegible] हूं। [illegible] है मैं। अुन्हें [illegible] अच्छा समझता हूं। मेरे [illegible] मेरा काम कठिन बना दिया है। जब तक [illegible] अिस सम्बन्धका स्पष्टीकरण न कर दिया जाय तब तक पत्रोंका मूल्य नहीं होगा। यह स्पष्टी-करण मेरी लिखी [illegible] और [illegible] तथा अुन सबके अनेक पत्रोंमें जो मिल जाय अुस [illegible] ही हो सकता है। मैंने जितना सोचा था अुससे यह ज्यादा बड़ा काम हो जायगा। फिर भी निपटानेकी कोशिश करूंगा। मनोवृत्ति आजकल अैसे कामोंमें नहीं है। यह मेरे मार्गमें अेक विघ्न जरूर है। अन्तमें तो अीश्वर जो चाहेगा वही वह करने देगा।

बापू

९६

यरवडा मंदिर,
३१-८-'३२

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिल गया। कौनसे पत्र — अिस सम्बन्धमें मेरा पत्र अब तुझे मिला होगा । तेरी अस्थिरता मैं यहां बैठे बैठे देख सकता हूं। परन्तु अिस अस्थिरतामें से किसी दिन स्थिरता जरूर आयेगी। मैं अपना विश्वास खो नहीं सकता।

सुरयोदवहन'को कभी कभी लिखती है? हम तीनों मजेमें हैं। सरदारका संस्कृतका अध्ययन तेजीसे चल रहा है, यह सब तो तू जानती ही होगी।

बापू

९७

यरवडा मंदिर,
१८-९-'३२

चि० कुमुम (बड़ी),

तेरे पत्र आजकल बिलकुल बन्द हैं। अनशनमें तू घबराती नहीं होगी। मैं चला जाऊँ तो मेरी आशाअें सफल करना। अिनका अुत्तर निश्चयपूर्वक दिया जा सके तो जल्दी देना।

बापू

९८

यरवडा मंदिर,
२१-३-'३३,

चि० कुमुम (देसाअी),

तू अब तो छूट गअी होगी।[2] फिर भी तेरा पत्र नहीं है। यह क्यों? कोअी व्रत लेकर बाहर निकली है क्या?

बापूके आशीर्वाद

---

१. स्व० श्री दादाभाअी नौरोजीकी पौत्री।

२. मैं बोरसदमें गिरफ्तार होकर साबरमती जेलमें रखी गअी थी। वहांसे छूटनेके बारेमें अुल्लेख है।

९९

राजमहेन्द्री,
२६–१२–'३३

चि० कुसुम,

तेरे पत्रका तारसे अुत्तर दे चुका हूं। तू बहुत देरसे चेती। तूने पत्र लिखना छोड़ दिया। मैं तो रोज प्रतीक्षा करता था, परन्तु तू क्यों लिखने लगी? तेरा पत्र आया तब मेरे पास बहुत काम था। बहनोंमें तीन हैं। मीरा, किशन, ओम्। सब मिलकर हम नौ हैं। तू क्या करती है? समय कैसे बिताती है? प्यारेलाल लिखता है? वह कैसा है? 'हरिजनबन्धु' पढ़ती है? मेरा शरीर ठीक रहता है। सफर बरदाश्त करता है।

बापूके आशीर्वाद

१००

(अुदामापेट),
७–२–'३४

चि० कुसुम,

तेरे किसी सम्बन्धी — भाअी?[१] — के जंगबारमें गुजर जानेकी बात वल्लभभाअी लिखते हैं। यह कौन हो सकता है? ब्यौरा भेजना और दूसरा जो भी मेरे जानने लायक हो सो बताना। छूटी हुअी बहनोंसे न मिली हो तो मिलनेका प्रयत्न करना। 'हरिजनबन्धु' पढ़ती है न? मेरे बारेमें सब कुछ अुससे जाना जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

---

१. मेरा छोटा भाअी हरिश्चन्द्र पूर्वी अफ्रीकामें काले बुखारसे गुजर गया था। अुसका अुल्लेख है।

१०१

पंचगनी,
२८–३–'४४

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। मैं सेवाग्राम तीन तारीखको पहुंचनेकी आशा रखता हूं ? बम्बअी नहीं जाअूंगा। कल्याणसे गाड़ी पकड़ूंगा। अुस गाड़ीमें तू आ सकती है। अुसमें आये तो शान्तिकुमारसे मिल लेना। मुझे लाभ तो हुआ ही है।

बापूके आशीर्वाद

१०२

नअी दिल्ली,
९–१–'४६

. . . कुसुम,

जडावबहनके स्वर्गवासकी खबर मणिबहन[1]ने दी। मैंने कहा कि जब तक कुसुमका पत्र नहीं आयेगा तब तक मैं कुछ नहीं लिखूंगा। मुझे शोक नहीं प्रकट करना है। तुझे मैंने ज्ञानवान माना था। क्या अब ज्ञानहीन समझूं ? जडावबहनने तो बहुत सुख देखा। तुम दोनों बहनोंने अुनकी खूब सेवाकी। और तुझे मुझे सबको जाना तो है ही। तुझे तो मुझसे अुत्साह मांगना चाहिये था, सेवानिष्ठा मांगनी चाहिये थी। तेरे कहने परसे मैं यही समझता था कि जडावबहन तुमसे अिन्हीं गुणोंकी अभिलाषा करती थीं।

* * *

---

१ स्व० सरदार वल्लभभाअीकी पुत्री।

२. मेरी छोटी वहन।

३. वड़ौदेमें सब अुन्हें कलकत्तावाले कहते हैं। बम्बअीमें मैरीट ऑअिल अेण्ड ट्रे० कंपनीके नामसे व्यापार करते हैं।

बापूके पत्र — ३

कुसुमबहन देसाईके नाम

कस्तूरबाके पत्र

['३० से ११-३-'४०]

१

मरोली

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला है। मीठुबहनको तेरा पत्र दे दिया है। मैंने तुझे पोस्टकार्ड लिखा है। गुरुवारको लिखा है। प्यारेलालसे मिलने जब जाना हो तब आ जाना। मैं यहां हूं। प्यारेलालके भाओ अुससे मिलने आयेंगे या नहीं? त्रिवेदी[1]ने मुझे यह कहलवाया था कि अुनके भाओके साथ आप आयेंगे, अिसलिअे अेक मुलाकात ली जा सकेगी। मेरी तबीयतकी बात तू यहां आयेगी तब करेंगे। पहले मिलने जायं, पीछे यहां आनेकी बात।

बाके आशीर्वाद

चि० कुसुम, मीठुबहन लिखाती हैं कि तुम्हें यरवडा जाना है, अिसलिअे यहां आकर बाके साथ हो आओ। फिर शान्ताके बारेमें जो लिखा था वह आनेके बाद ले जाना। अिति।[2]

२

बम्बजी,
१६–८–'३०

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। तेरी तबीयत अब अच्छी होगी। चि० सुशीला[3] गुजरातसे[4] तेरे पास आ गओ यह अच्छा किया।

१. पूनावाले प्रोफेसर जे० पी० त्रिवेदी।
२. यह पत्र १९३० का होना चाहिये।
३. श्री प्यारेलालकी बहन।
४. पंजाबका गुजरात विभाग।

अच्छी नहीं है। दिनमें चार बार फिट आते हैं। मैंने तो अेक भी पत्र नहीं लिखा। परन्तु तू लिखे तो अच्छा होगा।

बापूजीकी तबीयत अच्छी है। यहां सूरजबहन[1] आअी हैं। अुनका स्वास्थ्य साधारणतः कमजोर है। अपने कामके लिअे आअी हैं। बापूजी २४ तारीखको रातकी गाडीसे बम्बअी जानेवाले हैं। तेरी तदुरस्ती अच्छी होगी। वसुमतीबहन[2] अपनी दादीसे मिलने गअी हैं। बड़ी गंगाबहन आश्रममें गअी हैं। सुरेन्द्रजी आश्रममें गये हैं। गंगाबहन झवेरी विद्यापीठमें पढने गअी हैं। नानीबहन[3] तो जल्दी चली गअी थीं। हम बम्बअीसे यहां आयेंगे या बारडोली जायेंगे, कुछ निश्चय नहीं। यहां सब मजेमें हैं। वहांके हाल लिखना। (डॉ०) चन्दुभाअीसे कहना कि जो याद करते हों अुन्हें मेरा आशीर्वाद। तू यहां अब कब आयेगी? अब तुम्हारा क्या काम चल रहा है? पिकेटिंग तो बन्द है न?

बाके आशीर्वाद

४

बोरसद,
२८–७–'३१

चि० कुसुम,

आज सुबह यहां आये हैं। चि० देवदास पेशावर गया है। हमारे साथ आनन्दी[4] आअी है। मणि[5] भी आअी है। यहां अब दो या तीन दिन ठहरना होगा अैसा लगता है। मालूम होता है पहली

१ श्री करसनदास चितलियाके मारफत बापूजीके परिचयमें आअी हुअी बहन।

२. स्व० साक्षर श्री नवलराम पंड्याकी पुत्रवधू। अुस समय बापूजीके साथ आश्रममें रहती थी।

३ श्री पन्नालाल झवेरीकी पत्नी। अब स्वर्गवासी।

४–५. श्री लक्ष्मीदास आसरकी लड़कियां।

मावलिनको आश्रममें रखो। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। तू तो आती ही नहीं। तुम्हें अच्छा लगे तो अहमदाबाद आओ, चाहे बम्बई आओ। डाह्याभाई[1]को मेरे आशीर्वाद। अभी तक अुनके दांतोंका अिलाज चल रहा है, अैसा मीठुबहन मुझे कह रही थीं। आजकल बापूजीका वजन घट गया है। पहले आमका रस नहीं लेते थे। अब लेने लगे हैं। आज-कलका अुनका पता: [illegible], मारफत बाबू ब्रजनारायण सहाय, [illegible]/२७ [illegible], पटना।

चि० प्यारेलालजी कहते हैं कि तुम अहमदाबाद आओगी।

बापूके आशीर्वाद

५

यहांका पता : बिरला मिल्स

दिल्ली,
ता० ———[1]
जुलाओ, रविवार

बहन कुसुम,

बड़ौदा स्टेशन पर तू और मणिभाओ[2] दोनों आये थे। थोड़े दिनोंमें बहुत प्रेम हो गया था। वहांसे मैं सूरतके स्टेशन पर पहुंची। स्टेशन पर कल्याणजीभाओ[3] लेने आये थे। बादमें मैं सूरतमें शाम तक रुकी और ६ बजे मरोली जानेको निकली। मरोलीमें तीन दिन रही। मीठुबहन[5] बीमार थीं अिसलिअे वे मरोलीमें नहीं थीं। वहां तीन

---

१. श्री रावजीभाओ नाथाभाओ पटेलकी पत्नी।

२. अिस पोस्टकार्ड पर पोस्टकी जो मुहर लगी है, अुस पर ता० १०–७–'३५ पढ़ी जाती है।

३. श्री कलकत्तावाला।

४. सूरत जिलेके अेक प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता।

५. मीठुबहन पीटीट। मरोली आश्रम — कस्तूरबा सेवाश्रमकी स्थापिका – संचालिका।

दिन रहकर मैं बम्बओी चली गओी। बम्बओीमें तीन दिन रही। भाओी रामदास आनन्दमें है। मैं मणिभुवन[1] में ठहरी थी। लेकिन तेरा पता फट गया था अिसलिअे तुझे लिख नहीं सकी। मुझे लगा कि कुसुम कहेगी कि मैं तो स्टेशन पर आओी और बा मुझे बिलकुल भूल गओीं। तेरे 'मठिये' मैंने ट्रेनमें भी खाये और वहां (मरोलीमें) लड़कियोंने भी प्रेमसे खाये। तेरा पता फट गया था, अिसलिअे देरसे पत्र लिख रही हूं। वसुमतीसे पता मंगवा कर तुझे पत्र लिख रही हूं। . . . बहुत थोड़े दिनोंमें अलग रसोओी बनायेंगी। मालूम होता है तू अभी तक बोचासण नहीं गओी है।

बम्बओीसे मैं वर्धा गओी। वर्धामें अिस बार तीन ही दिन रही। बीचमें अेक रात बापूजीके पेटमें दर्द खड़ा हुआ था। अुसका कारण यह था कि नीम और अिमली अधिक मात्रामें खानेमें आ गये थे। अिससे जरा पेटमें दर्द अुठ आया था। अब आराम है। वहांसे अभी दिल्ली आओी हूं। देवदास लिखवाता है कि तुम कोओी दिल्ली क्यों नहीं आते। मणिभाओी[2] को तथा अुनकी पत्नीको मेरे आशीर्वाद। बालकोंको प्यार-दुलार।

बाके आशीर्वाद

६

वर्धा,

ता० २६-१०-'३५, शनिवार

चि० कुसुम,

मैंने दिल्लीसे अेक पत्र तुझे लिखा था। मैं मानती हूं कि अुसके बाद तेरा कोओी पत्र नहीं आया। देवदासका सिर दुखता था, अिस-लिअे अुसके साथ मैं शिमला गओी थी। वहां १५ दिन रहकर मैं

१. जहां पू० बापूजी सामान्यतः ठहरते थे। आजकल वहां प्रत्येक गुरुवारको प्रार्थना होती है।

२. श्री कलकत्तावाला।

७

सेगाव,
२७-७-'३७

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। मैंने सोचा तो था कि तेरा पत्र अभी तक क्यों नही आया। लेकिन नीमु[1] के पास हो आनेके बाद तूने पत्र लिखा यह अच्छा ही किया।

चि० कनु[2] स्टेशन छोडने आया यह ठीक हुआ। मुझे लगता था कि कोअी आयेगा। वहा मणिभाअी[3] लेने आये होंगे। तेरे जानेके बाद शान्ता आज ही यहा आकर वापिस मगनवाड़ी गअी। वह अब विलायत जानेवाली नही है। अमृतकुमारीवहन[4] कल आ गअी। तेरे जानेके बाद बारिश खूब हो रही है। आज कुछ खुली है।

मि० कैलनबैंक[5] का रास्तेसे पत्र आया था। समुद्रमें तूफानके कारण अुन्हें चक्कर आते थे। लेकिन रामदासको चक्कर न आनेसे वह अुनकी सभाल रखता था। यह तो सहज ही लिख दिया।

पिछले रविवार चि० रामीवहन[6] ने पुत्रीको जन्म दिया, अैसा मनु[7] का पत्र था। आजकल बापूजीने सवेरे घूमना बन्द कर दिया है। तीन बार जुलाब लेनेके बाद अब अुनकी तबीयत ठीक है। वल्लभभाअी सुबह यहा आये थे। शकरलालभाअी दो तीन दिनसे आये

---

१ श्री रामदास गाधीकी पत्नी।
२. श्री नारणदास गाधीके पुत्र।
३. श्री कलकत्तावाला।
४. राजकुमारी अमृतकौर। भारत-सरकारकी निवृत्त स्वास्थ्यमत्री।
५. पू० बापूजीके अफ्रीकाके मित्र।
६. श्री हरिलाल गाधीकी पुत्री।
७ श्री हरिलाल गाधीकी दूसरी पुत्री।

बापूजीकी तबीयत वैसी ही है। रक्तचाप कम नहीं हो रहा है। डॉक्टर बार-बार देखते हैं। डॉ० जीवराज[1], डॉ० गिल्डर[2] वगैराने बापूजीकी जांच की थी। धीरे धीरे अच्छा हो जायगे। बापूजी काफी आराम लेते हैं। तबीयत अच्छी होनेमें कुछ दिन लगेंगे। मणिभाअी[3] सुशीलाबहन[4] तथा बालकोंको आशीर्वाद। दो चार दिनमें वसुमतीबहन आनेवाली हैं।

चि० कांता मजेमें है।

बाके आशीर्वाद

पू० बापूजीकी तबीयत अच्छी हो रही है। जरूर आना। तुम्हारी माको मेरे जयश्रीकृष्ण कहना।

९

जानकी-कुटीर,
जुहू,
१८–१२–'३७

चि० कुसुम,

तेरा पत्र सेगावमें मिला था। तुझे अखबारोंसे पता लग गया होगा कि हम ७–१२–'३७ को यहां आये हैं। यहां जमनालालजी अच्छी तरह पहरा रखते हैं। किसीको (बापूसे) मिलने नहीं देते। बापूजी घूमने जाते हैं तब लोग और सम्बन्धीजन दर्शन कर जाते हैं। बातें तो हरगिज नहीं कर सकते। बापूजीकी तबीयत सुधरती जा रही थी, परन्तु दो अेक दिनसे फिर रक्तचाप कुछ बढ़ गया है। अच्छे हो

१. आजकल बम्बअी राज्यके वित्तमंत्री। पू० बापूजीका स्वास्थ्य बिगड़ता तब वे अुन्हें देखते थे।

२. बम्बअीके सुप्रसिद्ध डॉक्टर। पू० बापूजीको ये भी देखते थे।

३. कलकत्तावाला।

४. अुनकी पत्नी।

१०

सेगांव,
१९-३-'३८

चि० कुसुम,

हम दो [illegible] अलग हो गये। तू अकेली गओी थी न?

बापूजीकी तबीयत अच्छी है। कांग्रेस जानेके बाद ही खांसी गओी!! बापूजी कल कलकत्ते जा रहे हैं। मैं नहीं जाअूंगी। मैं गांधी-सेवासंघके लिये अुड़ीसा जानेवाली हूं।

मोहनभाओीने[2] लिखा? अुनका स्वास्थ्य अच्छा होगा। अुनकी बहिनकी तबीयत भी अच्छी होगी। मोहनभाओीकी पत्नीका नाम मैं भूल गओी हूं। लिखना। अुन्हें मेरा आशीर्वाद।

वसुमतीबहन यहां हैं। अेक दो दिन बाद थोड़े दिनके लिये नाल-वाड़ी जायंगी। फिर कहां जायंगी यह पता नहीं। बापूजीके साथ महादेव, प्यारेलाल, डॉ० सुशीला और कनु जायंगे। विजया[1] कांग्रेससे आनेके बाद बीमार हो गओी है। कुशल-समाचार लिखना।

बाके आशीर्वाद

---

१. श्री कनु गांधी तथा श्री रामदास गांधीका पुत्र।

२. मो० ह० की पेढ़ीवाले।

३. सूरत जिलेकी बहन। पू० बा जेलमें थीं तब साबरमतीमें वे भी थीं। अुसके बाद थोड़े समय सेगांव रही थीं।

११

सेगाव,
३–५–'३८

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। पू० बापूजी तो रविवारकी रातको पेशावर पहुंच गये। ९ तारीखको वहांसे चल कर ११ तारीखको बम्बजी आयेंगे। १२ तारीखसे तो बम्बजीमें सभाजें होंगी। अिसलिअे बापूजी थोड़े दिन वहीं रहेंगे। फिर तो शायद बम्बजीमें ही रहेंगे या कहीं अन्यत्र समुद्रके किनारे भी जाय। मैं कल सुबह जयपुर जा रही हूं। वहांसे थोड़े दिन दिल्ली रहकर देहरादून नीमु[1]से मिलने जाअूंगी। अिस प्रकार लगभग अेक महीना हो जायगा, अिसलिअे अिस बार मीठुबहन[2]के पास नहीं जा सकती। यहां भी गरमी तो सख्त पड़ती है।

'हरिजन' में तो तूने सब पढ़ा होगा। बापूकी तबीयत ठीक है। परन्तु काम करते हैं तो रक्तचाप बढ़ जाता है और फिर आराम लेते हैं तो अुतर जाता है। चि० कान्ति[3] यहीं है। सरस्वती[4] भी आजी है। दोनों मेरे साथ आ रहे हैं। यहां सब मजेमें हैं। विजया अपने गांव गअी है। वह थोड़े दिनोंमें वापस आ जायगी। अगर मैं अुस ओर आती तो सब मिल लेते। परन्तु अब तो कौन जाने कब मिलेंगे। बापूके साथ तो महादेव, प्यारेलाल, सुशीला और कनु गये हैं। मोहनभाअीकी तबीयत अच्छी जानकर आनन्द हुआ। अुन्हें तू पत्र लिखे तब मेरे आशीर्वाद लिखना।

बाके आशीर्वाद

---

१. श्री रामदास गांधीकी पत्नी।

२ श्री मीठुबहन पीटीट। अभी मरोलीमें कस्तूरबा आश्रम चलाती हैं।

३. श्री हरिलाल गांधीके पुत्र।

४. श्री हरिलाल गांधीके पुत्र कान्तिभाअीकी पत्नी।

गये थे। अब दो दिनसे अच्छे हैं। भाओी नानावटी[1] काकासाहब बीमार थे अिसलिअे अुनके पास गये थे। परसों आ गये हैं और यहीं रहेंगे। और सब मजेमें हैं। नीमुका पत्र आता है। अुसकी तबीयत अच्छी नहीं रहती। अब तुम पत्र लिखो तो दिल्लीके पते पर लिखना। मारफत देवदास गांधी, हरिजन बस्ती, किंग्सवे, दिल्ली।

बाके आशीर्वाद

१३

हरिजन बस्ती,
दिल्ली,
४–१०–'३८

चि॰ कुसुम,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। बापूजीकी तबीयत अच्छी है। बापूजी आज पेशावर जा रहे हैं। साथमें प्यारेलाल, डॉ॰ सुशीला, ब्रजकृष्ण,[2] अमतुल और कनु जा रहे हैं। मैं तो यहां देवदासके पास ठहरूंगी।

महादेवभाओीकी तबीयत अच्छी रही। महादेवभाओी और दुर्गाबहन[3] वगैरा भी बापूजीके पेशावरसे लौटने तक दिल्ली शहरमें ही (यहां नहीं) ठहरेंगे।

तेरी तबीयत अच्छी होगी।

शुभेच्छु
बाके आशीर्वाद

---

१. अुस समय काकासाहबका हिन्दी वगैराका काम करते थे।
२. दिल्लीके ब्रजकृष्ण चांदीवाला। थोड़े समयके लिअे बापूके पास साबरमतीमें रहे थे।
३. स्व॰ श्री महादेवभाओीकी पत्नी।

१४

सेगांव,
११-११-'३८

चि० कुसुम,

तेरा बहुत समयसे कोई पत्र नहीं आया। तुझे दीवाली पर लिखनेका विचार किया था, परन्तु अुस समय मेरी तबीयत खराब थी। अिसलिअे नहीं लिख सकी।

बापूजी तो पेशावर गत महीने हो आये।

मणिलाल, सुशीला और बालक कहां हैं? अुन सबकी तबीयत अच्छी होगी।

बापूजीकी तबीयत अच्छी है। काम तो बहुत रहता है।

यह पत्र मिलने पर अुत्तर लिखना। महादेवभाअीका स्वास्थ्य अच्छा है। वे डेढ़ महीने शिमला रह आये। १२ तारीखको महादेव-भाअी यहां आ रहे हैं। तीन चार दिन रहनेके बाद फिर कहीं जलवायु परिवर्तनके लिअे जायंगे।

रामदास अफ्रीकासे आ गया। परन्तु अुसकी तबीयत अभी तक सुधरी नहीं। डेढ़ मासके लिअे पूना आबहवा बदलने गया है। आबहवाके साथ अुपचार भी चलेगा।

बाके आशीर्वाद

१५

सेगांव,
२९-११-'३८

चि० कुसुम,

तेरा पत्र मिला। पढ़कर आनन्द हुआ। मेरा खयाल है कि तेरा पत्र दिल्लीमें आया था। परन्तु मेरी तबीयत अच्छी नहीं थी, अिसलिअे मैंने तुझे पत्र लिखा या नहीं, यह याद नहीं। बापूजी सरहद गये तब मैं दिल्लीमें ही थी। अब मेरी तबीयत अच्छी है। बापूजीकी तबीयत अच्छी है। काम खूब है। लिखनेका काम बहुत रहता है। लोग

बहुत मिलने आते हैं। महादेवभाओीका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही है, शिसलिशे बापूजीको लिखनेका काम बहुत रहता है। काना मजेमें है। नीमुकी पढाओी बहुत कुछ पूरी हो गओी। अब थोडीसी बाकी है। तीनेक महीनेकी पढाओी और है। आजकल वह अपनी माके पास लखनऊमें है। सुशीला अकोलामें है। महादेवभाओी शिमलेसे यहा आये है। दुर्गाबहन शिमलेसे सीधी अहमदाबाद गओी हैं। और वहासे वलसाड अपनी बहनके पास जायगी। महादेवभाओी थोड़े समय यहा रहेंगे। जितना होता है अुतना काम करते हैं। सिर दुखता है तब नही करते। आजकल तो राजकोटमें खूब लडाओी चल रही है। जनवरीकी १२ तारीखको हम बारडोली आयेंगे। तब हम लोग मिलेंगे। मणिलाल भी वहां आयेगा तो मिलेंगे। यहा सब मजेमें हैं। तुम्हारी माको मेरे जय-श्रीकृष्ण कहना।

बाके आशीर्वाद

१६

द्वारा फर्स्ट मेम्बर अिन कौंसिल,
राजकोट,
त्रावा,
१७–२–'३९

चि० कुसुम,

अभी अभी तेरा पत्र आया। अुसमें तू लिखती है कि फतह-मुहम्मद खानने ही वह पत्र लिखा होगा। अुन्होंने तुझे आनेकी अिजाजत दी है। तूने बापूजीको पत्र लिखा है। देखें क्या परिणाम आता है। तेरा प्रेम तो मुझ पर बहुत है। लेकिन तू जानती है न कि मैं नजरबन्द हूं? बगलेमें जरूर रहती हू। लेकिन बगलेके अहातेके बाहर नही जा सकती। भले वे कहे कि मोटरमें घूमने जाया जा सकता है। लेकिन राजकोटके भीतर तो मुझे आने ही नही देंगे। और मुझे अिस तरह घूमने जाना भी नही है।

मेरी तबीयत तो अब ठीक है। दो दिनके लिअे बिगडी थी। लेकिन मैं खाती हू, पीती हू, चलती-फिरती हू। मैं रोगग्रस्त

नहीं पड़ी हूं। और मेरे पास दो लड़कियां हैं, यह तो तू जानती ही है। मणिबहन[1] और मृदुला[2]। स्टेटकी अेक नर्स भी मेरे लिअे रखी गअी है। मैंने तो डॉक्टरसे कह दिया कि नर्सको ले जायं, क्योंकि दवा तो ये लड़कियां भी दे सकती हैं; और मैं खुद अपने हाथसे भी ले सकती हूं। दवा मुझे केवल खांसीकी ही खानी पड़ती है। दूसरी कुछ नहीं।

यहां हमें आंबामें अेक छोटे बंगलेमें रखा गया है। बगीचा है जिसमें हम सुबह-शाम घूमती हैं। दीवानखाना है। दो तीन कमरे हैं। आगे-पीछे तीन तरफ बरामदे भी हैं। किसी तरहकी असुविधा नहीं है।

अुनकी (सरकारकी) अिच्छा हुअी तो अेक बार मणिको ले गये। और वापिस मेरे पास रख भी गये। और अिच्छा होगी तो फिर ले जायंगे। मैंने तो अुनसे कहा था कि मेरे पास कोअी जेलकी बहन रखें, वर्ना मुझे जेलमें ले जायं। ब्रिटिश राज्यकी जेलमें मुझे रखते ही थे न! पर यह सब तो तू जानती ही है। लेकिन यह स्टेटकी जेलमें अुतनी सुविधा नहीं है। वहां मेरी खाने-पीनेकी सुविधा जुटानेमें सरकारको परेशानी हो सकती है। वह तो मुझसे कहती है कि आपको अपने जिन सगे-सम्बन्धियों या प्रियजनोंको बुलाना हो बुलाअिये। लेकिन मैंने ना कह दिया। जिन्हें जेलमें नहीं आना है अुन्हें यहां क्यों बुलाअूं? और सरकार तो फिर अखबारोंमें लम्बे लम्बे स्टेटमेन्ट (वक्तव्य) निकालेगी कि बाके पास यह रहती है और बाके पास हम अुसे रहने देते हैं। मैंने कुछ भी नहीं कहा था, फिर भी कलके 'टाअिम्स' में मेरे बारेमें यह झूठा समाचार छपा है कि मुझे सणोसरा पसन्द नहीं आया। यह समाचार तो तूने देखा ही होगा?

मेरी तबीयत अच्छी है। बापूजीको भी अैसा लिख देना।

वहां मणिलाल, सुशीला और बच्चोंको मेरे आशीर्वाद।

---

१. सरदार पटेलकी पुत्री।

२. अहमदाबादके सेठ अंबालाल साराभाअीकी पुत्री।

ये लोग मुझसे रोज कहते हैं कि आप चली जाअिये। अेक बार तो मुझसे कह दिया कि बापूजी बीमार हैं अिसलिअे आप जाअिये। लेकिन मैंने जांच की। पोस्ट आफिससे वर्धा टेलीफोन करके अिस बातकी पूछताछ की। अिसलिअे फिर वापिस लाये। ये तो अिसी बातके रास्ते खोजते हैं कि मैं कैसे और कब यहांसे जाअू। अिसलिये तू यहां आनेका विचार छोड ही देना।*

बाके आशीर्वाद

---

* नोट — राजकोट सत्याग्रहके समय पू० कस्तूरबा वहां नजरबन्द थीं अुस बीच बीमार हो गअी थीं। अुस समय अुनको सेवा-शुश्रूषाके लिअे मैंने वहां जाने और सेवाके लिअे बाके पास रहनेकी मांग की थी। अुसके जवाबमें राजकोटके ठाकोरसाहबकी ओरसे नीचेका पत्र मिला था:

अमरसिंहजी सेक्रेटरियेट,
राजकोट स्टेट,
१४–२–'३९

श्रीमती कुसुमबहन हरिलाल देसाअी

आपके ता० १२–२–'३९ के पत्रके जवाबमें यह सूचित किया जाता है कि आपने पूज्य कस्तूरबाकी सेवा-शुश्रूषाके लिअे यहां आनेकी जो अिच्छा बताअी है अुसके बारेमें आप कस्तूरबाको लिखें। और अगर वे अैसा करनेके लिअे राजी हो जायंगी तो आपको सेवा-शुश्रूषाके लिअे यहां आने दिया जायगा।

शुभेच्छुक
फतेहमुहम्मद खान

बाके आशीर्वा

द. चिमनला

राजकुमारीबहन[2] सदा बापूके पास रहती है। कभी कभी कहीं
ण वगैरा कोअी खास काम होता है तो बाहर जाती है।

१. सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलाल शाहकी पत्नी
२. राजकुमारी अमृतकौर।

परिशिष्ट

१

बापूजीके दो पत्र

(१)

आश्रम साबरमती,
५–१०–'२८

ाओी शंकरभाओी[1],

आपका पत्र मिला। यह मेरा सन्देश है। चरखा-द्वादशीके दिन ो लोग आयें अुनसे कहना कि अगर हरिभाओीके नामको वे कपड़-ंजमें अमर बनाना चाहते हो तो अुनके कामको अमर बनायें। चाहे जितनी कठिनाअियां आवें तो भी अुनकी आरम्भ की हुओी अेक भी प्रवृत्तिको न तो छोड़ें, और न शिथिल होने दें।

मोहनदासके आशीर्वाद

(२)

आश्रम साबरमती,
१५–८–'२९

भाओी चन्द्रकान्त[2],

चरखा-द्वादशीके दिन भाग लेनेवाले सब लोग पिछले बारह महीनोंमें अपने काते हुअे सूतका हिसाब करें। और यदि यह सूत

---

१. मेरे पति स्व० श्री ह० भा० देसाओीकी स्मारकरूप 'सेवासंघ' संस्थाके आद्य स्थापक। मेरे देवर।

२. कपड़वंजमें सेवासंघके कार्यकर्ता तथा म्युनिसिपैल्टीके भूत-पूर्व अध्यक्ष।

पिछले वर्षके सूतसे कम निकले तो चरखा-द्वादशी मनाना बन्द करनेका प्रस्ताव पास करके यह चरखा-द्वादशी मनायें। अिससे सच्ची प्रभुसेवा होगी; और तुम्हारे मंत्रकी रक्षा होगी, चरखा-द्वादशीकी लाज रह जायगी। यही मेरा सन्देश है।

मोहनदासके आशीर्वाद

२

श्री हरिलाल माणिकलाल देसाअीके जीवनका संक्षिप्त परिचय

समुद्रके अन्तरतम गर्भमें छिपे रत्नकी भांति और वीरान जंगलमें विकसित होकर झड़ जानेवाली कुसुम-कली जैसा हरिभाअीका जीवन, अुनके साहित्य, समाज, राजनीति, संस्कृति अित्यादि अनेक क्षेत्रोंमें बहुमूल्य भाग अदा करने पर भी, प्रशस्तिसे दूर ही रहा है।

हरिभाअीका जन्म कपड़वंजमें सन् १८८१ के सितम्बर माहकी ४ तारीखको हुआ था। अुदारता और समानताके सद्गुण बाल्यावस्थासे ही अुनमें अच्छी तरह विकसित हुअे थे। विद्यार्थी हरिभाअी कम बोलनेवाले थे, परन्तु सत्यप्रिय थे। प्रारंभिक अध्ययन कपड़वंजकी देहाती पाठशालामें पूरा करके सन् १८८९ से १८९४ के बीच हरिभाअीने सूरतके मिशन हाअीस्कूलमें मैट्रिक तककी पढ़ाअी पूरी की। अुसके बाद अहमदाबादके गुजरात कॉलेज, बड़ौदा कॉलेज और बम्बअीके सेंट ज़ेवियर्स कॉलेजमें अध्ययन किया और सन् १९०३ के अक्तूबरमें अितिहास और अर्थशास्त्रके विषयोंके साथ बी० अे० की अुपाधि प्राप्त की।

कॉलेजके अध्ययन-कालमें अुत्तम मित्र जुटाने और जीवन-पर्यन्त अुन्हें मित्र बनाये रखनेकी बात थोड़े ही भाग्यशालियोंके जीवनमें होती है। हरिभाअीको यह अलभ्य लाभ मिला था। स्वतंत्र महत्त्वका स्थान सुशोभित करनेवाले प्रतिष्ठित लोगोंमें से कुछ जीके कॉलेज जीवनसे लेकर अन्त तक अुनके सन्मित्र रहे थे।

बी० बे० होनेके बाद थोड़े समय प्रागजी सूरजीकी पेढ़ीमें काम करनेके बाद हरिभाजी सन् १९०६ में अुमरेठ जुबिली अिन्स्टिटयूटमें हेड मास्टरके रूपमें शुरूमें काम करके दूसरे ही वर्ष बडौदा हाअीस्कूलमें फ्रेंच शिक्षकके रूपमें बड़ौदा राज्यके शिक्षा-विभागकी नौकरीमें लग गये।

हरिभाअीको बड़ौदेके अधिकारियोंने फ्रांस भेजकर फ्रेंचके प्रोफेसर बनानेकी अिच्छा प्रगट की थी। परन्तु श्री गोवर्धनरामके आदर्शके अनुसार ४० वर्षकी अुमरमें निवृत्ति लेकर सेवाकार्यमें ही जीवनकी कृत-कृत्यता अनुभव करनेके निश्चयवाले हरिभाअीने अिस बडे सम्मानको स्वीकार नहीं किया।

फ्रेंच साहित्यके विपुल पठनसे अुसके लाक्षणिक हास्यरसका परिचय हरिभाअीको अितना अधिक हो गया था कि अनेक प्रसंगों पर वे अुसके मीठे मजाकवाले किस्से संबन्धियों, मित्रों और शिष्योंको कभी कभी सुनाया करते थे। अल्पभाषी होने पर भी अुनकी वाणीमें मार्क ट्वेन या अनातोल फ्रांससे मिलता-जुलता सूक्ष्म तथा बारीक बुद्धिसे ग्राह्य विनोद खूब भरा हुआ था।

हरिभाअी प्रेम, नम्रता और समभावकी मूर्ति थे। विद्यार्थियों और मित्रोंको आकर्षित करनेवाला कोअी जादू अगर अुनमें था तो यही था। अत्यंत विनयी तथा सुधारक माने जानेवाले मास्टर हरिभाअी प्राचीन गुरु-शिष्य-सम्बन्धकी प्रणालीको मानते थे। और अिस प्रणालीका पालन करानेके आग्रही भी थे। अिसलिअे श्रीमंत गायकवाड़ परिवारके कुमार भी विशेष ज्ञानोपार्जनके लिअे हरिभाअीके घर जाना पसन्द करते थे। किसी भी मौके पर अुन्हें क्रुद्ध होते नहीं देखा गया। अुनमें केवल मुँहकी मिठास अथवा कृत्रिम विनय ही होता तो वे सैकड़ों हृदयोंको जीत नहीं सकते थे। अिस प्रकार वड़ौदेमें हरिभाअीका शिक्षक-जीवन जैसा आदर्श था वैसा ही अुनका व्यापक जीवन भी आदर्श था। असलमें अुनके जीवनके अिन दोनों पहलुओंमें कोअी खास भेद नहीं था। अुनका घर अिन दोनोंका संगम-स्थान था।

स्त्री-शिक्षाको हरिभाअी मुख्य स्थान देते थे। हम सबको देश-सेवा करनेसे पहले अपनी स्त्रियोंको ही खूब शिक्षा देनी चाहिये।

‘स्त्रियां पीछे रहेंगी तो वे पग पग पर बाधक होंगी’ — अैसा माननेके कारण हरिभाअी कहते थे कि मनुष्य केवल अपना घर ही सुधार कर बैठा रहे तो भी कम नहीं है। अेक घर भी संस्कारी बन जाय तो असके बराबर पवित्र काम दूसरा क्या हो सकता है? हरिभाअीने घरको सुधारने पर खूब शान्त परिश्रम किया। परिणाम-स्वरूप गुजरातको कुसुमबहन मिलीं। श्री कुसुमबहनके साथके जीवनका सौरभ तो अुनके आदर्श गृहस्थ-जीवनका सर्वोत्तम अंग है। हरिभाअीका गृहस्थ-जीवन अनेक प्रकारसे लोकोत्तर था। किसी भी तरह दूसरोंके लिअे अुपयोगी होनेकी भावनाके साथ ‘यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः’ जैसी गीतामें कही गअी भावना अुन्होंने जीवनमें मूर्त की थी।

वंग-भंगके समय देशमें जगे आन्दोलनका असर हरिभाअी पर भी हुआ और वे गोखलेकी भारत-सेवक-समितिमें शरीक होनेके स्वप्न देखने लगे। अेक निश्चित समय तक नौकरी करनेके बाद वेतन लेकर कोअी काम करना ही नहीं, यह भावना तो अुनमें बहुत जल्दी ही पैदा हो गअी थी।

अितनेमें गांधीजी अहमदाबाद आकर बसे। कोचरबमें श्री देसाअी बैरिस्टरके बंगलेमें आश्रम स्थापित किया गया। वहां अच्छे अच्छे लोग चक्की पीसने लगे, बरतन मलने लगे, अितना ही नहीं परन्तु सुबह-शाम प्रार्थनाके समय प्रवचन भी होने लगे। अिस सारे समयमें हरिभाअी प्रत्येक शनिवारको बड़ौदासे अहमदाबाद जाकर आश्रमकी प्रवृत्तिमें अुपस्थित रहते और सच्चे भक्त-हृदयसे सब कुछ देखते थे।

बीच-बीचमें हरिभाअी बड़ौदेसे अपने वतन कपड़वंजमें भी आते जाते और अपने ज्ञान तथा सौजन्यका लाभ स्वजनों और मित्रोंको देते रहते। वे निश्चित रूपमें मानते थे कि पाठशालासे पुस्तकालयका असर अधिक व्यापक है। अिसलिअे अपने वतन कपड़वंजमें सन् १९१८ के नवम्बरमें छोटे पैमाने पर अुन्होंने वाचनालय और पुस्तकालयकी स्थापना की। अिसके बाद तो हरिभाअीने कपड़वंजकी अनेक प्रकारसे सेवाअें कीं।

गांधीजीका मंत्र अपनाकर हरिभाअीने १९१८ में कपड़वंजमें खादीका काम शुरू किया और चरखा, बुनाअी-कार्य आदिका प्रचार

पूरे जोरसे चालू किया। अिस कार्यके प्रति सारे गुजरातका ध्यान आकर्षित हुआ और गांधीजी जब सन् १९२१ के अप्रैलमें कपडवंज पधारे तब अुन्होंने भी अिस कार्यकी तारीफ की थी।

हरिभाअीमें त्यागवृत्तिका विकास हो रहा था, अितनेमें बडौदा हाअीस्कूलसे भादरण हाअीस्कूलके हेड मास्टरकी हैसियतसे अधिक वेतन पर अुनका तबादला हो गया। कोअी भी शिक्षक अैसे तबादलेका खुशीसे स्वागत करता, परन्तु हरिभाअीके पूर्व-निश्चयके अनुसार निवृत्ति लेनेका और सेवाकार्योंमें पूरी तरह लग जानेका समय आ पहुंचा था, अिसलिअे अुन्होंने बडौदा राज्यके शिक्षा-विभागसे सन् १९२० में अपनी नौकरीसे अिस्तीफा दे दिया। यह तेरह वर्ष व्यापी अध्यापन कार्यका समय अुनके जीवनका साधना-काल माना जायगा। अुसके बाद गांधीजीसे आकर्षित होकर असहयोगके आन्दोलनोंमें शरीक होते हुअे तथा कपड़वंज-मड़ौंचमें सार्वजनिक कार्योंमें, राष्ट्रसेवामें और अुत्तम साहित्य-रसका पान करते हुअे श्री कुसुमबहनके साथ बिताये हुअे आदर्श दाम्पत्यके अंतिम सात वर्षोंका समय अुनके जीवनका सिद्धिकाल माना जा सकता है।

बडौदेकी नौकरीसे त्यागपत्र दिया, अुसी दिन किसी भी सार्वजनिक संस्थासे आजीविकाका साधन लिये बिना जहां भी अुनकी सेवाकी जरूरत अुन्हें महसूस हो, वहीं अनन्य भावसे समाज-सेवा और देश-सेवा करनेका अुन्होंने संकल्प किया। नौकरीसे मुक्त होनेके बाद मृत्यु-पर्यन्त किसी भी सार्वजनिक संस्थासे अपने अुपयोगके लिअे अेक पाअी भी न लेनेके दृढ़ संकल्प पर कायम रहनेमें वे भाग्यशाली सिद्ध हुअे थे।

हरिभाअीके अिस त्यागसे कपडवंजकी संस्थाओंको अत्यंत लाभ हुआ। कपड़वंजकी अनेक प्रकारकी सार्वजनिक प्रवृत्तियोंके वे प्रणेता बने। अखाड़ा, पुस्तकालय, बुनाअी-घर और राष्ट्रीय पाठशालाके सिवा १९२० के अक्तूबरमें अुनकी प्रेरणासे कपडवंजमें महालक्ष्मी अुद्योग-गृह स्थापित हुआ, जो आज भगिनी-सेवा-समाजके नये रूपमें प्रगति कर रहा है।

अैसे अनेक कार्य आरम्भ करने पर भी हरिभाओीको मुख्य आकर्षण तो शिक्षाके क्षेत्रका ही था। अुन्होंने श्री छोटुभाओी पुराणीको वचन दे दिया था कि वातावरण और परिस्थितियोंकी अनुकूलताका विचार करके जब भी श्री पुराणी अुनकी सेवाकी मांग करेंगे तभी वे अुसे स्वीकार कर लेंगे। अतः अपने अिस वचनके अनुसार वे भड़ौंच शिक्षा-मण्डलके स्वतंत्र कार्यमें शरीक हो गये और जीवन-पर्यन्त वहीं रहकर अुन्होंने शिक्षा-मंडल द्वारा साहित्य तैयार करनेमें श्री पुराणीका साथ देकर शिक्षा-मंडलकी सेवा की और डॉक्टर चंदुभाओी देसाओी तथा श्री दिनकरराव देसाओी वगैरा मित्रोंके साथ भड़ौंच सेवाश्रमकी स्थापनामें अग्रभाग लिया। भड़ौंच शिक्षा-मंडलके आश्रममें मैट्रिकसे अूपरकी कॉलेजकी कक्षा खोली गओी थी। जब तक वह कक्षा चली तब तक अुन्होंने शिक्षाका कार्य किया था। वे अिन कक्षाओंमें गुजराती साहित्य और अर्थशास्त्र दोनोंका अध्यापन करते थे।

हरिभाओीने अपनी सत्यनिष्ठा और काम करनेके सुघड़ ढंगसे महात्माजीका खूब विश्वास प्राप्त किया था और १९२० के सफरमें अुनके साथ रहकर अुनके सचिवके रूपमें पत्रव्यवहारका काम संभाला था। सन् १९२२ में पू० कस्तूरबाके साथ भी हरिभाओी और कुसुम-बहनने सिंधकी यात्रा की थी।

अपनी पहली पत्नी श्री महालक्ष्मीबहनकी बीमारीमें अुनकी सेवा करनेका अपना धर्म हरिभाओी चूके नहीं थे। सन् १९१७ में अुनका अवसान हुआ। बादमें १९२० में हरिभाओीने दरिद्र-नारायणकी सेवाकी दीक्षा ली। अुनके दूसरे वर्षमें श्री कुसुमबहन और हरिभाओीका विवाह हुआ। यह दूसरा विवाह श्री कुसुमबहनके आग्रहके वश होकर और अनेक चर्चाओंके बाद ही हरिभाओीने स्वीकार किया था और अिस सम्बन्धमें पूज्य गांधीजीने भी हरिभाओीके स्वर्गवासके सिलसिलेमें श्री कुसुमबहनके नाम अपने पत्रमें संतोष प्रगट किया था, जो नीचे लिखे शब्दोंसे स्पष्ट हो जाता है:

"मैं देखता हूं कि . . . तुम अुनकी पत्नीकी अपेक्षा अुनकी शिष्या अधिक थीं। . . . हरिभाओीने ही शादी करनेका आग्रह तुम्हारा ही था।" अित्यादि।

हरिभाओके जीवनके ध्येयके बारेमें पूछने पर अुन्होंने बताया था कि "मेरे जीवनका ध्येय यह है कि कुछ कुटुम्ब तैयार किये जायं। यही मेरा अल्प जीवन-कार्य है।" श्री अम्बालाल पुराणीने हरिभाओकी आत्माको श्रद्धाञ्जलि देते हुअे हरिभाओके जीवनका सर्वोत्तम कार्य श्री कुसुमबहनके साथका दाम्पत्य-जीवन बताया है और अुसमें हरिभाओकी समग्र भावनाशीलताको प्रत्यक्ष करनेका समर्थ प्रयत्न देखा है।

हरिभाओके आर्योचित आतिथ्यका जिन्होंने अनुभव किया है वे कभी अुनकी आतिथ्य-भावनाको भूल नहीं सकेंगे। भड़ौचमें अन्तिम निवासके दिनोंमें स्वेच्छापूर्वक अपनाओ हुओ गरीबीमें भी हरिभाओका कुटुम्ब मित्रों तथा स्नेहियोंकी अभिजनोचित आव-भगत करता था। मित्रोंके चले जाने पर अवैतनिक सेवाकी लगनवाले हरिभाओ फिर गरीबीसे रहना शुरू कर देते थे। लेकिन चूंकि हरिभाओ सुन्दरता, सुघड़ता और संस्कारिताके पुजारी थे, जिसलिअे अुनकी स्वेच्छापूर्ण गरीबीमें भी रसिकता और कलादृष्टिका प्रमुख स्थान रहता था। सादगी और सुन्दरताका सुमेल साधनेमें वे सदा प्रयत्नशील रहते थे। और अुसमें फिर आनन्द-प्रमोदका तत्त्व जुड़ जाता था। अुनका आतिथ्य पाना जीवनका अेक सौभाग्य माना जाता था। अैसा भी कहा जा सकता है कि हरिभाओके यहां आनेवाला प्रत्येक मेहमान अैसा अनुभव करता था, मानो वह अपने दु:खोंका पोटला, सीढ़िया चढ़ते हुअे, चबूतरे पर ही छोड़ आया हो।

अनेक प्रसगों पर हरिभाओने 'दु:खेष्वनुद्विग्नमना: सुखेषु विगत-स्पृहः' की गीतामें बताओ हुओ स्थितप्रज्ञता दिखाओ थी। अिस स्थितिकी पराकाष्ठा तो अुनकी आखिरी बीमारीके अवसर पर और खास तौर पर अवसानके समय अुनके निकटवर्ती स्वजनोंने देखी थी। अुनकी अंतिम व्याधिका निदान जब दुष्ट पाडु रोग और अुसके साथ जलंदरका हुआ और सब लोग चिन्तामें पड़ गये, तब हरिभाओ तो जरा भी व्यग्र हुअे बिना सदाकी भांति शान्त मुखमुद्रा रखकर हास्य-विनोद बरसाते रहते थे। हरिभाओके जीवनकी आशा छोड़कर चिन्ता करते हुअे डॉक्टर जब रोगका निदान हरिभाओके सामने कहते सकुचा रहे थे,

तब हरिभाअीने हंसकर कहा, "मुझे मरनेका जरा भी शोक नहीं। मृत्यु मेरे लिअे खेल है। कैसे मरना यह मुझे आता है।" मृत्युके बादकी अपनी पसन्दगीके बारेमें अेक बार हरिभाअीने विनोदमें कहा था: "प्रभु, मुझे मोक्ष आदि नहीं चाहिये। परन्तु जहां खूब काम किया जा सके और मेरा सारा स्नेही-मंडल तथा आलोचककी दृष्टिसे देखनेवाले मनुष्य भी हों वहीं मुझे जन्म देना।"

जन्मान्तरमें भी अिस तरह सेवाभावकी लालसा रखनेवाले हरिभाअीकी यह बीमारी आखिरी साबित हुअी और भड़ौंचमें सन् १९२७ के जुलाअीकी १९ तारीखको हरिभाअीने पार्थिव शरीरको छोड़ दिया। हरिभाअीने मरते मरते भी बहुतोंको जीना सिखाया। लोकोत्तर जीवनकी मृत्यु भी अिस प्रकार लोकोत्तर ही हुअी। अुन्होंने मरणका भी हंसते हंसते ही अभिनन्दन किया!

हरिभाअी स्थायी आश्रमवासी नहीं बने थे और न 'सत्याग्रह आश्रम' के सारे सिद्धान्त ही अुन्होंने स्वीकार किये थे, फिर भी गांधीजीके हृदयमें अुन्होंने स्थायी और अुच्च स्थान प्राप्त कर लिया था। अिसलिअे अुनके अवसानके बाद गांधीजीने ता० ७–८–'२७ के 'नवजीवन' में 'अेक सत्याग्रहीका देहान्त' शीर्षक हृदयस्पर्शी टिप्पणी लिखकर अुन्हें अंजलि दी थी।*

---

* वह टिप्पणी यह थी:

भाअी हरिलाल माणेकलाल देसाअीको 'नवजीवन' के सभी पाठक नहीं जानते होंगे। अुनका देहान्त थोड़े दिन पहले भड़ौंचमें हुआ। अुनके पास रहनेवाले मित्र लिखते हैं कि अुनके मुख पर अन्त तक आनन्दकी झलक दिखाअी देती थी।

भाअी हरिलालने असहयोगकी हलचलके समय बड़ौदा हाअीस्कूल छोड़ा था। वहां वे फ्रेंच भाषाके शिक्षक थे। तबसे मृत्युके समय तक असहयोग पर अुनका विश्वास अविचल रहा था। अुन्होंने सत्यको जैसा देखा वैसा पालन करनेका यथाशक्ति प्रयत्न किया था। अिसलिअे मैंने अुन्हें अेक सत्याग्रही कहा था। अुनकी नम्रता अुनके सत्यके आग्रहको सुशोभित करती थी। असहयोगके आरम्भ-कालमें अुन्होंने मेरे साथ कुछ

तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो हरिभाअी अल्पायुमें ही बहुत काम कर गये। सेवा और स्वार्थत्यागका, परमत-सहिष्णुता और व्यक्ति-स्वातन्त्र्यका, समभाव और सहानुभूतिका, अुज्ज्वल दाम्पत्य और विशाल कुटुम्ब-भावनाका, सादगी और सुन्दरताका, शिक्षा और साहित्यका, आतिथ्य और मैत्रीका तथा अुदात्त जीवनके अैसे अनेक सन्देशोंका अेक महान सन्देश वे केवल अुपदेशसे नहीं, परन्तु प्रत्यक्ष आचरणसे दे गये। खास तौर पर अपने निजी नेतृत्वमें समाज-सेवकोंका छोटासा 'हरिभाअी मंडल' खड़ा करनेका जीवनका अेक महान कार्य हरिभाअीने किया। अिसके प्रतीक-स्वरूप 'सेवा संघ' और 'महाजन लाअिब्रेरी', 'हरिकुंज सांमायटी' और 'हरि छात्रालय' हरिभाअीकी सेवा-भावनाके अमर स्मारकके रूपमें आज काम कर रहे हैं।

प्रो० धीरजलाल परीख

समय तक भ्रमण किया था। तब अुनकी काम करनेकी स्वच्छतासे, अुनकी बारीकीसे और अुनकी सावधानीसे मैं मोहित हुआ था। अुस समय मेरे बहुतसे पत्रोंके अुत्तर वे ही लिखते थे। और किसी तरह दूसरी सहायता भी करते थे। अुस सहवासके दौरानमें मैं देख सका था कि वे सत्याग्रह और असहयोगका सूक्ष्मतासे अध्ययन करते थे। कापड़वजमें अुन्होंने केवल अपने ही प्रयत्नसे खादीका काम शुरू किया था और अुसे सुशोभित किया था। अन्तिम वर्षोंमें वे भडौंच शिक्षा-मंडलको मदद देते थे और जो कुछ सिखानेका काम अुनके सुपुर्द होता वह करते थे। सविनय कानून-भंग करनेका कोअी शुभ अवसर आये तब अुसमें अचूक जूझनेवाले जिन पुरुषोंके नाम मैंने अपनी मानसिक सूचीमें दर्ज कर रखे हैं अुनमें हरिभाअीका नाम भी था। निर्दय कालने अुसे मिटा दिया है। परन्तु सत्याग्रहीको अिसका भी खेद नहीं होता। सत्याग्रही साथी जितनी जीकर मदद करता है अुतनी ही मरकर भी करता है। 'मर कर' जीना' तो अुसका महामंत्र होता है।

मो० क० गांधी

३

श्री कुसुमबहन देसाओी

पू० बापूने जिन कुसुमबहन देसाओीके नाम अुपरोक्त पत्र लिखे थे, अुनका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है।

गुजरातमें खेड़ा जिलेके अुमरेठ गांवमें सं० १९६४ के फाल्गुन सुदी ८ के दिन अेक गुणी और प्रतिष्ठित वणिक परिवारमें श्री हीरालाल जगजीवनदास दलालके यहां कुसुमबहनका जन्म हुआ था। श्रीमन्नृसिंहाचार्यजीके श्रेयस्साधक अधिकारी वर्गकी धार्मिकतासे रंगी हुओी अुनकी माताजी जड़ावबहन साहित्यके क्षेत्रमें भी काव्य-सर्जनकी स्वाभाविक देन रखनेवाली संस्कारी सन्नारी थीं। सगर्भावस्थामें अुन्होंने यह महत्त्वाकांक्षा रखी थी कि 'मेरा अिस बारका बालक सर्वत्र आदर पानेवाला सद्गुणी सिद्ध हो।' पुण्यशाली माताकी यह अन्तरतम प्रार्थना प्रभुने सहृदयतासे सुनी।

कुसुमबहनका विद्याध्ययन पाठशालामें तो केवल गुजराती छठी श्रेणी तक ही हो सका। जन्मभूमि अुमरेठ होने पर भी दादा तथा मामा बड़ौदा रहते थे, अिसलिअे अुनका अध्ययन-काल अुमरेठ, बड़ौदा और बादमें कपड़वंजमें अलग अलग व्यतीत हुआ। विद्यार्थिनी कुसुमबहन पढ़ाओीमें खूब तेजस्वी और बाह्य जीवनमें स्वाभिमानिनी थीं।

हरिभाओीकी पहली पत्नी सौ० महालक्ष्मीबहनका सन् १९१७ में स्वर्गवास होने पर कुसुमबहनकी माता तथा मौसीने अुनका विवाह हरिभाओीके साथ करनेका दृढ़ संकल्प किया, क्योंकि अेक संस्कार-सम्पन्न आर्ष दृष्टिवाले असाधारण साधु-चरित पुरुषके रूपमें हरिभाओीका अुन्हें अद्भुत आकर्षण था और अपनी लाड़ली पुत्रीको अैसे सज्जनके हाथोंमें सौंपनेमें अुसका सर्वथा कल्याण होनेकी अुनकी दृढ़ मान्यता हो गओी थी। वयका फर्क सोचकर हरिभाओीने यह सम्बन्ध जोड़नेमें बहुत ही आनाकानी की। परन्तु जड़ावबहनका अत्याग्रह होने पर अुन्होंने यह कहा कि 'दो वर्ष तक कुसुमकी अिच्छा देखी जाय और बादमें अुसकी तरफसे मांग होगी तो मैं . . . विचार करूंगा।' बादमें कुसुमबहन हरिभाओीके

निकट परिचयमें आयें, जिस हेतुसे अुन्हें अपनी बड़ी बहन श्री चन्दुबहनके यहां कपड़वंजमें रखनेकी व्यवस्था श्री जड़ावबहनने कर दी थी।

अिस प्रकार लगभग बारहवें वर्षमें श्री कुसुमबहन हरिभाअीके परिचयमें आअी। अुसके बाद दो तीन वर्षका समय कुसुमबहनके लिअे जीवन-पाथेय भरनेका था। सार्वजनिक जीवनकी प्रत्यक्ष तालीम कुसुमबहनको प्रथम बार अिसी समय मिली। हरिभाअीके आरम्भ किये हुअे बुनाअी-काममें कताअी-विभागके हिसाब अुस जमानेमें कुसुमबहन रखती थी। साथ साथ हरिभाअीने साहित्यके क्षेत्रमें भी कुसुमबहनकी दिलचस्पी पैदा की। कवि नानालालका 'जयाजयंत', गोवर्धनरामका 'सरस्वतीचन्द्र' और नर्रासहराव, कलापी, कान्त, ललित, बोटादकर आदि कवियोंके रसका थाल हरिभाअीने कुसुमबहनको परोसना शुरू किया; अेशियाके कवि सम्राट टागोरकी 'गीतांजलि' और 'साधना'के अनुवाद अुनके सामने रखे। पूज्य गांधीजीका 'हिन्द स्वराज्य' और 'नवजीवन' तो थे ही। अिस प्रकार हरिभाअीने अुनकी गुर्जर साहित्यका स्वतंत्र तुलनात्मक अध्ययन कर सकनेकी तैयारी कराअी। अिस दिशामें बादमें भडौंचके घरके 'रविवर्गों' यानी 'साहित्य वर्गों'ने अच्छा योग दिया। बुद्धिके विकासके साथ हृदयका विकास तो होता ही जा रहा था और सादगीके साथ सुव्यवस्था, सुघड़पन और कलाप्रियताकी मानो जन्मसे ही अुन्हें देन मिली हो अैसा लगता था। यह सब करनेकी जड़में हरिभाअीकी दृष्टि तो आश्रम-जीवनकी तैयारी थी। संस्थाओंमें अैसा आम तौर पर होता है, कि अेक केन्द्रीय अधिष्ठाता व्यक्तिके सामने — जैसे सूर्यके सामने आकाशके तारामंडल फीके लगते हैं वैसे — आसपास के तमाम व्यक्तियोंका व्यक्तित्व तेजहीन हो जाता है। अैसा न होने देनेके लिअे हरिभाअी सतत जाग्रत रहते थे। हरिभाअीके चरणोंमें अपना सर्वस्व अर्पण करके, अुनके व्यक्तित्वमें अेक तरहसे अपना व्यक्तित्व लोप करके अेक ही आत्माके दो पहलू जैसी कुसुमबहनकी स्थिति होने पर भी दूसरी ओर व्यक्ति-स्वातंत्र्यके प्रखर हिमायती हरिभाअीने कुसुमबहनका स्वतंत्र व्यक्तित्व लोप न होने देकर अुसका विकास [illegible] वह अिस हद तक कि अुनको [illegible]

व्यक्तित्वकी सुगंध वे जहां जहां रहीं वहां वहां फैली। यह सुन्दर मेल साधनेमें हरिभाओीकी आजन्म समर्थ शिक्षाकारकी शक्तिकी हमें खास प्रतीति होती है। अिसके साथ कार्यके बोझसे दबकर कभी अुदासी या विषाद या खिन्नता न आये, परन्तु सदा पुष्पकी प्रफुल्लता कायम रहे, अैसा जगतकी सब घटनाओंमें आनन्द ढूंढ़नेका कीमिया भी हरिभाओीके स्वयंसिद्ध विनोद-प्रिय स्वभावके प्रतापसे कुसुमबहनके लिअे सहज हो गया था। हरिभाओीको तो अपनी आत्मशक्ति सींचकर संसारके चरणोंमें अपनी सर्वोत्तम कृति रखनेकी अभिलाषा थी — स्त्रियोंमें संस्कार भरकर समाज़को अूंचा ले जानेके लिअे कुछ आदर्श कुटुम्ब तैयार करना अुनका अेक मुख्य जीवन-कार्य था। पू० गांधीजीके आश्रम-जीवनसे वे खूब आकर्षित हुअे थे और गांधीजीके रास्ते चलकर संयमी गृहस्थ-जीवन संभव है, यह आदर्श वे समाजके चरणोंमें धरना चाहते थे। कुसुमबहनमें हरिभाओीको अैसा पात्र मिल गया, जिसकी सहायता और सहयोगसे वे प्राचीन आश्रम-जीवनके आदर्शको अर्वाचीन ढंगसे आचरणमें ला सके।

हरिभाओीने नौकरीसे निवृत होकर शेष जीवन समाजके चरणोंमें समर्पण करनेका, पैतृक सम्पत्तिमें से कुछ भी न लेनेका और अवेतन सेवा करनेका निश्चय किया था, यह जानते हुअे भी और लौकिक दृष्टिसे आयुका बड़ा अंतर होनेके कारण जिसे लोग सांसारिक सुख और स्त्रियां जिसे अपना परम सौभाग्य-सुख मानती हैं अुसके बारेमें हरिभाओीकी आयु और स्वास्थ्यको देखते हुअे कोओी निश्चितता न होनेके बावजूद कुसुमबहनने अुन्हें अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया — अिसकी तहमें पत्नीकी अपेक्षा शिष्याका मनोभाव कितना प्रबल होगा, यह पूज्य गांधीजीके नीचेके वाक्यमें स्पष्ट हो जाता है: "जो लड़की अपनेसे बहुत बड़ी अुमरके पुरुषको पतिके रूपमें चुनती है वह शरीरको नहीं, परन्तु अुस शरीरके स्वामीको चुनती है। तुम अुनकी पत्नीकी अपेक्षा अुनकी शिष्या अधिक थीं।"

अिस प्रकार, अुमरेठमें १९२१ में केवल तेरह वर्षकी अुमरमें विवाह करके अुन्होंने भड़ौंचमें गार्हस्थ्य जीवन शुरू किया। हरिभाओीने अुनके परिचयमें आनेवाले विद्यार्थियोंमें जो संस्कार सींचे और अुन्हें

अेक ही मा-बापकी संतानोमें भी दुर्लभ भ्रातृ-भावनाका जो अुत्तराधिकार सौंपा, अुसे हरिभाअीका मुख्य जीवन-कार्य कहा जा सकता है। जिसमें कुसुमबहनका भाग अति महत्त्वका था। और कुसुमबहन जैसे पात्रके अभावमें हरिभाअीकी महत्त्वाकांक्षाअें शायद मूर्त स्वरूप नहीं ले सकती थी, यह अेक सच्चाअी है। श्री अम्बालाल पुराणीने हरिभाअीकी आत्माको अंजलि देते हुअे हरिभाअीके जीवनका सर्वोत्तम कार्य श्री कुसुमबहनके साथके दाम्पत्यको बताया है, यह बिलकुल यथार्थ है। अुस कालमें अुनका मेहमान होना सभी जीवनका सौभाग्य मानते थे। परन्तु अुनका विवाहित जीवन केवल सात ही वर्ष रहा और सन् १९२७ में भड़ौंचमें हरिभाअीका अवसान हो गया। अवसानके समय कुसुमबहन द्वारा प्रदर्शित धैर्य और शान्ति विलक्षण थे।

हरिभाअीके अवसानके बाद कुसुमबहन सत्याग्रह आश्रममें पू० बापूके पास चली गअी। जन्मदाता मा-बाप तो हीराभाअी और जडावबहन थे, परन्तु जन्मदाता मा-बापसे भी कअी गुने यथार्थ रूपमें अुनके मां-बाप कोअी बन गये हों तो वे पू० बापू और पू० बा थे। कुसुमबहन सत्याग्रह आश्रममें १९२७ से १९३० तक सतत रही। अुस दौरानमें पू० बापूका गुजराती पत्रव्यवहार महादेवभाअी वगैराके साथ वे भी सभालती थीं। जिस प्रकार बापूके सचिवके रूपमें भी अुन्होंने कुछ समय काम किया था। और पू० बा-बापूके साथ भारतकी यात्रामें भी अुस अवधिमें कुछ समय वे साथ रही थी। पू० बापू प्रसंगोपात्त बाहर सफरमें जाते तब सत्याग्रह आश्रमके सभी विभागों तथा बाल-मन्दिरका काम पू० बाके साथ अुन्हें दिया जाता था, अैसा अिस पत्रव्यवहारसे मालूम होता है।

१९३०-३२ की राष्ट्रीय लड़ाअियोंके समय सूरत, बारडोली तालुका तथा भड़ौंच जिलेमें विदेशी कपड़े और शराब-ताड़ीकी दुकानोंके धरनेका काम अुन्होंने सभाल लिया था। १९३२ की लड़ाअीके समय भड़ौंच जिलेके गांवोंमें भी अुन्होंने भ्रमण किया था।

गुजरातके डिक्टेटरके रूपमें चुनी जाकर वीरमद सत्याग्रहके समय अुनकी गिरफ्तारी हुअी थी। अुस समय वे साबरमती जेलमें पू० बाके साथ रामायण पढ़ती और शिक्षण वर्ग चलाती थीं और साथ ही

प्रसंगोपात्त अपराधी बहनोंसे भी मिलती-जुलती रहकर अुनके प्रति सहानुभूति प्रकट करती और अुनका पथ-प्रदर्शन करती थीं।

सत्याग्रह आश्रम बिखर जानेके बाद वे थोड़े वर्ष भड़ौंचमें बिताकर अन्तमें बड़ौदेमें स्थिर हो गअी हैं। पू० बा और बापूके जीते जी कभी कभी वे वर्धा या अन्यत्र अुनके पास थोड़े दिन बिताती और खास तौर पर बीमारीके समय अुनकी सेवामें अुपस्थित रहनेका प्रयत्न करती थीं। वे जगदम्बा पू० कस्तूरबाके विशेष प्रेमकी अधिकारिणी बनी थीं। पू० बाका अुनके प्रति अितना अधिक वात्सल्य अुमड़ता था कि वे कहीं बाहर बीमार होतीं तो खबर मिलने पर कभी कभी बा स्वयं चक्कर लगाकर अुनकी तबीयतकी खबर ले जातीं।

बड़ौदे रहकर शुरूमें प्रजा-मंडलके कामके द्वारा वे प्रजासेवामें योग देती रहीं। आजकल स्त्रियोंकी सहकारी सस्थाओं, 'प्रेमानन्द साहित्य सभा' जैसी साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा महिला क्लब वगैरामें यथाशक्ति काम कर रही हैं। साथ साथ कपड़वंजको भी अुन्होंने अपने कार्यका मुख्य स्थान माना है। हरिभाअीके स्मारकके रूपमें शुरू हुअी सेवासंघ संस्थाकी वे आज पिछले छह वर्षसे अध्यक्षा हैं। साथ ही अखिल भारतीय महिला परिषदकी कार्यकारिणीमें भी वे सदस्य रहीं तथा अुसकी शाखाके रूपमें कपड़वंजमें स्थापित श्री भगिनी-सेवा-समाजकी भी अध्यक्षा हैं। नड़ियाद विट्ठल कन्या-विद्यालयकी कार्यकारिणी समितिकी भी वे सदस्य थीं।

अिन स्थूल कार्योंके सिवा हरिभाअीकी शिष्य-मंडली और स्नेहियोंको 'हरिभाअी मंडल' के रूपमें मालाके मनकोंकी तरह अेकत्र बांधकर वे अुन्हें हरिभाअीके बताये हुअे लोकोत्तर सेवाकार्योंमें पथ-प्रदर्शन और प्रोत्साहन दे रही हैं। पू० गुरुदेव और पतिदेव हरिभाअीकी आत्माके अमृतमय आशीर्वाद सतत प्राप्त करते रहनेका अिससे अुन्नत कार्य और क्या हो सकता है?

भारत सतियोंका देश है। जगज्जननीके समान सन्नारियोंकी पवित्र सुगन्धसे भारतीय संस्कृति गौरवशाली बनी है। आर्य स्त्री तप, त्याग, आत्म-समर्पण और साथ ही पतिपरायणताकी पवित्र मूर्तिकी प्रतीक है। श्री कुसुमबहन भी अैसी ही आर्य सन्नारी हैं।

प्रो० धीरजलाल परीख

४

स्व० पूज्य कस्तूरबा

पृथ्वीने आरा छे. ने पृथ्वीमानी अुत्क्रान्तिनये आरा छे,
अे पछीना अुत्क्रान्ति मार्ग अवकाशने सामे तीरे छे;
ने मृत्युनी नदीना अंधार-काळा नीर वचमां घेरा घेरा वहे छे.*

—कवि नानालाल

चिरस्मरणीय रहेगी पवित्र महा शिवरात्रिके दिनकी वह संध्या जब पू० कस्तूरबाने अपने स्थूल देहका त्याग करके जीव और शिवकी संधि स्थापित की और अुत्क्रान्तिके अगोचर पथ पर महाप्रयाण किया। मृत्युरूपी नदीके काले गहरे नीरसे पार अुतरकर वे तो प्रभुके परम धाममें, परम पदमें जाकर विराजमान हो गयी।

पू० कस्तूरबाने अपना सारा ही जीवन अपने पतिकी अिच्छा और आदेशके अनुसार अखिल भारतके चरणोंमें रख दिया था। पतिकी अिच्छासे भिन्न अिच्छा न रखनेवाली पू० बाका जीवन अेक महान तपस्या ही था। अेकादशी और दूसरे व्रतोंके सिवा पू० बा प्रति सोमवारको शिवजीका व्रत भी रखती थीं। अैसी महान सती साध्वी अपने महाप्रयाणका दिन महा शिवरात्रिके सिवा दूसरा कैसे पसन्द करती!

धन्य थी मेरे जीवनकी वह घड़ी जिस पवित्र दिन मैं पू० कस्तूरबासे पहले-पहल मिली। अुसे आज २३ वर्ष बीत गये हैं। प्रथम दर्शनमें ही वात्सल्यसे आकर्षित कर लेनेवाली अुस माताके समीप आत्मीयताकी अेकता सहज ही अुत्पन्न हो गयी। क्षणमात्रमें मा-बेटीकी आत्मीयताका मुझे अनुभव हुआ। मेरे परम पूज्य सद्गुरु और पतिदेवको पू० बापूजीने 'पॉल रिशार' की फ्रेंचके अनुवादमें सहायक होनेके लिअे वहां ठहरनेको

---

* पृथ्वीकी सीमा है। और पृथ्वी पर हो सकनेवाली अुत्क्रान्तिकी अर्थात् प्रगतिकी भी सीमा है। परवर्ती अुत्क्रान्ति-मार्ग अवकाशके दूसरे तीर पर हैं। और अिन दोके बीचमें मृत्युकी नदीका अंधकार-जैसा काला पानी गहरा बह रहा है।

कहा, अिसलिअे पू० बाके विशेष निकट परिचयका लाभ मुझे तुरन्त मिल गया। साबरमती आश्रमकी आत्मा पू० बापूजी श्वेत ज्योतिकी तरह वहां चमकते थे, परन्तु अुस ज्योतिका जीवन तो आश्रमकी सच्ची अधिष्ठात्री देवी पू० बाकी विविध शक्तियोंमें था।

पू० बापूजीके हृदयमें मेरे लिअे अति स्नेहार्द्र भाव था और अुनके प्रति मेरा पूज्यभाव अकथ्य था, फिर भी नैसर्गिक रूपमें संसारमें 'मां' सबको अधिक प्यारी होती है। अतः अुतना पक्षपात तो पू० बाके लिअे मुझे हमेशा रहता ही था।

साबरमती आश्रम तो भारतवर्षकी जनताका महान तीर्थ था। अनेक सद्हेतुओं और सदिच्छाओंसे प्रेरित होकर दूर-दूरसे लोग वहां रहने आते थे। पू० बा नअी आनेवाली बहनोंके साथ प्रेमसे बातें करती और अुन्हें बुरा न लगे, कुटुम्बियोंका वियोग न खटके अिस बातका ध्यान रखती थीं। पू० बाको विचार और कार्यकी अस्वच्छताके प्रति जितनी घृणा थी, अुतनी ही घृणा अुन्हें स्थान, कपड़े वगैराकी अस्वच्छताके प्रति भी थी। अिससे आश्रममें अैसी घटनाअें भी हो जाती थीं जिनसे कुछ बहनोंको बुरा लगे। अेक बार पू० बापूजीके साथ घूमनेमें कुछ बहनें भी थीं। अुनकी बातचीतसे पू० बापूजीको खयाल हुआ कि किसी बहनको पू० बाका व्यवहार बुरा लगा है। पू० बापूजीने अुस बहनको बताया, "बाके पास कड़वा नीम शायद होगा, फिर भी शक्कर तो है ही।"

साबरमती आश्रममें अेक दिन रातको 'भारत कब स्वतंत्र होगा, अुसकी मुक्तिके दिन कब देखनेको मिलेंगे' अैसी चिन्ता करते करते पू० बापूजी सो गये थे। सामने बरामदेमें पू० बा और मैं सो रही थीं। दो-अढ़ाओ बजेके करीब पू० बापूजी अुठकर चलने लगे। पू० बा जाग अुठीं और मुझसे पूछा: "बापूजी कहां जा रहे हैं? हम पीछे पीछे चलें? कुछ वैसा तो नहीं है?" हम दोनों पीछे पीछे गओं और थोड़ी दूरसे ही पू० बापूजीको देखा। पू० बापूजीने कहा: "क्या तुम्हें अैसा लगा कि मैं भाग जाअूंगा?" सड़क पर कोओ आदमी बिच्छूके काटनेसे रो रहा था। अुसे सुनकर पू० बापूजी वहां गये थे। जब अुसका दर्द अुतार हो चुका तब अुसे स्व० श्री छोटेलालजीको सौंपकर

हम सब लौटे आये। गहरी नींदमें भी पू० बापूजीके लिअे पू० बाका चित्त कितना जाग्रत रहता था, जिसका पता अिस घटनासे लगता है।

आधुनिक दृष्टिसे पू० बा निराकांक्षी भले ही लगें, परन्तु वे बड़ी महत्त्वाकांक्षी थी। वे सचमुच अपना स्थान और कर्तव्य समझती थीं; और अुसका यथोचित पालन करके जिस महान पदकी अुन्होंने प्राप्ति की वह हम सबने देखा। पू० बाका सूक्ष्म जीवन तप, त्याग, भक्ति, आत्म-समर्पण और पतिपरायणताके पांच तत्त्वोंसे पूरी तरह मर्यादित था। और अिन महान तत्त्वोंकी केन्द्रित शक्ति ही बहुत हद तक पू० बापूजीकी दैवी प्रेरणाओं और आत्म-निर्णयोंका कारण थी, यह कहनेमें पू० बापूजीके विरल कर्मयोग, समदृष्टि, सत्यनिष्ठा और आत्म-बलके साथ विशेष न्याय होता है। आत्मबलकी प्राप्तिके मूल साधन पू० बापूजीने गृहस्थ-जीवनसे प्राप्त किये थे। और अुस गृहस्थ-जीवनकी संचालिका अुनकी पवित्र सहधर्मिणी पू० कस्तूरबा थी।

पूनामें अेपेंडिसाअिटिसका ऑपरेशन होनेके बाद जिस समय घाव भर रहा था तब पू० बापूजीको लगा कि अब मेरे लिअे फलों वगैराका अितना गलत खर्च क्यों हो? पू० बासे अुन्होंने कह दिया कि आजसे मेरे लिये 'स्ट्रॉबेरी' न मंगाओ जाय। डॉक्टरकी सलाहके विरुद्ध पू० बापूजीकी अिस अिच्छामें पू० बाकी चिन्ताका पार नहीं रहा। अुनके तो मानो प्राण ही सूख गये। श्री देवदासभाअी भी बड़ी चिन्तामें पड़ गये। मेरे पति और मैं दोनों साथ ही थे। मेरे पतिने पू० बासे कहा: "आजके दिन तो आप चिन्ता छोड़ दीजिये। यह भार मेरे सिर पर है।" और वे स्वयं स्ट्रॉबेरी ले आये। पू० बापूजीके सामने जब अुचित समय पर स्ट्रॉबेरी रखी गअी तब अुन्होंने कहा, "मैंने मना कर दिया था फिर भी यह क्यों?" अुत्तरमें पू० बाने बताया: "आपकी अिच्छा बता देने पर भी हरिभाअी आज खुद जाकर ले आये हैं।" जरा भी और पूछताछ किये बिना पू० बापूजीने स्ट्रॉबेरी ले ली और दिनमें जब हमने डॉक्टरोंकी 'विशाल' सहायता लेकर स्ट्रॉबेरी और थोड़े समय तक जारी रखनेको पू० बापूजीको राजी कर लिया तभी पू० बाके जीमें जी आया।

साबरमती आश्रममें या वर्धाके सेवाग्राममें, दूसरोंके आतिथ्यमें या प्रवासमें, पू० बापूजीकी सेवा-शुश्रूषाका अखंड चिन्तन ही पू० बाका सर्वोच्च कर्तव्य रहता और यह पुण्यकार्य वे खुद ही करती थी। अनेक भाअी-बहनोंके भक्त-हृदय पू० बापूजीकी सेवाके लाभके लिअे तरसते थे। अपने अधिकारका कुछ अंश दूसरेको सौंपकर खुश होनेवाली बा दूसरोंकी सेवावृत्तिको सन्तोष देती थीं। नियत कार्य, निश्चित समय पर अन्य व्यक्ति चूक जाता तो अुस कामको पू० बा स्वयं कर लेती थी और प्रेमसे कहती थी "बापूजीको परेशानी न हो अिसलिअे मैंने कर लिया है। कलसे समय पर आओगे तो तुम्हारे लिअे काम रहेगा।"

सन् १९२९ के अुत्तर भारतके दौरेमें अेक बार हम सब अलीगढ़में थे। पू० बापूजीके लिअे दूध छानने जैसी अल्पसेवा अेक भाअीने बहुत ही हठाग्रहके साथ पू० बासे मागी और दूध छाना। वह दूध बापूजीको दिया गया, अुस समय अुसमें अुन्हें अेक बाल नजर आया। पू० बासे पूछने पर अुन्होंने जो हुआ था सो कह सुनाया। पू० बापूजीने कहा. "परिणाम देख लिया? अन्दर बाल रह गया है।" अुस दिन पू० बापूजीने दूध नही लिया। पू० बाको अत्यंत दुःख हुआ और मुझसे कहा: "देखा बहन, बापूजीको कितना ज्यादा दुःख हुआ? किसीको करने न दें तो वे भाअी-बहन बुरा मानते हैं और काम करना अच्छी तरह आता नही। दिनभर और रातभर मगजपच्ची करनी होती है और अेक बार भी बापूजीको पेटभर खानेको नही मिल पाता।"

अुसी वर्ष पू० बापूजी बनारस पधारे तब वहांके सनातनियोंका विरोध बहुत सख्त था। आम सभामें पू० बापूजीके साथ हम नही गये थे। परन्तु श्रीप्रकाशजीके यहां रहे। सभामें बहुत हंगामा है, यह खबर मिलने पर पू० बा सभामें जानेको तैयार हो गअी और श्री देवदास-भाअी, पंडित जवाहरलालजी तथा श्रीमती अुमाबहन मालवीय — अिस प्रकार हम पाच आदमी मोटरमें निकले। रास्तेमें सामनेसे अेक टोलेने आकर हमारी मोटरको सभास्थलकी तरफ जानेसे रोकनेकी कोशिश की। वहां श्री पंडितजी तथा श्री देवदासभाअी मोटरसे अुतर पड़े और पंडितजीने भीड़में से दो चारको गर्दन पकडकर हटा दिया। टोला बिखर

गया, फिर भी भीड़ सख्त थी। हम भी मोटरमें से नीचे अुतरे। पंडितजी और श्री देवदासभाअी तो फिर हमसे मिल ही नहीं सके। अितनेमें यह जानकर कि सभास्थल पर पत्थर पड़ रहे हैं, पू० बा बोल अुठीं: "सभामें पत्थर पड़ रहे हों और बापूजी सभामें हों तो मैं बाहर कैसे रह सकती हूं?" यह कहकर अुन्होंने सभास्थलकी तरफ बढ़ना शुरू किया। हम दोनों बहनें पू० बाके साथ अुत्तेजित भीड़को बड़ी मुश्किलसे चीर कर आखिर सभास्थान पर पहुंचीं। पू० बाके धैर्य और वीरताकी अिस घटनासे सच्ची प्रतीति होती है।

अिसी प्रवासमें हम कौसानी (हिमालय) गये, जहां पू० बापूजीने श्रीमद्‌भगवद्‌गीताका (गुजराती) भाषान्तर पूरा किया।* हमारे निवास-स्थानके सामने अूंचे पर्वतोंके अुन्नत शृंग श्वेत बर्फसे आच्छादित थे और अुन्हींके निचले हिस्सेमें हरियाली लहराती नजर आती थी। अिन धवल शिखरों पर दृष्टि जरा स्थिर करने पर समझमें आता था कि जीवनको श्वेत — पवित्र — बनाये बिना अुन्नत शिखर पर नहीं पहुंचा जा सकता। अिन शिखरोंको थोड़ी देरके लिअे काले बादल ढंक लेते थे, परन्तु तुरन्त ही वे अपने-आप बिखर कर नष्ट हो जाते थे। सांसारिक जीवनका गहरा मर्म समझानेवाली यह घटना अत्यंत बोधप्रद थी। भगवान श्री सूर्यनारायण प्रातः और सायंकाल अपनी दिव्य किरणोंसे अुन श्वेत पर्वतोंको सुवर्णमय कर देते और मध्याह्नमें तुषारका गर्व हल्का करनेके शुभ हेतुसे अुसे पिघलाकर पृथ्वीके जलके साथ मिला देते थे। अिन दिव्य दृश्योंसे गंगावतरणकी कल्पना होती और श्री गंगाजीने स्वर्गसे अुतरकर शिवजीकी जटामें स्थान लेकर बादमें जन-कल्याणार्थ पतित-पावनी बनकर मृत्युलोकमें ही निवास किया, अिस प्रसंगका स्मरण होते ही पुण्य भावना [illegible] [illegible] [illegible] होनेका [illegible] [illegible] मुझे [illegible] होता था।

हिमालयमें ठंड और कुदरत बेहद होते हुअे भी पू० बापू नियमानु-सार अुन स्थान पर भी [illegible] ही [illegible] थे। [illegible] [illegible] [illegible]

* यह भाषान्तर '[illegible]' के नामसे नवजीवन प्रकाशन मंदिर द्वारा प्रकाशित हुआ है। मू. [illegible] न. पै. डाकखर्च [illegible] न. पै.

बच्चा बापूजीके बिस्तरके पास आकर चला गया। नैनीतालसे आये हुओे कार्यकर्ता पू० बापूजीके आतिथ्यके लिओे वहीं रहते थे। अनमें से अेकने अुस बच्चेको देखा और दूसरे दिन पू० बापूजीको यह बात बताकर खुली जगहके बजाय अन्दर सोनेका बड़ा आग्रह किया। पू० बापूजी खुश हुओे और अुन्होंने हमेशाकी तरह खुलेमें ही अपना बिस्तर कराया। पू० बाने भी जो अन्दर सो रही थी अपना बिछौना बाहर कराया। यह देखकर पू० बापूजी खुश हुओे। अिस प्रकार पू० बाको पू० बापूकी रक्षा करते देखकर मुझे भगवान बुद्ध और सिद्धार्थ भगिनियोंका प्रसंग याद आता था।

पू० बा पुण्यश्लोक बापूजीकी सचमुच ही जीवन-रक्षक देवी थी, यह कहनेमें जरा भी अतिशयोक्ति नहीं। स्त्री सृष्टिकी आदिशक्ति है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसोंका दिव्य बल जहां असफल रहा वहां जगन्माताने श्री महाकाली और दूसरे शक्तिरूप धारण करके देवादिदेवोंकी रक्षा की है, यह चण्डीस्तोत्रका सार यही सिखाता है कि स्त्रीकी आद्यशक्तिके बिना पुरुषका बल काम नहीं आता।

पू० बाके खादीके प्रति अगाध प्रेमका प्रसंग भी अुल्लेखनीय है। अेक बार पू० बाके पैरकी आखिरी अुंगलीसे खून निकला। पू० बा खादीकी पट्टी बांधने जा रही थी कि अेक बहनने बारीक कपड़ेकी पट्टी ला दी और कहा "अिस बारीक कपड़ेसे छिलेगा नहीं और पट्टी अच्छी तरह बंधेगी।" अिसके अुत्तरमें यह कहकर कि "मुझे तो खादीकी ही पट्टी चाहिये। वह खुरदरी होगी तो मुझे चुभेगी नहीं।" पू० बाने खादीकी ही पट्टी बांधी।

लाहौर कांग्रेसके समय पू० बापूजीने पू० बाको कुछ श्रीमानोंके सामने बताया· "कांग्रेसमें आकर समय गंवानेसे यहां रहकर कातो तो अधिक अच्छा।" पू० बापूकी अिच्छाको अुमंगसे शिरोधार्य करके पू० बा तंबूमें जाकर आनन्दसे चरखा कातने बैठ गअीं। कांग्रेसमें जानेके समय श्रीमती सरलादेवीबहन वगैरा पू० बापूजीके पास आअीं और पूछा. "बा वगैरा क्यों दिखाओ नहीं देती?" 'श्रीमानोंसे' 'श्रीमतियां' अधिक व्यावहारिक और साहसी होती हैं। अिन बहनोंने पू० बाके कांग्रेसमें जानेकी बात पू० बापूजीसे ही कहलवाओी और हम सब पू० बापूजीके साथ ही कांग्रेसमें गये।

लक्ष्मी, मान और कीर्तिका मोह विश्वका गला घोंट रहा है और सच्चे हृदयकी सात्त्विक वृत्तिमें द्वेष और अीर्ष्याका अंकुर अुगाकर सेवाके क्षेत्रमें विष फैला रहा है। ये लक्ष्मी, मान और कीर्तिके प्रलोभन सच्ची सेवासे मनुष्यको कितना विमुख करनेवाले तत्त्व हैं, अिसके दृष्टान्त आज पग पग पर हमें मिलते हैं। अपने जीवनको देशसेवा और जन-सेवाके क्षेत्रमें त्याग और तपसे ओतप्रोत कर देनेवाले जगत-वंद्य पू० बापूजी अिस युगमें सबसे श्रेष्ठ महापुरुष हैं। अैसी महान विभूति बापूजीकी अर्धांगिनी बननेकी यथार्थ अधिकारिणी होने पर भी प्रसिद्धि, मान और कीर्तिको न तो पू० बाने कभी ढूंढ़ा और न कभी चाहा। बाके अिस कठोर त्यागकी दृढ़ निश्चलतामें जगतके मानव मनोबल तथा आत्मशक्तिकी चरम सीमा देख सकेंगे।

पू० बाकी धर्मग्रंथोंके प्रति भी कम श्रद्धा नहीं थी। साबरमती जेलमें कताअीके बाद रामायणका पाठ पू० बा मुझसे कराती थीं। जेलमें कभी कभी भारी पाप करके सजा पाअी हुअी बहनें, पू० बाके पास आतीं तब वे धैर्य, शान्ति और प्रेमसे अुनके अन्तःकरणको शुद्ध बनानेके प्रयत्न करतीं। पू० बाको दुष्कृत्योंके प्रति घृणा थी, परन्तु अुनके करनेवालोंके प्रति वे हमेशा दयाकी दृष्टिसे देखती थीं।

आश्रमके कड़े नियमोंका यथार्थ पालन करने पर भी पू० बा आश्रमवासियोंकी व्यावहारिक असुविधाओंके प्रति (जिनमें कोअी महान सिद्धान्तका प्रश्न न हो) सहानुभूति रखती थीं। अैसे अेक प्रसंगकी पुनःस्मृति मुझे अभी अभी बड़ौदेमें साहित्य-परिषदके सम्मेलनके अवसर पर डॉ० श्री हरिप्रसाद देसाअीने कराअी थी। आश्रमकी बहनोंका निश्चित कीमतके साबुनसे काम नहीं चलता था। अिसकी शिकायत की जाय तो अुसका अर्थ बापूजीके नियमका विरोध ही होता था। सब बहनोंके हस्ताक्षरोंसे अेक प्रार्थनापत्र हमने तैयार किया। अिसमें पू० बाने भी दस्तखत करके हमारा साथ दिया और यह अर्जी पू० बापूजीको दी गअी। पू० बापूजीने मेरी ओर लक्ष्य करके कहा, "अिसने तो हम दोनोंमें ही विग्रह करा दिया।" और मीठे ढंगसे हमारी अर्जी मंजूर कर ली।

पू० बाके पास मैं वर्धामें ज्यादा न रह सकी, मगर वे जब जब अिधर आती तब भरसक मैं ज्यादासे ज्यादा समय अुनके साथ बिताती थी। अेक मौके पर मैं सख्त बुखारमें पड़ी थी। पू० बाका पत्र आया। मैंने अुत्तर भिजवाया अुसमें बताया: "आप बम्बअी पहुचेंगी तब तक जरा ठीक होते ही मैं आ पहुचूगी।" परन्तु पू० बाका हृदय कैसे मानता! वे तो तुरन्त गगा-स्वरूप गगाबहन वैद्यके साथ मेरा हाल जाननेको मेरे यहा दौड़ आअी और चुपचाप वापस भी चली गअी। वह निरभिमानपन, वह सरलता और सौजन्य अुनकी कोटिकी कितनी स्त्रिया बता सकती है?

पू० बाके सस्मरणोंमें से क्या लिखू और क्या न लिखू, यही मेरे लिअे मुश्किल है। जैसा प्रेम लड़की अपनी माके प्रति रखती है वैसा ही प्रेम मैं पू० बाके प्रति रखती थी। पर वे अुनसे भी अधिक वात्सल्य मुझ पर अुडेलती थी। मुझ पर अुनका अपार अृण है।

पिछले वर्ष पू० बापूजीके अुपवासके आखिरी दिनकी शामको आगाखा महलसे निकलते समय मुझे सपनेमें भी खयाल नही था कि ये पू० बाके आखिरी दर्शन हैं। पू० बाके शब्द तो बहुत सूचक थे और वे अब भी मेरे कानोंमें सुनाअी पड़ रहे हैं: "बहन, अब तो प्रभु जब मिलायेगा तब सही।" वह भावभीनी सजल नयनोंकी बिदा अब भी मेरी नजरके सामने ज्योंकी त्यों दिखाअी दे रही है। पू० बा अितनेसे ही न रुकी। अुन्होने कहा, "मुझसे सीढिया अुतरी नही जाती, नही तो तुझे थोड़ी दूर तक तो बिदा करने आती।" ये प्रेमपूर्ण वाक्य मेरे लिअ तो अंतिम साबित हुअे। आखिरी वक्त अुनकी शुश्रूषा नही कर सकी, अुनके दर्शन भी नही हुअे, अिस विचारमात्रसे हृदयको अपार वेदना होती है। भारतवर्षकी सतानोंकी माता अपनी आखिरी सास कारागृहमें ले, अिस कल्पनामात्रसे कपकपी छूटती है।

पू० बापूजीके पाससे पू० बाको अुठा लेनेमें अीश्वर किस प्रकारकी आहुतिया चाहता होगा? पू० बापूजीने अपने सर्वस्वका त्याग कर ही दिया था। पू० बा पू० बापूजीकी सेवा करके जीवनकी सार्थकता मानती थीं और पू० बापूजी अुस भक्तिपूर्ण सेवाको स्वीकार करते थे। शायद भगवानकी दृष्टिमें सर्वस्वके दानमें, त्यागमें, कुछ न कुछ अपूर्णता मालूम

हुआी होगी और अुस अपूर्णताको पूरा करनेके लिअे और अुसके द्वारा भारतमाताकी मुक्ति सिद्ध करनेके लिअे ओश्वरने यह दान मांग लिया होगा। दयालु ओश्वरकी कृतिमें श्रेय ही श्रेय होता है।

'अुत्तररामचरित' में महाकवि भवभूतिने मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजीको सीताके वियोगसे होनेवाली हृदय-वेधक वेदनाका वर्णन किया है। अुसे देखते हुअे तो पू० बापूजीको, जिनका हृदय 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' है और जिनके स्निग्ध हृदयने ६३ वर्षोंके लम्बे समय तक अपनी प्रिय सहधर्मिणीके शुद्ध प्रेमका पान किया है, अपनी जीवन-संध्याके किनारेसे पू० बाको कठिन विदा देते समय अपने आर्द्र हृदयमें क्या क्या वेदना हुआी होगी, अुसकी कल्पनामात्र भी क्या हम कर सकते हैं?

पू० बाकी अेकमात्र अिच्छा यह थी कि पू० बापूजीके जीते जी और अुनके सान्निध्यमें ही वे पंचत्वको प्राप्त हों। दयालु प्रभुने वह अिच्छा ही पूरी नहीं की, परन्तु पू० बाने अपना अंतिम श्वास भी पू० बापूजीकी पवित्र गोदमें ही लिया। दक्षिण अफ्रीकामें पू० बा बीमार हुआीं तब वहांके डॉक्टरोंने अुन्हें मांसका शोरबा लेनेका आग्रह किया था। अुस समय अुन्होंने पू० बापूजीसे कहा था, "मुझे मांसका शोरबा नहीं लेना है। मानव देह बार-बार नहीं मिलती। मैं भले ही आपकी गोदमें मर जाअूं।" सतीकी यह अिच्छा प्रभुको सत्य सिद्ध करनी पड़ी।

श्री देवदासभाआी बताते हैं कि पू० बाकी अग्निशैयामें से पांच कांचकी चूड़ियां साबित मिलीं। यह कोआी साधारण कौतुक नहीं था। मुझे तो जरूर अिसमें कोआी ओश्वरीय संकेत दिखाआी देता है। दैवी संज्ञाअें विशेषतः गूढ़ होती हैं। परन्तु ओश्वरने पू० बाकी पवित्रताका अिस प्रतीकके द्वारा सरल और सीधा प्रमाण दे दिया।

माता, अब तो हम आपके साक्षात् दर्शनसे वंचित हो गये। परन्तु दिगंतमें आप जहां निवास करती हों वहां हमारे आत्म-वंदन स्वीकार कीजिये और हमारे जीवनमें अमृत सिंचन कीजिये।

कुसुमबहन ह० देसाआी